

मुख्य परीक्षाओं हेतु

शिक्षित युवा वर्ग के स्वर्णिम भविष्य के लिये

स्त्रीभावप्रकाश

(जायाभाव प्रकाश)

सम्पादक
राम शरण ज्योतिषाचार्य

प्रकाशक
पं० देवीदयालु ज्योतिषी एण्ड संज़
पंचांग दिवाकर कार्यालय
माई हीरां गेट, जालन्धर शहर।

प्रकाशक

पं० देवीदयालु ज्योतिषी एण्ड संस,
पंचांगदिवाकर कार्यालय,
माई हीरां गेट, जालन्धर शहर।

द्वितीय संस्करण २०१८
मूल्य १·२५ न० पै०

मुद्रक

महाशय श्री जीवन दत्त,
इण्डियन नैशनल प्रैस,
प्रताप रोड़, जालन्धर शहर।

विषय सूची

जायाभाव प्रकाशः

जाया विवाह पति पंचशराप्ति वस्ति,
नष्टार्थ-वाद-गुड़-सूप-दधि-प्रपादि ।
यात्रा स्वदेहमरणं च वणिक्क्रियादि,
क्षीरं च तातजनकं मदभे विचार्य्यम् ॥

स्त्री, विवाह, पति, कामोद्दीपन, वस्तिस्थान, (मूत्राशय), नष्ट द्रव्य, खोया हुआ धन) वाद, (झगड़ा) गुड़, दाल, दही, प्याऊ आदि, यात्रा, पने शरीर का मरण, वाणिज्यक्रिया, दूध, पितामह, (दादा) ये सब उक्त दार्थ सप्तम भाव में विचारने चाहियें ।

यादृशं तनुगतैर्ग्रहैः फलं तादृशं तु खलु तस्य योषितः ।
चिन्तनीयमखिलं सचिह्नकं बुद्धिमद्भिरपि दैवचिन्तकैः ॥

बुद्धिमान् ज्योतिषियों ने लग्न में स्थितग्रहों स जैसा फल पुरुष का कहा सप्तमस्थग्रहों से सम्पूर्ण चिह्न सहित उस पुरुष की स्त्री का वैसा ही विचार रना चाहिए ।

कलत्रकारकश्चन्द्रो ज्ञो गुरुर्वाथवा भृगुः ।
मध्ये बलिष्ठो यस्तेषां तस्मात्सर्वं निरूपयेत् ॥

स्त्रीकारक ग्रह, चन्द्रमा, बुध, गुरु, शुक्र, इन पाँचों के मध्य में जो ीव बलवान् हो उस से स्त्री सम्बन्धी समस्त शुभाशुभ फल का निरूपण रें ।

स्त्री प्राप्ति तथा अप्राप्ति के योग

लग्नाच्चन्द्राच्च वीर्य्याढ्यात्कलत्रं सप्तमं यदि ।
स्वेशसौम्येक्षितं युक्तं स्त्रीप्राप्त्यै चान्यथा नहि ॥

लग्न और चन्द्रमा इन दोनों में जो अधिक बली हो उससे जो सप्तमस्थान है वह स्त्री का स्थान है। यदि वह स्थान अपने स्वामी से और शुभ ग्रह से दृष्ट तथा युक्त हो तो स्त्री की प्राप्ति होती है। विपरीत हो तो स्त्री की प्राप्ति नहीं होती है अर्थात् वह सप्तमस्थान पाप ग्रहों से दृष्ट और युक्त हो तो स्त्री की प्राप्ति नहीं होती है।

मूर्तौ कलत्रस्य लवांशको वा द्विषट्कभावस्त्रिलवः शुभानाम्।
अनेन योगेन हि मानवानां स्यादङ्गनानामचिरादवाप्तिः॥

स्त्री लग्न में अर्थात् लग्न और चन्द्रमा में जो अधिक बली हो उससे सप्तमस्थान में जो राशि हो वह स्त्री का लग्न होता है। उस लग्न में अर्थात् उस स्थान में शुभग्रह का नवांश वा शुभ ग्रह का द्वादशाँश वा शुभ ग्रह का द्रेष्काण हो तो इस योग से मनुष्यों को स्त्रियों की शीघ्र ही प्राप्ति होती है।

सौम्यैर्युक्तं सौम्यभं सौम्यदृष्टं जायागेहं देहिनामङ्गनाप्तिम्।
कुर्यान्नूनं वैपरीत्यादभावो मित्रत्वेन प्राप्तिकाले प्रलापः॥

यदि सप्तमस्थान में शुभ ग्रहों की राशि हो और शुभ ग्रहों से युक्त तथा दृष्ट हो तो मनुष्यों को स्त्री प्राप्ति को करवाता है और विपरीतता से स्त्री का अभाव होता है अर्थात् सप्तमस्थान में पाप ग्रह की राशि हो और पापग्रहों से दृष्ट-युक्त हो तो मनुष्यों को स्त्री की प्राप्ति नहीं होती है। यदि सप्तमस्थान मित्र ग्रह से दृष्ट है तो कालान्तर में स्त्री की प्राप्ति होती है।

स्त्री सौख्यासौख्य के योग

कलत्रस्थानगे चन्द्रे तदीशे व्ययराशिगे।
कारको बलहीनश्च दारसौख्यं न विद्यते॥

'चन्द्रमा' सप्तमस्थान में स्थित हो और सप्तमेश व्ययस्थान में हो तथा स्त्रीकारक ग्रह निर्बल हो तो स्त्री का सुख नहीं होता है।

मदगता यदि पापखगास्तदा दयितया सह नैव सुखं लभेत्।
शुभखगा दयिता सुखकारकः शशीमुखी बहुरूपगुणान्विता॥

यदि 'पापग्रह' सप्तमस्थान में स्थित हो तो पुरुष स्त्री के सुख को प्राप्त नहीं होता है। एवं 'शुभग्रह' सप्तमस्थान में हो तो स्त्री के सुख को करते हैं और उस पुरुष की स्त्री चन्द्रमा के समान मुखवाली तथा अधिक रूप और गुणों से युक्त होती है।

गुरुसितावपि मन्दयुतेक्षितौ मदगतौ चतुरा वनिता तदा।
स्मितमुखी नववस्त्रविभूषणा बहुसुता धनधान्यवती तथा॥

'गुरु शुक्र' सप्तमस्थान में स्थित होकर शनि से दृष्ट हो तो उस पुरुष की स्त्री चतुर, मन्द मुसकराने वाली, नये वस्त्र और भूषण वाली बहुत से पुत्रवाली तथा धन-धान्यवाली होती है।

स्त्रीहीन योग

लग्ने द्यूने द्वादशे पापखेटाः क्षीणे चन्द्रधीस्थिते वा खलर्क्षे।
पत्नी हीनो मानवःस्यान्नितान्तं पुत्रैर्हीनश्चेति वै चिन्तनीयम्॥

यदि 'पापग्रह' लग्न, सप्तम, वा द्वादशस्थान में स्थित हो और क्षीण चन्द्रमा पंचम स्थान में हो वा पापग्रह की राशि में हो तो मनुष्य नितांत स्त्रीहीन और पुत्रों से रहित होता है इस प्रकार विचार करना चाहिये।

पत्नीस्थाने यदा राहुः पापयुग्मेन वीक्षितः।
पत्नीयोगस्तदा न स्याद् भूताऽपि म्रियतेऽचिरात्॥

यदि 'राहु' सप्तमस्थान में स्थित होकर पापग्रह से दृष्ट हो तो स्त्री

का योग नहीं होता है। यदि किसी कारण से स्त्री हो भी शीघ्र मर जाती है।

महीसुते सप्तमभावयाते कान्तावियुक्तः पुरुषस्तदा स्यात्।
मन्देन दृष्टे म्रियतेऽपि लब्ध्वा शुभग्रहालोकनवर्जितेऽस्मिन्॥

यदि 'भौम' सप्तमस्थान में हो तो पुरुष स्त्रीरहित होता है। यदि सप्तमस्थान में स्थित भौम शनि से दृष्ट हो और शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो स्त्री प्राप्त हो कर भी मर जाती है।

व्ययालये व मदनालये वा खलेषु बुद्ध्यालयगे हिमांशौ।
कलत्रहीनो मनुजस्तनूजै र्विवर्जितः स्यादिति वेदितव्यम्॥

यदि 'पापग्रह' व्ययस्थान में वा सप्तमस्थान में स्थित हों और चन्द्रमा पंचम स्थान में स्थित हो तो मनुष्य स्त्री से हीन और पुत्रों से वर्जित होता है, इस प्रकार विचारना चाहिये।

पापर्क्षे पापसंदृष्टे कलत्रे पापसंयुते।
विभार्य्यो मृतदारो वा शुक्रेन्द्वीज्यबुधैः शुभम्॥

यदि 'सप्तमस्थान' में पापग्रह की राशि हो और पापग्रहों से दृष्ट तथा युक्त हो तो पुरुष स्त्री रहित वा मृतदार (स्त्री का नाश करने वाला) होता है। यदि सप्तमस्थान शुक्र, चन्द्र, गुरु, बुध से दृष्ट वा युक्त हो तो शुभ फल होता है।

स्वर्भानौ चेद् द्यूनगे पापदृष्टे पापैर्युक्ते नैवपत्नीयुतिः स्यात्।
संभूता वा म्रियतेस्वल्पकालात्सौम्यैर्युक्ते वीक्षिते वा विलम्बात्॥

यदि 'राहु' सप्तमस्थान में स्थित होकर केवल पापग्रहों से दृष्ट और युक्त हो तो स्त्री का योग नहीं होता है। यदि किसी कारण से स्त्री हो भी

जाये तो अल्पकाल में मर जाती है। यदि सप्तमस्थान में स्थित हुआ राहु शुभग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो तो विलम्ब से स्त्री का मरण होता है।

द्यूनेऽर्कजारौ सभृगौ शशाङ्कादपुत्रभार्य्यं कुरुतो नरं तौ।
स्यातां नृनारीखगयोः स्मरस्थौ सौम्येक्षितौ तौ शुभदौ नृनार्य्यौ॥

यदि शनि, मंगल, शुक्र से युक्त होकर चन्द्रमा से सप्तमस्थान में स्थित हों तो मनुष्य को पुत्र और स्त्री रहित करते हैं। यदि पुरुषग्रह सप्तम स्थान में स्थित होकर शुभ दृष्ट हों तो पुरुष को सुख होता है और स्त्रीग्रह सप्तमस्थान में स्थित होकर शुभदृष्ट हों तो स्त्री का सुख होता है।

शुक्रेन्दुपुत्रौ च कलत्रसंस्थौ कलत्रहीनं कुरुतो नरं तौ।
शुभेक्षितौ तौ वयसो विरामे कामं च रामां लभते मनुष्यः॥

यदि शुक्र, बुध सप्तमस्थान में हों तो मनुष्य को स्त्रीरहित करते हैं। यदि वे सप्तमस्थान में स्थित शुक्र, बुध शुभग्रह से दृष्ट हों तो मनुष्य अपनी अन्त्य अवस्था में कामदेव और स्त्री को प्राप्त करता है।

स्त्री की जाति का विचार

लग्नेश्वराद्धीनबले कलत्रनाथेऽरिराश्यंशयुते विमूढे।
नीचांशके नीचसमन्विते वा निकृष्टजातौ हि कलत्रलाभः॥

यदि लग्नेश से सप्तमेश हीनबली होकर शत्रु की राशि में वा शत्रु के नवांश में वा अस्तंगत वा नीच नवांशक में वा नीच राशि में वा नीचराशि ग्रह से युक्त हो तो पुरुष को नीच जाति में स्त्री की प्राप्ति होती है।

लग्नेश्वरात्पूर्णबले कलत्रनाथे शुभांशे शुभदृष्टियुक्ते।
वैशेषिकांशे परमोच्चभागे उत्कृष्टजातौ हि कलत्रलाभः॥

यदि लग्नेश से सप्तमेश पूर्ण बलवान् होकर शुभग्रह के नवांश में हो और शुभ दृष्टि युक्त हो एवं वैशेषिकांश में तथा परमोच्चांश में हो तो पुरुष

को उच्चजाति में स्त्री की प्राप्ति होती है।

लग्नेश्वरे हीनबले कलत्रनाथात्सपापे यदि नीचभागे।
नाशस्थिते वाऽन्ववरोहभासे कलत्रजातेः स्वयमेव हीनः॥

यदि सप्तमेश से लग्नेश हीनबली होकर पापग्रह से युक्त हो वा नाशस्थान ६।८।१२ में स्थित हो अथवा अवरोहभाग (उच्च उतरते हुए अंशों) में हो तो स्त्री की जाति से स्वयं पुरुष हीन होता है।

तस्माद्बलाढ्ये तु विलग्ननाथे स्वारोहभागे परमोच्चमांशे।
केन्द्रत्रिकोणे यदि वा ससौम्ये श्रेष्ठः कलत्रात्स्वयमेव जातः॥

यदि सप्मेश से लग्नेश बली होकर आरोहभाग (नीच से उतरते हुए अंशों) में हो तथा परमोच्च राश्यंश में हो वा शुभग्रह से युक्त होकर केन्द्र वा त्रिकोण में हो तो स्त्री से पुरुष श्रेष्ठ होता है।

कलत्रनाथाद्यदि वा कलत्रराशेः कुटुम्बाधिपतेर्वदेद्वा।
बलेन साम्ये समजातिमाहुः स्त्रियं सुशीलां पतिभक्तिचित्ताम्॥

सप्तमस्थान का स्वामी तथा सप्तमभाव में स्थित राशि और द्वितीयेश इन तीनों में जो अधिक बली हो उस से स्त्री की जाति को कहे। यदि उक्त तीनों का बल समान हो तो सुशीला, पतिभक्तिपरायण, समान-जाति की स्त्री की जाति को कहे।

शुभांशे शुभसंदृष्टे नाथे जाया सुवंशजा।
पापरूढे पापवर्गे तस्य जाया कुवंशजा॥

जिस के जन्म समय में सप्मस्थान का स्वामी शुभग्रह के नवांश में हो और शुभग्रह से दृष्ट हो तो उस को उत्तम वंश में उत्पन्न हुई स्त्री प्राप्त होती है एवं सप्तमेश पापराशि में और पापवर्ग में हो तो दुष्ट वंश में उत्पन्न स्त्री प्राप्त होती है।

गुरुशुक्रयोः स्ववर्णा रविकुजशशिभानुजैर्भवन्त्यूनाः ।
शुक्रे वेश्या प्रायश्चन्द्रेऽपि वदन्ति केतुमालाख्याः ॥

सप्तमस्थान में गुरु शुक्र हों तो अपनी जाति की स्त्री की प्राप्ति होती है और सूर्य, भौम, चन्द्र, शनि सप्तम में हों तो अपनी जाति से न्यून जाति की स्त्री की प्राप्ति होती है। एवं शुक्र वा चन्द्रमा सप्तमस्थान में हों तो प्रायः वेश्या समान स्त्री की प्राप्ति होती है। इस प्रकार केतुमाल नामक आचार्य कहते हैं।

गुरुशुक्रांशगे जायापतौ स्त्रीस्वोत्तमा भवेत् ।
वेश्याप्रिया भवेत्पुंसां बुधांशे सप्तमाधिपे ॥
शनिभूमिजसूर्यांशे न्यूनाजातेस्तु भामिनी ।
शेषांशे सप्तमाधीशे मध्यजातिभवाङ्गना ॥

'सप्तमेश' गुरु-शुक्र के नवांश में हो तो अपनी जाति से उत्तम जाति की स्त्री होती है और सप्तमेश बुध के नवांश में हो तो वेश्या तथा शनि, भौम, सूर्य के नवांश में हो तो न्यून जाति की स्त्री होती है और शेष ग्रहों के नवांश में हो तो मध्य जाति की स्त्री होती है।

स्त्री के पिता आदि, पुरुष के पिता आदि के शत्रु-मित्रत्व का विचार

लग्नेश्वरस्यापि कलत्रनाथे शत्रौ तदीयस्त्विह शत्रुभूतः ।
मित्राणि ते तस्य कुलोद्भवाश्च मित्रे विलग्नाधिपतेस्तदानीम् ।
दारेश्वरस्यापि विलग्ननाथे शनौ तदीयारत्वरयस्ततोऽन्ये ॥

यदि लग्नेश का सप्तमेश शत्रु हो तो कन्या का पिता आदि पुरुष का शत्रु होता है। और लग्नेश का सप्तमेश मित्र हो तो उस पुरुष के कुटुम्बीय

जन उस स्त्री के पिता आदि सब मित्र स्वरूप से होते हैं। यदि सप्तमेश का लग्नेश शत्रु हो तो उस पुरुष के कुटुम्बीयजन, स्त्री के कुटुम्बीयजनों के शत्रु होवे हैं। यदि सप्तमेश का लग्नेश मित्र हो तो उस पुरुष के कुटुम्बीयजन, स्त्री के कुटुम्बीयजनों के मित्र होते हैं।

स्त्री के वर्ण का विचार

कलत्राधिपतेर्वर्णं राशेर्वा कारकस्य च।
सर्वोत्तमबलस्यैव तेषां मध्ये विनिर्दिशेत्॥

सप्तमेश, सप्तमभाव में स्थितराशि, जायाकारक, इन तीनों के मध्य में जो सब से अधिक बली ग्रह हो उस के सामान स्त्री के वर्ण को कहे।

जीवे शुक्रेऽर्के विधौ गौरवर्णा नारी भौमे रक्तवर्णा प्रवाच्या।
ईषच्छ्यामा नीलवर्णा बुधे वा मन्दे राहौ श्यामवर्णा सुधीभिः॥

गुरु, शुक्र, सूर्य, चन्द्रमा के स्थित होने पर, गौर वर्ण की, मंगल के होने पर, लाल रंग की, बुद्ध के स्थित होने पर कुछ काली, नीले रंग की, शनि और राहु के स्थित होने से काले रंग की स्त्री विद्वानों ने कही हैं।

स्त्री के सुगुण दुर्गुणों का विचार

सुगुणा रूपसम्पन्ना तस्मिन् गुर्वच्छवीक्षिते।
पापेक्षिते पापयुक्ते कुरूपा दुर्गुणा भवेत्॥

यदि सप्तम स्थान गुरु और शुक्र से दृष्ट हो तो गुणवती और रूप से युक्त स्त्री की प्राप्ति होती है। एवं सप्तम स्थान पापग्रह से दृष्ट तथा युक्त हो तो बुरे रूप वाली स्त्री की प्राप्ति होती है।

कलत्रभावाधिपतेर्हि वाच्या मूर्तिः कलत्रस्य वयः प्रमाणम्।
विलग्ननाथेन सखित्वमस्ति पतिव्रता भक्तियुता सदा सा॥

स्त्री के शरीर और अवस्था का प्रमाण सप्तम भाव के स्वामी से कहना चाहिये एवं लग्नेश से सप्तमेश का मित्रत्व हो तो नित्य स्त्री पतिव्रता तथा पतिभक्ति से युक्त होती है।

स्त्री की अवस्था के मन का विचार

सूर्ये वाच्या कालजीर्णा बुधेऽब्जे,
बाला शुक्रे यौवनाऽऽरेऽप्यतीता।
जीवे रम्या पुत्रसूः सद्गुणाढ्या,
नारी मन्दे सैंहिकेयेऽतिवृद्धा ॥

यदि सप्तमस्थान में अधिकार प्राप्त सूर्य हो तो अधिक अवस्था वाली स्त्री होती है और बुध तथा चन्द्रमा सप्तम स्थान में हों तो बाला (छोटी अवस्था की) स्त्री होती है। एवं शुक्र सप्तम स्थान में हो तो युवावस्था वाली और भौम हो तो गतयौवना (मध्यावस्था वाली) स्त्री होती है। गुरु सप्तम स्थान में हो तो रमणीय तथा पुत्र उत्पन्न करने वाली और उत्तम गुणों से युक्त स्त्री होती है। यदि शनि वा राहु सप्तम स्थान में हो तो अतीव वृद्ध स्त्री होती है।

स्त्री के स्वभाव का विचार

क्लीवा मन्दे सैंहिकेये प्रवाच्या,
चन्द्रे शुक्रे स्त्रीस्वभावाऽस्तभावात्।
अन्यैः खेटैरङ्गना पुंस्वभावा,
द्यूने होराशास्त्रविद्भिः स्वबुद्ध्या ॥

यदि सप्तम स्थान में अधिकार प्राप्त शनि वा राहु हो तो नपुंसक स्वभाव वाली स्त्री होती है और चन्द्रमा तथा शुक्र हो तो स्त्रीस्वभाव की स्त्री कहनी चाहिए। एवं अन्यग्रहों से पुरुष स्वभाव वाली स्त्री ज्योतिषियों को अपनी बुद्धि से कहनी चाहिए।

स्त्री की संख्या तथा स्त्री स्वभावादि का विचार

शुक्रेन्दुजीवशशिजैः सकलैस्त्रिभिश्च,
द्वाभ्यां कलत्रभवने च तथैककेन ।
एषां गृहेऽपि च गणेऽपि विलोकिते वा,
सन्ति स्त्रियो भवनवर्गखगस्वभावाः ।।

यदि शुक्र, चन्द्र, गुरु, बुध ये चारों बलवान् होकर सप्तम भाव में हों तो उस पुरुष की चार स्त्री होती हैं अथवा उक्त चारों में से तीन ग्रह सप्तम में हों तो तीन स्त्री और दो से दो तथा एक से एक स्त्री होती है। यदि उक्त चारों में से किसी एक की राशि सप्तम स्थान में हो अथवा उक्त चारों की राशि गृहादि वर्गों के सप्तमस्थान में हो अथवा उक्तग्रहों में से कोई सप्तम को देखे तो उस पुरुष के देखने वाले ग्रहों की संख्या के तुल्य स्त्री होती हैं। एवं सप्तम स्थान में जो राशि स्थित हो उस राशि के पति के समान स्त्रियों के स्वभावादि होते हैं।

शुक्रांशपसमाना स्त्री वर्णरूप गुणैर्युता ।
मदपांशपतुल्यं हि स्वभाववरणं तथा ।।

अथवा शुक्र जिस नवाँश में हो उस राशि के पति के समान वर्ण रूप गुणों से युक्त स्त्री होती है अथवा सप्तमेश के नवाँश पति के समान स्त्री का स्वभाव चलन होता है।

(१) भावानाधिपांशतुल्या भवन्ति नार्य्यो निरीक्षणाद्वापि ।
एकैव रविकुजांशे गुरुबुधयोश्चापि जामित्रे ।।

---

(१) 'पाठान्तरम' द्यू नेशो यतमोंऽशे स्याद्यावन्तो वा द्युनेक्षकाः। तावन्त्यः स्युः स्त्रियो नृणामेकैवार्किकुजांशके इति। अत्रार्ककुजांशके इत्यपि पाठः। 'पाठान्तरे तु शनिः स्पष्ट उक्तः' 'भार्य्याः स्यु र्द्यूनेशनन्दांशसंख्याः खेटेक्षातुल्याश्च गोंऽशेज्ञशन्योः । वाऽऽरावयोर्वैकैकिकाऽथाऽरिऽगेऽस्त्रे मृत्यौ मन्देऽगो मदे स्त्री न तिष्ठेदिति । अत्रापिशनेः पुनरुक्तिस्तेनायं सम्यग् न भाति। शम्भुहोराप्रकाशे तु स्पष्टमुक्तम्' 'द्यूनस्थानाधीशनन्दांशतुल्याः खेटानां वा वीक्षणादेव नार्य्यः । एकैकास्यादर्कभूपुत्रयोश्च नन्दांशे वा सौम्यशन्योर्न-रस्येति।

सप्तमेश के नवाँश राशि की संख्या के तुल्य स्त्रियां होती हैं अथवा सप्तम स्थान जितने ग्रहों से दृष्ट हो उतनी स्त्रियां होती हैं यदि सप्तम स्थान में सूर्य वा भौम का नवाँश हो और उस में गुरु व बुध स्थित हो तो एक ही स्त्री होती है ।

कलत्रभावे च नवांशतुल्या नरस्य नार्य्यो ग्रहवीक्षणाद्वा ।
एकैव भौमार्कनवांशके च जामित्रभावस्थबुधार्कयोर्वा ।।

सप्तम भाव में जितने नवाँश हों अथवा जितने ग्रह सप्तम भाव को देखें मनुष्य की उतनी ही स्त्रियां होती हैं । यदि सप्तम भाव में मंगल वा सूर्य का नवाँश हो तो एक स्त्री होती है अथवा सप्तम भाव में बुध वा सूर्य स्थित हो तो भी एक स्त्री होती है ।

तुलावृषभकर्केषु शुक्रेन्दुपतिदृष्टयः ।
राशि संख्यासमानां हि स्त्रीणां प्राप्तिर्निगद्यते ।।

यदि तुला, वृष, वा कर्क ये राशियाँ सप्तम भाव में स्थित होकर अपने स्वामी से दृष्ट हों तो उक्त तीनों में से जो सप्तम भाव में हो उसकी संख्या के समान स्त्रियों की प्राप्ति कहे ।

मदनगा विहगाः स्वपतीक्षितः स्वमितितुल्यविवाहकरा मताः ।
इह रतीन्दुकुजाः प्रबलाः क्रमाद्रसदशाश्वमितप्रमदाप्रदाः ।।

सप्तम स्थान में जितने ग्रह स्थित हों यदि वे सप्तमेश से दृष्ट हों तो सप्तम स्थान में स्थित ग्रहों की संख्या के समान विवाह जानने चाहिएँ । यदि सप्तम स्थान में पूर्ण बली सूर्य वा चन्द्र वा मंगल हो तो इन उक्त ग्रहों के क्रम से ६।१०।७ स्त्रियां होती हैं अर्थात् बलवान् सूर्य सप्तम में हो तो ६ चन्द्रमा हो तो १० और मंगल हो तो ७ स्त्रियां होती हैं ।

जायाधिपे लग्न शत्रु धर्म्मव्ययचगते क्रमात् ।
त्रिचतुर्द्विचतुर्नार्य्यो भवन्ति नियतं नृणम् ।।

यदि सप्तमेश लग्न, षष्ठ, नवम वा व्यय स्थान में स्थित हो तो निश्चय से मनुष्यों की क्रम से ३।४।२।४ स्त्रियां होती हैं अर्थात् सप्तमेश लग्न में हो तो ३, षष्ठ में ४, नवम में २, व्यय में ४ स्त्रियां होती हैं।

स्वर्क्षे कुटुम्बाधिपतौ कलत्रनाथे यदा त्वेककलत्रभाक् स्यात्।
ताभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः॥
कलत्रनाथस्थितराशिनाथसंयुक्तखेटैरपि वाच्यमेतत्।

यदि द्वितीयेश और सप्तमेश अपनी २ राशि में स्थित हों तो मनुष्य एक स्त्री वाला होता है अथवा द्वितीयेश और सप्तमेश जितने ग्रहों से युक्त हो उनकी संख्या के समान स्त्रियों की संख्या को शिष्टजन कहते हैं। अथवा सप्तमेश जिस राशि में हो उस राशि के स्वामी के साथ जितने ग्रह हों उन ग्रहों की संख्या के समान स्त्रियों की संख्या कहनी चाहिए।

कामस्थाने सखेटे सितयुतखचरैर्दारसंख्यां वदन्ति।
स्वोच्चाथ व्योमवासो न भवति गणने शुक्रयुक्तग्रहैर्वा॥
जायाधीशे सितर्क्षे सति धनभवने शुक्रसंयुक्तसंख्या।
शुक्राऽनंगेशयुक्त च द्युरनववधूवल्लभो जायते वा॥

यदि सप्तम स्थान में ग्रह स्थित हो तो शुक्र जितने ग्रहों से युक्त हो उतनी स्त्रियों की संख्या को कहते हैं यदि शुक्र किसी उच्चराशिगत ग्रह से युक्त हो तो शुक्रयुक्त ग्रहों से स्त्रियों की संख्या नहीं होती है। अथवा सप्तमेश वृष वा तुला राशि में स्थित होकर धन स्थान में हो तो शुक्र से युक्त ग्रहों की संख्या के समान स्त्रियों की संख्या होती है। अथवा शुक्र तथा सप्तमेश से युक्त ग्रहों की संख्या के समान कई स्त्रियों की संख्या होती है।

दारेशेन कुटुम्बपेन सहिता यावद्ग्रहा दुर्बला
स्तत्संख्याककलत्रनाशनकरा दुःस्थाननाथा यदि ॥
यावन्तो बलशालिनः शुभकरास्तत्तुल्यजायासुखं ।
कुर्वन्त्येकवियच्चरो बलयुतो यद्येकदारो भवेत् ॥
जीवे मित्रनवांशके बलयुते यद्येकदारान्वितः ।
स्वांशे द्वित्रिकलत्रवान्बहुवधूनाथः स्वतुङ्गांशके ॥

सप्तमेश और कुटुम्बेश से युक्त हुए जितने निर्बलग्रह दुष्ट स्थान ६।८।१२ के स्वामी हों उतने ही ग्रहों की संख्या के समान स्त्रियों का नाश करते हैं। अथवा सप्तमेश और कुटुम्बेश जितने बलबान् शुभकारक ग्रहों से युक्त हों उतने ही ग्रहों की संख्या के समान स्त्रियों का सुख करते हैं। यदि एकग्रह बलवान् हो तो एक स्त्री का सुख करता है। यदि गुरु बलवान् होकर मित्र के नवाँश में हो तो एक विवाह होता है और गुरु अपने नवाँश में हो तो पुरुष दो वा तीन स्त्री वाला होता है तथा गुरु अपने उच्चाँश में हो तो वहुत स्त्रियों का स्वामी होता है।

एक स्त्री के योग

लग्ताद्व्यये वा रिपुमन्दिरे वा दिवाकरेन्दू भवतस्तदानीम् ।
स्यान्मानवस्यात्मज एक एव भार्य्याऽपि चैकेति वदन्ति सन्तः ॥

यदि सूर्य, चन्द्रमा लग्न से व्यय स्थान में वा षष्ठस्थान में हो तो मनुष्य का एक ही पुत्र और स्त्री भी एक होती है इस प्रकार शिष्टजन कहते हैं।

कामेश्वरौ सूर्य्यकुजौ तदैका योषाऽथ तद्वन्मदगौ बुधेज्यौ ।
कोशाधिपे वा मदपे बलिष्ठे कलत्रमेकं यदि तुङ्गयाते ॥

यदि सूर्य वा भौम सप्तम स्थान का स्वामी हो तो एक स्त्री होती है। अथवा बुध वा गुरु सप्तम स्थान में हो तो एक स्त्री होती है। अथवा द्वितीयेश वा सप्तमेश बलवान् होकर अपनी उच्च राशि में हो तो एक ही स्त्री होती है ॥

दो स्त्री के योग

लग्ने लग्नेशजायेशौ एतौ वा सप्तमे स्थितौ।
स्व स्व क्षेत्रयुतावेतौ व्यस्तौ वा प्रमदाद्वयम् ॥

यदि लग्नेश और सप्तमेश लग्न में स्थित हों अथवा लग्नेश सप्तमेश, सप्तम स्थान में हो अथवा लग्नेश लग्न में और सप्तमेश सप्तम में स्थित हो अथवा लग्नेश सप्तम में स्थित हो और सप्तमेश लग्न में स्थित हो तो इन पूर्वोक्त चारों योगों में पुरुष के दो स्त्री होती हैं।

भार्य्याद्वयं वदेत्तत्र लग्नेशे नाशराशिगे।
कलत्रे पापसंयुक्ते कुटुम्बेशे तथाविधे ॥

यदि लग्नेश नाशस्थान ६।८।१२ में हो और सप्तमस्थान में पापग्रह युक्त हों तो दो स्त्री कहे। एवं द्वितीयेश भी नाश-स्थान ६।८।१२ में हो और सप्तमस्थान में पापग्रह हो तो भी दो स्त्री को कहे।

शुभग्रहेण संयुक्ते कलत्रेशेऽरिनीचगे।
पापे कलत्रराशिस्थे विवाहद्वयमादिशेत् ॥

यदि सप्तमेश शुभग्रह से युक्त हो कर शत्रुराशि में हो और पापग्रह सप्तमस्थान में स्थित हों तो दो विवाह को कहे।

कारके पापसंयुक्ते नीचराश्यंशकेऽपि वा।
पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत् ॥

यदि स्त्री कारक ग्रह पापग्रह से युक्त अथवा पापग्रह से दृष्ट होकर नीच राशि में वा नीच नवांश में हो तो दो विवाहों को कहे ।

रन्ध्रे मन्देऽस्ते कुजे मानवस्य पत्नीयुग्मं स्यात्तदानीं तथैका ।
नष्टा वाच्या निश्चितं जातकज्ञैर्गुह्यस्थाने लाँछनं कृष्णवर्णम् ॥

यदि शनि अष्टमस्थान में हो और मंगल सप्तमस्थान में हो तो मनुष्य की दो स्त्री होती हैं उन में से एक स्त्री नष्ट कहनी चाहिये । एवं ज्योतिषियों ने निश्चय से गुह्यस्थान में काले रंग का लांछन भी कहा है ।

भार्याधिपे नीचगृहे च पापे पापर्क्षगे वा बहुपापयुक्ते ।
क्लीवेग्रहे सप्तमराशिसंस्थे तस्योदयाँशे द्विकलत्रसिद्धिः ॥

यदि सप्तमस्थान का स्वामी पापग्रह हो और वह नीचराशि में वा पापग्रह की राशि में वा बहुत पापग्रहों से युक्त हो अथवा सप्तमस्थान में नपुंसकग्रह हो अथवा सप्तमस्थान में नपुंसकग्रह की राशि वा नवांश हो तो दो स्त्री की प्राप्ति होती है ।

तीन स्त्री के योग

कलत्रस्थानगे भौमे शुक्रे जामित्रगे शनौ ।
लग्नेशे रन्ध्रराशिस्थे कलत्रत्रयवान् भवेत् ॥

यदि मंगल सप्तमस्थान में हो और शुक्र से सातवें स्थान में शनि हो एवं लग्नेश अष्टमस्थान में हो तो पुरुष तीन स्त्री वाला होता है ।

वित्ते पापबहुत्वे तु कलत्रे वा तथाविधे ।
तदीशे पापसंदृष्टे कलत्रत्रयभाग्भवेत् ॥

धनस्थान में बहुत पापग्रह हों और धनेश पापग्रहों से दृष्ट हो अथवा सप्तममरुस्थल में बहुत पापग्रह हों और सप्तमेश पापग्रहों से दृष्ट हो तो तीन स्त्री वाला होता है ।

लग्ने कुटुम्बे दारे वा पापखेचरसंयुते ।।
दारेशे नीचमूढादौ कलत्रत्रयभाग् भवेत् ।।

यदि लग्न, द्वितीय, सप्तम, ये तीनों स्थान पापग्रहों से युक्त हों और और सप्तमेश नीचराशि में वा अस्तंगत वा शत्रुराश्यादि में स्थित हो तो तीन स्त्री वाला होता है ।

बहुत स्त्री के योग

शुक्रस्य वर्गेण युते कलत्रे बह्व ंगनाप्तिर्भृ गुवीक्षणेन ।
शुक्रेक्षिते सौम्यगणेऽङ्गनानां बाहुल्यमेवाशुभवीक्षणाग्न ।।

यदि सप्त गृहादि वर्गों के सप्तमस्थान में शुक्र की २ वा ७ राशि स्थित हो और' वह शुक्र से दृष्ट हो तो बहुत सी स्त्रियों की प्राप्ति होती है। अथवा गृहादि सप्तमवर्गों के सप्तमस्थान में शुभग्रह की राशि हो और वह शुक्र से दृष्ट हो तथा पापग्रह से दृष्ट न हो तो भी बहुत सी स्त्रियां होती हैं।

(१) प्रायेण चन्द्रसितयोर्वर्गे युक्तेऽथवाऽपि जामित्रे ।
दृष्टे वा बहुपत्न्यो भवन्ति शुक्र विशेषेण ।।

यदि गृहादि सप्तवर्गों के सप्तमस्थान में प्राय: चन्द्र और शुक्र की राशि हो अथवा गृहादि सप्तबर्गों का सप्तमस्थान विशेष कर के शुक्र से दृष्ट हो तो बहुत सी स्त्रियां होती हैं ।

---

(१) 'पाठान्तरम्' लग्नेन्द्वोर्मदने सितेन्दुसहिते दृष्टेऽथ तद्धे गणे स्त्रीबाहुल्यमिन्येज्यवित्कुजलवे चैकामृति: सोग्रके । व्यंगाधीधुनधर्मभे सहितयो: शुक्रांकयो, स्यात्प्रिया सत्यान्त्योदयगै, खलै क्षयविधौ पुत्रे सुतस्त्री वियुक् इत्यत्रार्कज्यार विल्लवे मदेतदैका स्त्री यदि सप्तमगस्तेषां नवांश सपाप तदैकामृति रिति ।

लग्नेश्वरात्कर्मगते सोमपुत्रे बलान्विते ।
दारेशाद्विक्रमे चन्द्रे बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।

यदि लग्नेश से दशवें स्थान में बलबान् बुध हो और सप्तमेश से तृतीयस्थान में चन्द्रमा हो तो मनुष्य बहुत सी स्त्रियों से युक्त होता है ।

व्ययार्थेशौ तृतीयस्थौ गुरुणा च निरीक्षितौ ।
भाग्यनाशेन वा दृष्टौ बहुस्त्री सहितो भवेत् ।।

यदि व्ययेश और द्वितीयेश ये दोनों तृतीयस्थान में स्थित होकर गुरु से वा नवमेश से दृष्ट हों तो मनुष्य बहुत सी स्त्रियों से युक्त होता है ।

केन्द्रत्रिकोणे दारेशे स्वोच्चमित्रस्वर्गगे ।
कर्माधिपेन वा युक्ते बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।

यदि सप्तमेश स्वराशि में वा मित्र के वर्ग में स्थित होकर केन्द्र वा त्रिकोण में हो अथवा दशमेश से युक्त हो तो मनुष्य बहुत सी स्त्रियों से युक्त होता है ।

लाभदारेश्वरौ युक्तौ परस्परनिरीक्षितौ ।
बलाढ्यौ वा त्रिकोणस्थौ बहुस्त्री सहितो भवेत् ।।

यदि लाभेश और सप्तमेश बलवान् होकर दोनों एकस्थान में स्थित हों वा दोनों परस्पर देखते हों वा वे दोनों त्रिकोण में स्थित हों तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है ।

भाग्येशे दारराशिस्थे दारेशे सुखभंगते ।
भावेशे लाभनाथे वा केन्द्रे बहुकलत्रभाक् ।।

यदि नवमेश सप्तमस्थान में हों और सप्तमेश चतुर्थस्थान में हो अथवा सप्तमेश तथा लाभेश केन्द्र में हो तो बहुत स्त्री वाला होता है ।

कर्मेशतन्नवांशेशौ शनिसम्बन्धसंयुतौ ।
षष्ठाधिपयुतौ दृष्टौ बहुदारान्वितो भवेत् ॥

यदि दशमेश और दशमेश का नवांशपति ये दोनों शनि के सम्बन्ध से युक्त हों और वे दोनों षष्ठेश से युक्त वा दृष्ट हों तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है ।

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नर विद्या (१) दुदयर्क्षगतेऽपि वा ॥

यदि सप्तमेश उच्च-वक्रादि कारणों से बहुत गुण वाला हो अथवा सप्तमेश लग्न हो तो मनुष्य को बहुत स्त्री वाला जानना चाहिए ।

परमोच्चगते मदाधिनाथे मदराशौ शुभखेचरेण दृष्टे ।
अथवा भृगुनन्दने स्वतुङ्गे बहुभार्यं प्रवदन्ति बुद्धिमन्तः ॥

यदि सप्तमेश परमोच्चराश्यंशादि में प्राप्त हो और सप्तम भाव शुभग्रह से दृष्ट हो अथवा शुक्र अपने उच्च में हो तो बुद्धिमान् लोग उस मनुष्य को बहुत स्त्री वाला कहते हैं ।

द्विस्वभावगते शुक्रे स्वोच्चे तद्राशिनायके ।
दारेशे बलसयुक्ते बहुदारसमान्वतः ॥

यदि शुक्र द्विस्वभाव राशि में हो और शुक्र की राशि का स्वामी उच्चराशि में हो और सप्तमेश बलवान् हो तो पुरुष बहुत स्त्रियों से युक्त होता है ।

यामित्रे चन्द्रशुक्रौ बहुपत्नी प्रदायकौ ।
सप्तमे शुकवर्गश्चेज्जायन्ते बहुवल्लभाः ॥

---

(१) 'पाठान्तरम्' 'शत्रु नीचास्तगेषु चेति ।'

चन्द्रमा, शुक्र, सप्तमस्थान में हो तो बहुत स्त्रियों को देते हैं। अथवा गृहादि सप्तवर्गों के सप्तमस्थान में शुक्र की राशि हो तो भी बहुत स्त्री होती है।

भार्गववाक्पतिसौम्यैः प्रमदाभवने शशाङ्कयुक्तैश्च ।
एकैकेन हि तेषां पुरुषस्य विभूतयो बहुलाः ॥

यदि शुक्र, गुरु, बुध, सप्तमस्थान में स्थित हो कर चन्द्रमा से युक्त हों तो पुरुष के बहुत सी विभूतियाँ (अनेक प्रकार के ऐश्वर्य) होती हैं। यदि शुक्र, गुरु, बुध, इन तीनों में से एक एक भी सप्तमस्थान में स्थित होकर चन्द्रमा से युक्त हो तो भी पुरुष अधिक ऐश्वर्यशाली होता है।

दूसरी स्त्री के योग

कलत्रे वा कुटुम्बे वा पापदृग्योगसम्भवे ।
तदीशे बलहीने तु कलत्रान्तरभाग्भवेत् ॥

यदि सप्तमस्थान में वा द्वितीयस्थान में पापग्रह की दृष्टि तथा योग हो और सप्तमेश वा द्वितीयेश निर्बल हो तो पुरुष कलत्रान्तर (दूसरी स्त्री) वाला होता है।

सप्तमे चाष्टमे पापे व्यये भूसुतसंयुते ।
अदृश्ये यदि तन्नाथे कलत्रान्तरभाग्भवेत् ॥

यदि पापग्रह सप्तम और अष्टम स्थान में स्थित हों एवं मंगल व्ययस्थान में स्थित हो और सप्तम, अष्टम तथा व्यय इन तीनों स्थानों के स्वामी अपने २ स्थान को न देखते हों तो पुरुष दूसरी स्त्री वाला होता है।

नीचमूढारिभावस्थे लग्नेशे दारपेऽथवा ।
क्रूरषष्ठ्यंशके वापि कलत्रान्तरभाग्भवेत् ॥

यदि लग्नेश वा सप्तमेश अपनी नीच राशि में वा अस्तंगत वा शत्रुराशि में स्थित हो वा क्रूरषष्ठ्यंश में हो तो दूसरी स्त्री वाला होता है ।

दारेशस्थनवांशेश नीचमूढारिभांशके ।
पापान्तरे पापदृष्टे कलत्रान्तरभाग्भवेत् ।।

यदि सप्तमेश के नवांश का स्वामी अपनी नीच में वा अस्तगंत वा शत्रु की राशि में वा शत्रु के नवांश में स्थित होकर पापग्रहों के अन्तराल में हो वा पापग्रहों से दृष्ट हो तो दूसरी स्त्री वाला होता ।

एवं कुटुम्बनाथेन कारकस्थांशपेन वा ।
पापान्तरे दारगेहे तन्नाथेऽपि कलत्रहा ।।

इस प्रकार सप्तमेश के कुटुम्बेश के नवांश का स्वामी वा कारक ग्रह के नवांश का स्वामी अपने नीच में वा अस्तंगत वा शत्रुराश्यंश में स्थित हो अथवा सप्तमभाव और सप्तमेश ये दोनों पापग्रहों के अन्तराल में हों तो पुरुष स्त्री का हनन करने वाला अर्थात् प्रथम विवाहित स्त्री के मर जाने से दूसरी स्त्री वाला होता है ।

उत्तम स्त्री के योग

दारेशे स्वोच्चराशिस्थे दारे शुभसमन्विते ।
लग्नेशे बलसंयुक्ते सत्कलत्रसमन्वितः ।।

यदि सप्तमेश अपनी उच्चराशि में हो और शुभग्रह सप्तम स्थान में स्थित हो तथा लग्नेश बलवान् हो तो वह पुरुष उत्तम स्त्री से युक्त होता है ।

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचर वीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थं सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।

यदि सप्तमेश, शुभग्रह से युक्त और दृष्ट हो तथा शुभग्रहों के मध्य में स्थित हो तो उत्तम स्त्री वाला होता है।

दारेशे शुभराश्यंशे कारके वा तथाविधे।
कर्मेशे बलसंयुक्ते सत्कलत्रसमन्वितः॥

सप्तम भाव का स्वामी शुभग्रह की राशि में वा नवांश में हो अथवा उसी प्रकार कलत्रकारक ग्रह शुभ राशि में वा शुभ नवांश में हो और दशमेश बलवान् हो तो उत्तम स्त्री युक्त होता है।

कलत्राधिपतौ केन्द्रे शुभग्रहनिरीक्षिते।
शुभांशे शुभराशौ वा पतिव्रतपरायणा॥

यदि सप्तमेश शुभनवांश वा शुभराशि में स्थित होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो और केन्द्र में स्थित हो तो उस पुरुष की स्त्री पतिव्रत धर्म्म में तत्पर होती है।

कलत्रेशे रवौ वापि भृगौ सौम्यनिरीक्षिते।
गुरुयुक्ते कलत्रे वा धर्म्मशीला पतिव्रता॥

यदि सूर्य वा शुक्र सप्तमेश होकर शुभग्रह से दृष्ट हों वा सप्तमस्थान में गुरु हो तो उस पुरुष की स्त्री धर्मशीला तथा पतिव्रता होती है।

भानौ कलत्राधिपतौ बलाढ्ये शुभान्विते शोभनराशिभागे।
शुभग्रहेणापि निरीक्षते वा लग्नेशमित्रे पतिभक्तियुक्ता॥

यदि सूर्य सप्तमेश होकर बल से युक्त हो तथा शुभग्रह से युक्त हो एवं शुभग्रह की राशि वा नवांश में हो तथा शुभग्रह से दृष्ट हो और सूर्य लग्नेश का मित्र हो तो उसकी स्त्री पति भक्ति से युक्त होती है।

सौम्यांशके सौम्यग्रहान्विते वा मित्रोच्चगेहे मृदुभागयुक्ते।
चन्द्रे कलत्राधिपतौ सवीर्य्ये पुण्या सुशीला सुचरित्रयुक्ता॥

यदि चन्द्रमा सप्तमेश होकर बलवान् हो और शुभग्रह के नवांश में शुभग्रह की राशि में स्थित हो वा मित्रराशि वा उच्चराशि में स्थित हो वा मृदुषष्ठचंश में हो तो उस पुरुष की स्त्री पुण्यवती, सुशीला, सुन्दर चरित्र से युक्त होती है।

मित्रौच्चवर्गेऽसृजि दारनाथे शुभान्विते सौम्यदृशा समेते।
पारावतांशादिगते बलाढ्ये क्रूरापि पत्युर्गुणमार्गयुक्ता॥

यदि बलवान् भौम सप्तमेश होकर मित्र वर्ग में वा उच्च राशि में स्थित हो और शुभग्रहों से युक्त और दृष्ट हो तथा पारावतांशादि दश वर्गों में हो तो क्रूर स्त्री भी पति के गुण और मार्ग से युक्त होती है।

सुपुत्रसौख्यान्वितधर्मशीला व्रतोपवासादिविशुद्धदेहा।
सौम्ये कलत्राधिपतौ बलाढ्ये मित्रोच्चवर्गे यदि गोपुरांशे॥

यदि बलवान् बुध सप्तमेश होकर मित्र वर्ग में वा उच्च वर्ग में स्थित होकर गोपुरांश में हो तो श्रेष्ठ पुत्र और सुख सम्पन्न धर्म-शीला, व्रतोपवा-सादि से शुद्ध शरीर वाली स्त्री होती है।

गुरुणा सहिते दृष्टे दारनाथे बलान्विते।
कारके वा तथा भावे पत्नी व्रतपरायणा॥

यदि बलवान् बुध सप्तमेश वा जायाकारक ग्रह तथा जाया भाव में गुरु से युक्त वा दृष्ट हो तो पतिव्रत में तत्पर वाली स्त्री होती है।

मदनभवननाथे पारिजातादिवर्गे
सुरगुयुतदृष्टे शोभनस्थानयाते।
दधिमधुघृतसूपक्षीरपक्वोपदंशैः
सह शुचिरुचिरान्नं चारुकान्तामुपैति॥

यदि सप्तमेश पारिजातादिदशवर्ग में स्थित होकर गुरु से युक्त वा

दृष्ट हो और शुभग्रह की राशि वा नवांश में हो तो पुरुष, दही, शहद, घी, दाल, दूध तथा पक्वक्षारपदार्थों के साथ पवित्र सुन्दर अन्न और मनोहर स्त्री को प्राप्त होता है।

स्वोच्चे मित्रे स्ववर्गे वा गोपुराद्यंशके भृगौ।
षष्ठ्यंशे मृदुभावस्थे सत्कलत्रसमन्वितः॥

यदि शुक्र अपनी उच्चराशि में वा मित्रराशि में वा अपनी राशि के सप्तवर्गों में स्थित हो कर गोपुरादि दशवर्ग में हो और मृदुषष्ठ्यंश में हो तो उत्तम स्त्री से युक्त होता है।

शुक्रे कलत्राधिपतौ बलाढ्ये शुभान्विते शोभनखेचरांशे।
मित्रोच्चवर्गे स्वगृहे मृदुस्थे वाचालिका पुत्रवती गुणाढ्या।

यदि बलवान् शुक्र सप्तमेश होकर शुभग्रह के नवांश में वा मित्र वर्ग में वा उच्चवर्ग में वा स्वगृह में स्थित हो और मृदुषष्ठ्यंशक में स्थित हो तो उस पुरुष की स्त्री वाचाल, पुत्रवती, तथा गुणसम्पन्न होती है।

परोपकारी द्विजदेवभक्ता स्त्री ब्रह्मवादी गुरुदृष्टियुक्ते।
शुभेक्षिते धर्मरता सुशीला मन्दे कलत्राधिपतौ बलाढ्ये॥

यदि बलवान् शनि सप्तमेश होकर गुरु की दृष्टि से युक्त हो तो परोपकारिणी, द्विजदेवभक्त, तथा ब्रह्मवादिनी स्त्री होती है। अथवा बलवान् सप्तमेश शनि शुभग्रह से दृष्ट हो तो स्वधर्म में लीन तथा सुशीला स्त्री होती है।

खोटी स्त्री के योग

दारेशे पापसंयुक्ते दारे वा पापसंयुते।
दारेशस्थांशपे पापे कुस्त्रीभाक् स नरो भवेत्।

यदि सप्तमेश पापग्रह से युक्त हो अथवा सप्तम स्थान में पापग्रह हो

यदि चन्द्रमा सप्तमेश होकर बलवान् हो और शुभग्रह के नवांश में शुभग्रह की राशि में स्थित हो वा मित्रराशि वा उच्चराशि में स्थित हो वा मृदुषष्ठचंश में हो तो उस पुरुष की स्त्री पुण्यवती, सुशीला, सुन्दर चरित्र से युक्त होती है।

मित्रौच्चवर्गेऽसृजि दारनाथे शुभान्विते सौम्यदृशा समेते।
पारावतांशादिगते बलाढये क्रूरापि पत्युर्गुणमार्गयुक्ता॥

यदि बलवान् भौम सप्तमेश होकर मित्र वर्ग में वा उच्च राशि में स्थित हो और शुभग्रहों से युक्त और दृष्ट हो तथा पारावतांशादि दश वर्गों में हो तो क्रूर स्त्री भी पति के गुण और मार्ग से युक्त होती है।

सुपुत्रसौख्यान्वितधर्मशीला व्रतोपवासादिविशुद्धदेहा।
सौम्ये कलत्राधिपतौ बलाढ्ये मित्रोच्चवर्गे यदि गोपुरांशे॥

यदि बलवान् बुध सप्तमेश होकर मित्र वर्ग में वा उच्च वर्ग में स्थित होकर गोपुरांश में हो तो श्रेष्ठ पुत्र और सुख सम्पन्न धर्म-शीला, व्रतोपवा-सादि से शुद्ध शरीर वाली स्त्री होती है।

गुरुणा सहिते दृष्टे दारनाथे बलान्विते।
कारके वा तथा भावे पत्नी व्रतपरायणा॥

यदि बलवान् बुध सप्तमेश वा जायाकारक ग्रह तथा जाया भाव में गुरु से युक्त वा दृष्ट हो तो पतिव्रत में तत्पर वाली स्त्री होती है।

मदनभवननाथे पारिजातादिवर्गे
सुररुयुतदृष्टे शोभनस्थानयाते।
दधिमधुघृतसूपक्षीरपक्वोपदंशैः
सह शुचिरुचिरान्नं चारुकान्तामुपैति॥

यदि सप्तमेश पारिजातादिदशवर्ग में स्थित होकर गुरु से युक्त वा

दृष्ट हो और शुभग्रह की राशि वा नवांश में हो तो पुरुष, दही, शहद, घी, दाल, दूध तथा पक्वक्षारपदार्थों के साथ पवित्र सुन्दर अन्न और मनोहर स्त्री को प्राप्त होता है।

स्वोच्चे मित्रे स्ववर्गे वा गोपुराद्यंशके भृगौ।
षष्ठ्यंशे मृदुभावस्थे सत्कलत्रसमन्वितः॥

यदि शुक्र अपनी उच्चराशि में वा मित्रराशि में वा अपनी राशि के सप्तवर्गों में स्थित हो कर गोपुरादि दशवर्ग में हो और मृदुषष्ठ्यंश में हो तो उत्तम स्त्री से युक्त होता है।

शुक्रे कलत्राधिपतौ बलाढ्ये शुभान्विते शोभनखेचरांशे।
मित्रोच्चवर्गे स्वगृहे मृदुस्थे वाचालिका पुत्रवती गुणाढ्या।

यदि बलवान् शुक्र सप्तमेश होकर शुभग्रह के नवांश में वा मित्र वर्ग में वा उच्चवर्ग में वा स्वगृह में स्थित हो और मृदुषष्ठ्यंशक में स्थित हो तो उस पुरुष की स्त्री वाचाल, पुत्रवती, तथा गुणसम्पन्न होती है।

परोपकारी द्विजदेवभक्ता स्त्री ब्रह्मवादी गुरुदृष्टियुक्ते।
शुभेक्षिते धर्मरता सुशीला मन्दे कलत्राधिपतौ बलाढ्ये॥

यदि बलवान् शनि सप्तमेश होकर गुरु की दृष्टि से युक्त हो तो परोपकारिणी, द्विजदेवभक्त, तथा ब्रह्मावादिनी स्त्री होती है। अथवा बलवान् सप्तमेश शनि शुभग्रह से दृष्ट हो तो स्वधर्म में लीन तथा सुशीला स्त्री होती है।

खोटी स्त्री के योग

दारेशे पापसंयुक्ते दारे वा पापसंयुते।
दारेशस्थांशपे पापे कुस्त्रीभाक् स नरो भवेत्।

यदि सप्तमेश पापग्रह से युक्त हो अथवा सप्तम स्थान में पापग्रह हो



और सप्तमेश के नवांश का स्वामी पापग्रह हो तो कुत्सित (खोटी) स्त्री वाला होता है

क्रूरषष्ठ्यंशके दारनाथे कुस्त्रीयुतो भवेत् ।
नीचांशे नीचसंयुक्ते दारनाथे च कारके ।
कुस्त्रीयुतो भवेज्जातः शुभदृष्टिविवर्जिते ।।

सप्तमस्थान का स्वामी क्रूरषष्ठ्यंश में स्थित हो तो कुत्सित (खोटी) स्त्री वाला होता है अथवा सप्तमेश और जायाकारक ग्रह ये दोनों नीच नवांश में वा नीच राशि में वा नीचराशिगत ग्रह से युक्त हों और शुभग्रह की दृष्टि से रहित हों तो इस योग में उत्पन्न पुरुष निन्दित स्त्रीवाला होता है।

कलत्रेशे रवौ वापि पापराश्यंशसंयुते ।
पापान्विते पापदृष्टे पत्नीपापपरायणा ।।

यदि सूर्य सप्तमेश होकर पापग्रह की राशि वा नवांश में स्थित हो और पाप ग्रह से युक्त वा दृष्ट हो तो उस पुरुष की स्त्री पापकर्म में तत्पर रहती है।

दारेश्वरे वा कुमुदात्मबन्धौ पापान्विते पापनिरीक्षिते वा ।
पापांशके पापग्रहान्तरस्थे कुमार्गचारी कठिनापराधा ।।

यदि चन्द्रमा सप्तमेश होकर पापग्रह से युक्त वा दृष्ट हो और पापग्रह के नवांश में हो तथा पापग्रहों के अन्तराल में हो तो पुरुष की स्त्री कुमार्ग-गामिनी कठिन चित्तवाली तथा अपराधिनी होती है।

दाराधिपे हीनबले धराजे क्रूरादिषष्ठ्यंश समन्विते वा ।
निम्नारिमूढे गृहगेऽरिभावे दुष्टान्यसक्ता पतिकर्कशा वा ।।

यदि हीनबली मंगल सप्तमेश होकर क्रूरषष्ठ्यंश में स्थित हो वा नीच राशि में वा शत्रुराशि में वा अस्तगत वा षष्ठभाव में हो तो दुष्टा तथा अन्य

पुरुष में आसक्त और पति के लिये कर्कश (कठोर) स्त्री होती है।

दाराधिपे सोमसुते सपापे नीचारिमूढे यदि नाशभावे।
पापान्तरे पापदृशा समेते जाया पतिघ्नी कुलनाशिनी स्यात् ॥

यदि बुध सप्तमेश होकर पापग्रह से युक्त हो और नीच राशि में वा शत्रु राशि में वा अस्तगत हो तथा नाश ६।८।१२ भाव में स्थित होकर पापग्रहों के अन्तराल में वा पापदृष्टि से युक्त हो तो पति को मारने वाली तथा कुल का नाश करने वाली स्त्री होती है।

भृगोः सुते दारपतौ सपापे नीचान्विते नीचभमूढगेहे।
क्रूरादिषष्ठ्यंशसमन्विते वा वेश्यासमाना कठिना हि चौरा।

यदि शुक्र सप्तमेश होकर पापग्रह से युक्त हो वा नीचराशिगतग्रह से युक्त हो वा अपनी नीच राशि में हो वा अस्तगत हो वा क्रूरषष्ठ्यंश से युक्त हो तो स्त्री वेश्या के समान कठिन और चोर होती है।

जारातिदुष्टा कुलदूषणा स्यान्मन्दे कलत्राधिपतौ सपापे।
नीचांशके नीचगृहेऽरिगेहे पापेक्षिते पापविपच्चरांशे ॥

यदि शनि सप्तमेश होकर पापग्रह से युक्त हो और नीच नवाँश में वा नीचराशि में वा शत्रु राशि में वा पापग्रह से दृष्ट वा पापग्रह के नवांश में हो तो उस पुरुष की स्त्री व्यभिचारिणी, अतिदुष्टा तथा कुलदूषणा होती है।

सराहुकेतौ मदनेऽन्यसक्ता पापेक्षिते पापरता कुशीला।
क्रूरांशके भर्तृविषप्रदा स्याल्लोकापवादान्वितकर्कशा स्यात् ॥

यदि सप्तस्थान राहु वा केतु से युक्त हो तो उसकी स्त्री अन्य पुरुष में आसक्त तथा पापलीन और दुष्टशीला होती है। यदि सप्तम स्थान में स्थित राहु वा केतु क्रूरग्रह के नवांश में हो तो पति को विष देने वाली तथा लोकापवाद से युक्त और कर्कशा (कठोर) स्त्री होती है।

रोगिणी स्त्री के योग

द्यूनेऽर्के क्षितिजे नरस्य रमणी पित्तव्रणेनान्विता ।
दग्धा वा विषवह्निना यदि तदा वा वस्तिरोगान्विता ॥
चन्द्रे शीर्षरुजान्विता च सततं शुक्रे तु किंचित्कृशा ।
अथो वन्ध्यत्वविदूषिता क्षितिसुते वाच्या विदन्ता कृशा ॥

सूर्य, भौम, सप्तमस्थान में हों तो मनुष्य की स्त्री पित्त-जनित व्रण से युक्त होती है अथवा विष तथा अग्नि से दग्ध होती है अथवा वस्ति रोग (मूत्रकृच्छादि) से युक्त होती है और चन्द्रमा सप्तम में हो तो नित्य शिर के रोग से युक्त होती है। यदि शुक्र सप्तमस्थान में हो तो कुछ कृश शरीर वाली होती है एवं भौम सप्तम हो तो उस पुरुष की स्त्री बन्ध्यत्व दोष से दूषित दान्त रहित और दुर्बलदेह वाली कहनी चाहिये।

द्यूनस्थेऽर्कसुतेऽथ जैमिनिसुते पुंसः पुरन्ध्रोभवेत् ।
काष्ठाश्मायसकादिना विनिहता तुर्य्यांघ्रिणा वा हता ॥
यद्वा वातरुजान्विता च सततं नूनं च वा चंचला ।
तत्कट्या च समादिशेन्मतिवरः श्यामं तथा लाञ्छनम् ॥

शनि और राहु सप्तमस्थान में स्थित हों तो उस पुरुष की स्त्री वेश्या होती है और काष्ठ, पत्थर तथा लोहादि के प्रहार से पीड़ित अथवा चौपाये के प्रहार से पीड़ित होती है। अथवा बातरोग से युक्त वा निश्चय से चंचल होती है और श्रेष्ठ बुद्धिमान् जन उसकी कमर में श्याम चिह्न को कहे।

कलत्रपो विनास्वर्क्षं षडादि त्रयसंस्थितः ।
रोगिणीं कुरुते नारीं तथा तुङ्गादिकं बिना ॥

'सप्तमेश' अपनी राशि तथा उच्चराशि मूलत्रिकोणराशि और

मित्रराशि के अतिरिक्त राशि मे स्थित होकर दुष्टस्थान ६।८।१२ में स्थित हो तो स्त्री को रोगी करता है।

व्यंग स्त्री के योग

(१) द्यूने कुजभार्गवयोर्जातः पुरुषो भवेद्विकलदारः।
धीधर्मस्थितयोर्वा परिकल्प्यं पण्डितैरेवम्॥

यदि भौम और शुक्र सप्तमस्थान में हों तो उत्पन्न पुरुष विकल स्त्री (व्यङ्गस्त्री) वाला होता है अर्थात् उस की स्त्री किसी अंग से हीन होती है। इस प्रकार भौम, शुक्र पंचम वा नवम स्थान में स्थित हों तो पण्डितों को व्यङ्गस्त्री वाला कहना चाहिये।

पुनर्विवाहित स्त्री प्राप्ति के योग

सौरिसोमौ मदस्थौ चेदथवा सौरिसोमजौ।
तदा पुनर्भवां भार्यां पुरुषाणां बुधो वदेत्॥

'शनिचन्द्र' अथवा 'शनिबुध' सप्तमस्थान में हों तो पण्डित जन पुरुष की पुनर्विवाहित स्त्री को कहे।

नपुंसक स्त्री के योग

साच्छमदेशो, रोगभसंस्थाः।
जातकजाया,स्यादिह षण्ढा॥

यदि शुक्र सहित सप्तमेश षष्ठस्थान में हो तो इस योग में उत्पन्न हुए पुरुष की स्त्री नपुंसक होती है।

---

(१) 'पाठान्तरम्' द्यूनस्थयोर्नवमपंचमसंस्थयोः वा शुक्रार्कयोर्विकलदारमुशन्ति सन्त इति।

वन्ध्यापति के योग

(१) गण्डान्तकालेऽपि कलत्रभावे
मृगोः सुते लग्नगतेऽर्कजाते ।
वन्ध्यापतिः स्यान्मनुजस्तदानीं
शुभेक्षितं नो भवनं खलस्य ॥

जिस का जन्म नक्षत्रादिगण्डान्त में और लग्न में तथा सप्तम में पाप ग्रह की राशि हो एवं लग्न में शुक्र और सप्तम में शनि हो वे दोनों शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो उस पुरुष की स्त्री वंध्या होती है ।

लग्नस्थे सप्तसप्तौ दिनमणितनये कामगे चार्कमन्दौ ।
द्यूने चन्द्रे नभःस्थे न च यदि गुरुणा लोकिते नो प्रसूते ॥
द्वेष्येशे मित्रमन्दौ द्विषि सितकिरणेऽस्ते बुधेनेक्षिते नो ।
सूते द्वेष्ये जलर्क्षे यदि कुजरविजौ गर्भिणी स्यान्न नारी ॥

यदि सूर्य तनु स्थान में स्थित हो और शनि सप्तम में स्थित हो तथा सूर्य, शनि सप्तम में स्थित हों एवं चन्द्रमा दशमस्थान में हो और गुरु से दृष्ट न हो तो उसकी स्त्री प्रसववती नहीं होती है। अथवा षष्ठेश और सूर्य, शनि छटे में हों तथा बुध से दृष्ट चन्द्रमा सप्तम में हो तो स्त्री प्रसववती नहीं होती है। अथवा मंगल शनि षष्ठस्थान में और चतुर्थस्थान में स्थित हों तो स्त्री गर्भवती नहीं होती है ।

---

(१) 'पाठान्तरम्' भसन्धियाते च सितेस्मरस्थे तनौ प्रपन्ने यदि भानुसूनौ । वन्ध्यापतिः स्यान्मनुज स्तदानीं सुतालयं नो शुभदृष्टि युक्त मिति ।

दारहा योग

(१) धनावसानस्मरयानरन्ध्रगो
धरासुतो जन्मनि यस्य (२) दारहा।
तथैव (३) कन्याजनजन्मलग्नतो।
यदि क्ष्मासूनुरनिष्टदः पतेः ॥

जिसके जन्मसमय में 'मंगल' द्वितीय, द्वादश, सप्तम, चतुर्थ, तथा अष्टम स्थान में स्थित हो वह दारहा (स्त्री का नाश करने वाला) होता है। उसी प्रकार कन्या के जन्म लग्न से पूर्वोक्त द्वितीयादि स्थानों में 'मंगल' स्थित हो तो पति को अनिष्ट फल देता है अर्थात् पति का नाश होता है।

उग्रग्रहैः (४) सितचतुरस्रसंस्थितै
र्मध्यस्थिते भृगुतनयेऽथवोग्रयोः।
सौम्यग्रहैरसहितसन्निरीक्षिते
जायावधो दहननिपातपाशजः॥

---

(१) 'पाठांतरम्' लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या हरति भर्त्तारं भर्त्ता भार्यां हनिष्यति।

(२) 'अस्य शांतिः' विधिवद्धोमदानं च पत्नीदानं विशेषतः। दासीदानं ततो दद्यात्सौख्यदं गोसहस्रकमिति।

(३) 'योगान्तरम्' क्रूरव्योमचरः स्त्रीणामष्टमस्थो विलग्नतः। नीचारिपापवर्गेषु यदि मृत्युकरः पतेरिति।

(४) 'पाठांतरम्' शुक्रः खलांतरगतः सखलः सिताद्वा, पापाः सुखास्तभूतिगा रमणीहराः स्युरिति।

यदि शुक्र से चतुर्थ तथा अष्टम स्थान में पापग्रह स्थित हों और वह शुभ ग्रहों से युक्त दृष्ट न हो अथवा 'शुक्र' पापग्रहों के मध्य (अंतराल) में स्थित हो कर शुभग्रहों से युक्त दृष्ट न हो तो अग्नि अर्थात् पित्त से वा सन्निपात अर्थात् वात से कण्ठावरोध अर्थात् कफ से वा फांसी से स्त्री का मरण होता है।

शुक्रात्सुखाष्टगखलै र्झषमेषकन्या-
लग्नार्कयोर्युवति मृत्युरिहाग्निजातः।
पापद्वयान्तरसितेऽग्निनिपातमृत्यु
र्नो सद्युतेक्षितभृगाविह पाशजातः॥

यदि शुक्र से चतुर्थ तथा अष्टम में पापग्रह स्थित हों तथा मीन, मेष वा कन्या लग्न हो और उसमें सूर्य स्थित हो तो अग्नि से स्त्री की मृत्यु होती है। अथवा 'शुक्र' पापग्रहों के मध्य में स्थित होकर शुभ ग्रहों से युक्त दृष्ट न हो तो पित्त से, सन्निपात से वा पाश (फांसी) से स्त्री की मृत्यु होती है।

जायाकुटुम्बगृहपौ सितपापयुक्तौ
दुःस्थौ च तत्समकलत्रहरौ भवेताम्॥

यदि सप्तमेश, और द्वितीयेश, शुक्र तथा पापग्रहों से युक्त होकर दुष्टस्थान ६।८।१२ में स्थित हों तो उन पापग्रहों की संख्या के समान स्त्रियों का नाश होता है।

नीचे भृगौ वा यदि वा शशाङ्क
नीचस्थितेऽत्राम्बुनि दारहानिः।
उद्बन्धनात्तन्मरणं वदन्ति तदीश्वरे पाशभुजङ्गमाख्ये।
द्रेष्काणभागे विषभक्षणाद्वा मान्द्यन्विते दारपतौ सराहौ॥

यदि शुक्र वा चन्द्रमा नीच राशियों में स्थित हो कर चतुर्थ स्थान में हो तो स्त्री की हानि होती है अथवा सप्तमेश पाश सर्पनामक द्रेष्काण में हो तो बन्धन से स्त्री की मृत्यु होती है। अथवा सप्तमेश, मान्दि तथा राहु से युक्त हो तो विष के खाने से स्त्री की मृत्यु होती है।

सुतेशे दारभयाते तदीशे पापसंयुते ।
शुक्रो बलविहीनश्चेद्गर्भेण स्त्रीमृतिर्भवेत् ।।

यदि पंचमेश सप्तम स्थान में स्थित हो और सप्तमेश पापग्रह से युक्त हो तथा शुक्र बल रहित हो तो गर्भदोष से स्त्री की मृत्यु होती है।

द्यूनकुटुम्बगतौ यदि पापौ दारवियोगजदुःखकरौ तौ।
तादृशयोगजदारयुतश्चेज्जीवति पुत्रधनादियुतश्च ।।

यदि पापग्रह सप्तम और द्वितीय स्थान में स्थित हों तो स्त्री के वियोग से उत्पन्न दुःख को करते हैं अर्थात् स्त्री की मृत्यु करते हैं। यदि उक्त योग में उत्पन्न पुरुष स्त्री से युक्त हो तो वह पुरुष पुत्र और धनादि से सम्पन्न हो कर जीवित रहता है।

कन्योदयगते भानौ मत्स्ये मंदे कलत्रहा।
कामभे कामनाथे च दारहा पापसंयुते ।।

कन्या राशि का सूर्य लग्न में हो और शनि मीन राशि में हो तो पुरुष स्त्री घातक होता है। एवं सप्तमस्थान और सप्तमेश पापग्रहों से युक्त हो तो भी स्त्री घातक होता है।

स्त्री के नाश के योग

चन्द्राद्विलग्नाच्च खलाः कलत्रे हन्युः कलत्र बलयोगतस्ते ।
षष्ठे महीजे मदने च राहौ मंदे मृतौ मृत्युमुपैति भार्या ।।

चन्द्रमा और लग्न इन दोनों के मध्य में जो अधिक बली हो उस से

सप्तमस्थान में पापग्रह स्थित हों तो स्त्री को मारते हैं। यदि भौम षष्ठस्थान में हो और राहु सप्तमस्थान में तथा शनि अष्टमस्थान में हो तो उस पुरुष की स्त्री मृत्यु को प्राप्त होती है।

कलत्रपे राहुयमारयुक्ते वा क्रूरषठ्यंशगतेऽत्र तद्वत्।
चेज्जन्मनि व्योमगते दिनेशे शत्रौ शशांके प्रमदाविनाशः॥

यदि 'सप्तमेश' राहु, शनि तथा भौम से युक्त हो, क्रूर षष्ठ्यंश में हो तो स्त्री मृत्यु को प्राप्त होती है। यदि जन्म समय में सूर्य दशमस्थान में हो और चन्द्रमा षष्ठस्थान में हो तो स्त्री का नाश होता है।

कलत्रनाथे रिपुनीचसंस्थे मूढेऽथ वा पापनिरीक्षिते वा।
कलत्रभे पापयुते च दृष्टे कलत्रहानिं प्रवदन्ति संतः॥

यदि 'सप्तमेश शत्रुराशि में वा नीच राशि में वा अस्तगत वा पापग्रह से दृष्ट हो और सप्तमस्थान पापग्रहों से युक्त हो तो विशिष्टजन स्त्री की हानि को कहते हैं।

षष्ठाष्टम व्ययस्थेषु मदेशो दुर्बलो यदि
नीचराशिगते युक्ते दारनाशं विनिर्दिशेत्॥

यदि निर्बल 'सप्तमेश' षष्ठ, अष्टम, वा व्ययस्थान में स्थित हो कर नीच राशिगत ग्रह से युक्त हो तो स्त्री की मृत्यु को कहे।

पापग्रहे कर्मगतेऽतिनीचे वक्रान्विते पापखगे प्रदृष्टे।
नाशं कलत्रस्य वदन्ति नूनं मुनीश्वरास्तद्वदनेकशास्त्रैः॥

यदि 'पापग्रह' अतीव नीच में स्थित हो कर दशमस्थान में स्थित हो और मंगल से युक्त हो तथा पापग्रहों से दृष्ट हो तो मुनिजन अनेकशास्त्रों से स्त्री के मरण को कहते हैं।

स्त्री के निधनवर्षों के योग

दारेशे नीचराशिस्थे शुक्रे रंध्रारिसंयुते ।
अष्टादशे त्रयस्त्रिंशे वत्सरे दारनाशनम् ॥

सप्तमेश नीच राशि में हो और शुक्र अष्टम स्थान में हो तो १८वें वा ३३ वें वर्ष में स्त्री का मरण होता है ।

मदेशे नाशराशिस्थे व्ययेशे मदराशिगे ।
तस्य चैकोनविंशाब्दे दारनाशं विनिर्दिशेत् ॥

सप्तमेश अष्टमस्थान में स्थित हो और व्ययेश सप्तम स्थान में हो तो १९वें वर्ष में उसकी स्त्री के नाश को कहे ।

कुटुम्बस्थानगो राहुः कलत्रे भौमसंयुते ।
पाणिग्रहे च त्रिदिने सर्पदंष्टे वधूमृतिः ॥

राहु द्वितीयस्थान में हो और मंगल सप्तम में हो तो विवाह के तीन दिन पश्चात् सर्प के काटने से स्त्री की मृत्यु होती है ।

रन्ध्रस्थानगते शुक्रे तदीशे सौरिराशिगे ।
द्वादशैकोनविंशाब्दे दारनाशं विनिर्दिशेत् ॥

शुक्र अष्टम स्थान में हो और अष्टमेश शनि की १०।११ राशि में स्थित हो तो १२ वें वा १९ वें वर्ष में स्त्री के नाश को कहे ।

लग्नेशे नीचराशिस्थे धनेशे निधनं गते ।
त्रयोदशे तु संप्राप्ते कलत्रस्य मृतिर्भवेत् ॥

लग्नेश नीच राशि में हो और धनेश अष्टमस्थान में हो तो तेरहवें वर्ष के प्राप्त होने पर स्त्री की मृत्यु होती है ।

सप्तमस्थ सूर्यादि ग्रहों के वश से वन्ध्यादिगमन के योग

(१) वन्ध्यासंगो मदे भानौ चंद्रे दासीसमाश्रयः ।
कुजे रजस्वलासंगो वन्ध्यासंगश्च कीर्त्तितः ॥

यदि सूर्य सप्तम में हो तो वन्ध्यागामी होता है एवं चन्द्रमा से दासी के समान स्त्रीगमन करने वाला और मंगल सप्तम हो तो रजस्वला और वन्ध्यागामी कहना चाहिये ।

बुधे वेश्याऽथहीना वणिक्स्त्री प्रकीर्त्तिता ।
गुरौ ब्राह्मणभार्या स्याद् गर्भिणीसंगमं भृगौ ॥

यदि बुध सप्तम में हो तो निर्धन वेश्या वा वणिक् स्त्री (बनिये की औरत) कहनी चाहिये । गुरु सप्तम हो तो ब्राह्मण स्त्रीगामी एवं शुक्र सप्तम हो तो गर्भिणी (गर्भवती) स्त्रीगामी होता है ।

हीना वा पुष्पिता वा स्यान्मंदराहुकेतुफणीश्वरैः ।
राहौ च गर्भिणी संगः कृष्णया कुब्जया शनौ ।
एवं सुज्ञस्थतैरेतैरीदृक् स्त्रीसंग उह्यताम् ।

यदि सप्तम स्थान में शनि, केतु वा राहु हो तो हीनजाति अर्थात् म्लेच्छ, चाण्डालादि जाति की स्त्री का सङ्ग होता है या रजस्वला स्त्री का संग होता है अथवा राहु सप्तम में हो तो गर्भिणी स्त्री का सङ्ग और शनि सप्तम हो तो कृष्णा (काले रंग की) वा कुब्जा (कुबड़ी) स्त्री का संग होता

---

(१) 'पाठान्तरम्' —वन्ध्यासङ्गमिनेऽस्तगे समवधूकेलिं निशानायके भूपुत्रे तु रजस्वला जनरतिं वन्ध्यावधूमेति वा । वेश्यामिन्दुसुते तु विप्रवनितां जीवे सिते गर्भिणीं नीचस्त्रीरतिमर्कजोरगशिखिप्राप्तेऽथ वा पुष्पिणीम् इति ।

है। एवं चतुर्थस्थान में स्थित सूर्यादिग्रहों से पूर्वोक्त स्त्रियों की कल्पना करनी चाहिए।

तनुशनिश्च शुचिःस्मरगः सितो विशुभदृक् सततं बृषलीपतिः।
तरणिसूनुरनंगगतोऽम्बरे विधुरजीवदृशा बृषली पति॥

यदि शनि लग्न में हो और शुक्र सप्तम में हो तथा वे दोनों शुभग्रहों से दृष्ट न हों तो उत्तम शूद्रिणी का पति होता है। यदि शनि सप्तम में हो और चन्द्रमा दशम में हो तथा दोनों बृहस्पति से अदृष्ट हों तो शूद्रिणी का पति होता है।

यदि च दृश्यदलेऽर्कशनी रिपौ हिमगुरस्तगतो विदवीक्षितः।
कुवृषलीपतिरार्किकुजौ यदाऽरिसुखयोस्तरुणी किल गुर्विणी॥

यदि सूर्य दृश्यार्द्ध में हो तथा शनि षष्ठस्थान में हो एवं चन्द्रमा सप्तम में हो और बुध से अदृष्ट हो तो निन्दित शूद्रिणी का पति होता है। और यदि शनि षष्ठस्थान में हो तथा भौम चतुर्थ स्थान में हो तो गर्भवती स्त्री की प्राप्ति होती है।

अथ विधौ शनिभौमयुतेक्षिते परखगा दिवि योनिगुदावशात्।
परवधूरतयोग उ पुंदृशा यदि भवेद्धि गुदारमणस्तदा॥

यदि चन्द्रमा, शनि भौम से युक्त वा दृष्ट हो और अन्य ग्रह दशम-स्थान में हों तो योनिगुदा के वश से पराई स्त्री के सहवास का योग होता है। यदि पूर्वोक्त योग में पुरुष ग्रहों की दृष्टि हो तो गुदारमण वाला होता है।

यदि शनिर्मदने हिमदीधितेः करतलेन हि वीर्य्यपरिच्युतिः।

यदि चन्द्रमा से सप्तमस्थान में शनि हो तो हाथ से वीर्य का गिराना होता है।

कन्यागमन के योग

कन्यांशके सौम्यदृशा विहीनो विलग्नसंस्थो भृगुजोऽत्र जातः ।
कन्यारतिं वांछति पापयुक्तः स्त्रीलम्पटः स्यात् सततं विलज्जः ॥

यदि शुभदृष्टिरहित शुक्र लग्न में स्थित होकर कन्यांशक में हो तो कन्या से भोग की इच्छा करता है यदि वह लग्नस्थ शुक्र पापग्रह से युक्त हो तो स्त्रीलंपट तथा नित्य निर्लज्ज होता है ।

वयोऽधिक स्त्री गमन के योग

शनैश्चरे सप्तमगे विलग्ने यदा नवांशो धरणीसुतस्य ।
वृद्धांगनासन्निरतो मनुष्यः सदा भवेत्कामनिपीडितात्मा ॥

यदि शनि सप्तम स्थान में स्थित हो और लग्न में मंगल की १।८ राशि का नवांश हो तो वह मनुष्य वृद्ध स्त्री से सहवास करने वाला तथा नित्य काम से पीड़ित शरीर वाला होता है ।

वेश्यागमन के योग

यदा विलग्ने सधनुः शशांको नवांशकःस्याद्रविनन्दनस्य ।
वेश्यानुरक्तं कुरुते मनुष्यं सदातुरं पापरतं नृशंसम् ॥

यदि लग्न में धनुराशि का चन्द्रमा हो वा लग्न में शनि का नवांश हो और चन्द्रमा धनुराशि में हो तो मनुष्य को वेश्या से अनुरक्त तथा नित्यरोगी, पाप में निरत और क्रूर करता है ।

संगमस्थान का विचार

(१) क्रीडागारमिने वनं सुखगते चारुस्वगेहं विधौ,
भूपुत्रे सति कुञ्जमिच्छति बुधे जातो विहारस्थलम् ।
जीवे देवगृहं सिते तु सलिलं मन्देऽथ वा पन्नगे,
केतौ माधवशंकरप्रियसुतस्थानं वधूसंगमे ॥

---

(१) 'पाठान्तरम्' वनं गृहं च कुञ्जं च स्याद्विहारो देवतालयम् । जलं हरिगजस्थानमिति स्थाननिरूपणम् ॥

यदि सूर्य चतुर्थ में हो तो वन क्रीडास्थान होता है। चन्द्रमा चतुर्थ हो इो तो अपना सुन्दर घर क्रीडास्थान होता है। एवं भौम से कुटिया, बुध से बिहारस्थान, गुरु से देवालय, शुक्र से जल स्थान, शनि, राहु, केतु से हरि, गणेश का स्थान अर्थात् अश्व गजस्थान क्रीडास्थान होता है।

केन्द्रे कोणे पापयुते पशुवन्मैथुनं वदेत्।
मन्दे पापान्विते वापि समान्दौ तादृशं वदेत्॥

यदि केन्द्र और त्रिकोण में पापग्रह हों तो पशु के समान संगम करने वाला होता है। अथवा शनि पापयुक्त हो वा गुलिक युक्त हो तो पशु के समान संगम करने वाला होता है।

मदे सूर्ये सुखे भौमे पशुवन्मैथुनं वदेत्।
राहौ कलत्रे भौमे वा सुखे तादृशमैथुनम्॥

यदि सूर्य सप्तम स्थान में हो और मंगल चतुर्थ स्थान में हो तो पशु के समान संगम करने वाला होता है।

स्त्रीपुरुष के परस्पर प्रेम तथा झगड़े का योग

लग्नेश्वरो लग्नगतः स्मरेशो जायास्थितो द्वावथ लग्नसंस्थौ।
जामित्रगौ द्वावथ भर्तृवध्वो प्रेमातिरेकं कुरुतः प्रकर्षात्॥

यदि लग्नेश लग्न में हो और सप्तमेश सप्तम में अथवा दोनों लग्न में हों वा सप्तम में हों तो पतिपत्नी का परस्पर अधिक प्रेम करते हैं।

शत्रुदृष्टा च दम्पत्योर्नित्यं झकटको भवेत्।
लग्नेशास्तपयोः सप्तमदृष्टया प्रीतिरुल्वणा॥

यदि लग्नेश सप्तमेश की परस्पर शत्रु दृष्टि हो तो दोनों पति-पत्नी में सदा झगड़ा होता है। यदि लग्नेश और सप्तमेश की सप्तमदृष्टि हो तो उत्तम प्रीति होती है। मतान्तर में अल्पप्रीति होना कहा है।

स्त्रीवश्य के योग

पापे द्वादशकामस्थे क्षीणचन्द्रस्तु पंचमे ।
जातश्च भार्यावश्यः स्यादितिजातिविरोधकृत् ॥

यदि पापग्रह द्वादश और सप्तम स्थान में हो और क्षीण चन्द्रमा पंचम स्थान हो में तो इस योग में उत्पन्न पुरुष स्त्री का वशीभूत होता है और जाति का विरोध करने वाला होता है ।

लग्नेशे सप्तमस्थे वा भार्यादेशकरः पतिः ।
लग्नेशे सप्तमेशे तु भर्तुरादेशकृद् बधूः ॥

यदि लग्नेश सप्तमस्थान में हो तो वह पुरुष स्त्री की आज्ञा का पालन करने वाला होता है । यदि सप्तमेश लग्न में हो तो उस पुरुष की स्त्री पति की आज्ञा पालन करने वाली होती है ।

सवीर्य निर्वीर्य के योग

वीर्यन्तु सप्तमे ज्ञेयं ग्रहभावप्रकाशतः ।
सप्तमं सौम्यसंयुक्तं वीर्यवाञ्जायते नरः ॥

ग्रह और भाव के प्रकाश से सप्तम स्थान में वीर्य जानना चाहिये । यदि सप्तम स्थान शुभ ग्रह से युक्त हो तो मनुष्य वीर्य वाला होता है ।

बहुक्रूरस्थिताश्चैव सप्तमे सौम्यवर्जिताः ।
सप्ताधीशो हि निर्बलो निर्वीर्यो जायते नरः ॥

यदि सप्तम स्थान में बहुत से क्रूरग्रह स्थित हों और वे शुभग्रहों से रहित हों तथा सप्तमेश निर्बल हो तो मनुष्य वीर्य रहित होता है ।

लग्नाधीशो हीनबलः सप्तमेशस्तथैव च ।
द्यूने क्रूरग्रहश्चैव निर्वीर्यो मनुजः स्मृतः ॥

यदि लग्नेश बल रहित हो तथा सप्तमेश भी बल रहित हो और सप्तम स्थान में पाप ग्रह हो तो मनुष्य वीर्य रहित जानना चाहिये।

सप्तमे तु यदा चन्द्रो नष्टतेजश्च निर्बलः।
क्रूराक्रान्तो विशेषेण स्वक्षेत्रे वा निर्बलः ॥

जब सप्तम स्थात में चन्द्रमा हो तो मनुष्य तेज रहित तथा निर्बल होता है। यदि सप्तम स्थान में स्थित चन्द्रमा पापग्रह से आक्रांत हो अथवा स्वक्षेत्र में हो तो विशेष करके निर्बल होता है।

व्यभिचार के योग

दैत्येन्द्रमंत्रिणि मदे कुजकोणवर्गे
दृष्टे विभाकरतनूजमहीसुताभ्यांम्।
जारोभवेदुत गुरौ यमभौमभांशयातेऽथ
वा क्षितिजमन्दयुतेऽत्रजारः ॥

यदि सप्तम स्थान में स्थित हुआ शुक्र, मंगल वा शनि के वर्ग में हो और शनि मंगल करके दृष्ट हो तो पुरुष जार होता है। अथवा 'गुरु' शनि वा भौम की राशि में और नवांश में स्थित हो तो जार होता है। अथवा 'गुरु' मंगल शनि से युक्त हो तो जार होता है।

क्षीणे शशांके यदि पापयुक्ते दारस्थिते त्वन्यकलत्रगामी।
लग्ने सपापे यदि दारनाथे जातः परस्त्रीषु रतः कुमार्गी ॥

यदि क्षीण चन्द्रमा पाप ग्रहों से युक्त होकर सप्तम स्थान में स्थित हो तो परस्त्रीगामी होता है। अथवा सप्तमेश पाप ग्रहों से युक्त होकर लग्न में हो तो उत्पन्न पुरुष परस्त्रीगामी और कुमार्गी होता है।

लग्नस्थिता वित्तकलत्रशत्रु नाथाः सशुक्रा यदि पापयुक्ताः।
जातः परस्त्रीषु रतः कुमार्गी शुभेक्षिताश्चेन्न तथा भवेच्च ॥

द्वितीय, सप्तम, षष्ठ, इन तीनों भावों के स्वामी शुक्र से युक्त होकर लग्न में स्थित हों और पाप ग्रहों से भी युक्त हों तो उत्पन्न पुरुष परस्त्रीगामी तथा कुमार्गी होता है। यदि वे पूर्वोक्त भावेश शुक्र सहित और पाप ग्रहों से युक्त होकर लग्न में स्थित हों और शुभ ग्रहों से दृष्ट हों तो पुरुष परस्त्रीगामी नहीं होता है।

लग्नारिपौ पापयुतौ यदि स्याज्जातः परस्त्रीषु रतः कुमार्गी,
लग्नेश्वरे शत्रुकुटुम्बनाथे पापैर्युते वा यदि दारराशौ।
सौरे सपापे यदि दारनाथे जातः परस्त्रीषु रतः कुटुम्बे,
सराहुकेतौ यदि दारनाथे पापेक्षिते वा व्यभिचारयोगः॥

लग्नेश षष्ठेश पाप युक्त हों तो इस योग में उत्पन्न पुरुष परस्त्रियों में निरत और कुमार्गगामी होता है। अथवा लग्नेश षष्ठेश द्वितीयेश ये तीनों पाप ग्रहों से युक्त हों अथवा सप्तम स्थान में शनि हो और सप्तमेश पाप ग्रह से युक्त होकर द्वितीय स्थान में हो तो व्यभिचारी होता है। अथवा सप्तमेश राहु वा केतु से युक्त होकर पाप दृष्ट हो तो व्यभिचारी होता है।

कर्मेशवित्तेशकलत्रनाथाः मानस्थिताः जारमुदाहरन्ति।
एको ग्रहस्तेषु चतुर्थराशौ जातः परस्त्रीगमनं प्रयाति॥

कर्मेश, द्वितीयेश, सप्तमेश, ये तीनों दशम स्थान में हों तो पुरुष को व्यभिचारी करते हैं। अथवा कर्मेश, द्वितीयेश, सप्तमेश, इन तीनों में से एक कोई ग्रह चतुर्थ स्थान में हो तो इस योग में उत्पन्न पुरुष परस्त्रीगमन को प्राप्त होता है।

(१) शुक्रज्ञौ द्यूनयातौ गगनविलयगौ मानवः पुंश्चलः स्या-
त्कामाज्ञामन्दिरस्थौ कविधरणीसुतौ तद्वदाज्ञाम्बुयातौ ।
काव्यारौ तद्वदिन्दो नंभसि रविसुतादास्फुजिन्नीरयायी,
तद्वत्कामास्पदस्था बुधसितशनयः स्वर्क्षगे भार्गवे हि ॥

शुक्र बुध ये दोनों सप्तम वा दशम वा अष्टम स्थान में स्थित हों तो मनुष्य पुंश्चल (व्यभिचारी) होता है। अथवा शुक्र मंगल ये दोनों सप्तम वा दशम स्थान में हों तो व्यभिचारी होता है । अथवा शुक्र, मंगल दशम, चतुर्थ स्थान में हों तो व्यभिचारी होता है । अथवा चन्द्रमा से दशवें स्थान में शनि हो और शनि से चतुर्थ स्थान मे हो तो व्यभिचारी होता है । अथवा बुध, शुक्र, शनि, शुक्र की २।७ राशि में स्थित होकर सप्तम वा दशम स्थान में हों तो व्यभिचारी होता है ।

सप्तमं शनिचन्द्राभ्यां दृष्टं युक्तं विशेषतः ।
कामातुरो नरो ज्ञेयः परस्त्रीनिरतः सदा ॥

यदि 'सप्तमस्थान' विशेष करके शनि चन्द्रमा से दृष्ट वा युक्त हो तो मनुष्य कामातुर जानना चाहिये और नित्य पराई स्त्रियों में निरत होता है।

---

(१) 'पाठान्तर'—शुक्रज्ञौ द्यूनगौ तथा दशमगौ स्यात्पुंश्चलोऽसृक्सितौ खेऽस्ते वा परदारगः कुजसितौ तुर्ये च खे पुंश्चलः । मन्देन्द्वीक्षित आस्फुजित्सुखगतः खस्थोऽपि वा पुंश्चलः खे चास्ते ज्ञासितार्कजा अथ दिने स्वर्क्षे सितः पुंश्चलः ।१। द्यूनेऽथ खे सितबुधार्किषु वारभृग्वोस्तुर्येऽथ खे भृगुसुते शशिसौरि दृष्टे । क्रोडारयोरारिगयोर्निजवर्गभौमे दृष्टचा कवेः [illegible] परदारगामीति ॥२॥

सप्तमेशः स्थितो लाभे सप्तमे बुधसंयुते ।
कामातुरो नरो नित्यं परस्त्रीनिरतः सदा ।।

सप्तमेश एकादशस्थान में हो और बुध सप्तमस्थान में हो तो मनुष्य नित्य काम से पीड़ित और नित्य ही पराई स्त्रियों में निरत होता है ।

चन्द्रचन्द्रजशुक्रार्कियुक्त दृष्टं तु सप्तमम् ।
नरःकामाधिकश्चैव परस्त्रीरुचिलम्पटः ।।

यदि सप्तमस्थान चन्द्र बुध, शुक्र, शनि से युक्त वा दृष्ट हो तो मनुष्य अधिक कामी और पराई स्त्रियों में रुचि रखने वाला होता है ।

मदनाधिपतिर्नीचे युतो नीचग्रहेण च ।
सप्तमं क्रूरसंयुक्तं क्रूरदृष्टं च लम्पटः ।।

यदि सप्तमेश नीच राशि में हो वा नीचगत ग्रह से युक्त हो और सप्तमस्थान पापग्रह से युक्त तथा दृष्ट हो तो मनुष्य लम्पट (व्यभिचारी) होता है ।

सप्तमे चरभं चैव चरांशे चन्द्रमा भवेत् ।
चरराशौ सप्तमेशो मानवोऽत्यन्तचंचलः ।।

यदि सप्तमस्थान में चरराशि हो और चन्द्रमा चरांश में हो तथा सप्तमेश चरराशि में हो तो मनुष्य अत्यन्त चंचल होता है ।

सप्तमे चरभ चैव मानवश्चंचलः स्मृतः ।
स्थिरभे साधुतां याति द्विस्वभावे च मिश्रकम् ।।

यदि सप्तमस्थान में चरराशि हो तो मनुष्य चंचल जानना चाहिये और स्थिरराशि में साधुता को प्राप्त होता है तथा द्विस्भावराशि सप्तम में हो तो मिश्र जानना चाहिये ।

मदनपस्तनुगोऽथ विलग्नपो मदनगः शशिना च विलोकितः।
भवति चात्र खलु चंचलो बहुविधासु रतो वनितासु च॥

यदि सप्तमेश लग्न में हो और लग्नेश सप्तम में स्थित हो कर चन्द्रमा से दृष्ट हो तो इस योग में मनुष्य चंचल होता है और बहुत प्रकार की स्त्रियों में निरत होता है।

अतिकामी तथा अल्पकामी के योग

(१) शुक्रोऽप्रसूतिगमनान्मिथुनापरार्द्धे
स्वांशे हरिप्रथमकार्धगतः कुगेहे।
कामातुरं जनयते झषगस्तथास्मि
न्षष्ठेश्वरे कुजहते च मृताल्पसूतिम्॥

यदि 'शुक्र' मिथुन, सिंह, कन्या, धनु, इन अप्रसूति राशियों में स्थित हो अर्थात् मिथुनराशि के परार्द्ध में स्थित होकर वृषांशक में हो तथा सिंह-राशि के पूर्वार्ध में स्थित होकर वृषांशक में हो और दुष्टस्थान ६।८।१२ में स्थित हो तो कामातुर मनुष्य को उत्पन्न करता है। यदि शुक्र षष्ठेश होकर मीनराशि में स्थित हो और युद्ध में मंगल से पराजित हो तो मनुष्य को मृत-प्रजा वा अल्प प्रजा वाला करता है।

---

(१) पाठान्तरम्'-द्वन्द्वापरार्द्धे भृगुजो निजांशे पूर्वार्धके सिंहगते कुगेहे, कामातुरं मीनगत स्वरीशे भौमार्दिते चैव मृताल्पसूतिः।१। द्वन्द्वे वृषांशकगते बहुकाम उक्तः सिंहादिभाद्धग सिते च विरूपकारी। भौमेन संयुतसितो यदि षष्ठपोऽयं कामाधिकं युवतिलम्पटमाहुराय्र्या इति।२।

क्षोणीपुत्रेण युक्तः प्रथमसुरगुरुः लग्नतः षष्ठपोऽयं ।
कामाधिक्यं नराणां जनयति नियतं पापदृष्टो विशेषात् ॥
काव्ये स्वीयालयस्थे तदनु मिथुनगे कामवान्मानवः स्या
न्मूर्तौ सप्ताश्वसूनौ धनुषि च वृषभे चेत्पुमानल्पकामः ॥

षष्ठेश शुक्र यदि मंगल से युक्त हो, विशेषतया पाप दृष्ट हो अथवा सप्तम में शुक्र हो, अथवा षष्ठेश गुरु हो और शुक्र-मंगल का शनि हो तो अधिक कामी होता है। लग्न में वृष या धन राशि हो और उसमें शनि हो तो अल्पकामी होता है।

वेश्या के समान तथा जारिणी स्त्री के योग

सौम्यांशे वा द्यूनपे सौम्यदृष्टे ।
वेश्या तुल्या वा कामिनी नरस्य ॥

यदि 'सप्तमेश' बुध के नवांश में हो वा बुध से दृष्ट हो तो मनुष्य की वेश्या के समान स्त्री होती है।

जामित्रे मन्दभौमस्थे तदीशे मन्दभूमिजे ।
वेश्या वा जारिणी वापि तस्य भार्या न संशयः ॥

यदि 'शनि-मंगल' सप्तमस्थान में हो अथवा शनि-मंगल सप्तमस्थान के स्वामी हों अथवा शनि-भौम अपनी राशि से सप्तम हों तो उस पुरुष की स्त्री वेश्या वा जारिणी होती है इस में संदेह नहीं करना चाहिये।

धर्मारिनिधनाधीशः स्थानके क्वापि सस्थिता ।
अशोभनैर्युता दृष्टा निरतान्येषु तद्वधूः ॥

नवम, षष्ठ, के स्वामी सप्तम में बैठे हों, दुष्ट ग्रह से युक्त व दृष्ट हों तो उस पुरुष की स्त्री दूसरे पुरुष से सम्बन्ध रखती है।

व्यभिचारिणी स्त्री तथा व्यभिचारी पति के योग

प्रसूतिकाले च कलत्रभावे यमस्य भूमीतनयस्य वर्गे।
ताभ्यां प्रदृष्टे व्यभिचारिणी स्याद्भर्ताऽपि तस्याः व्यभिचारकर्त्ता।

यदि जन्म समय में मंगल का वा शनि का वर्ग (राशि) सप्तम भाव में हो और भौम शनि से दृष्ट हो तो उस पुरुष की स्त्री व्यभिचारिणी होती है और वह पुरुष भी व्यभिचारी होता है।

खलयुतेक्षितमस्तगृहं यदा खलगृह च खलान्तरितं तथा।
चपलमत्र कलत्रमथो नरश्चपलदारवशात्परदारभुक्॥

यदि 'सप्तम स्थान' पापग्रह से युक्त वा दृष्ट हो और सप्तम स्थान में पापग्रह की राशि हो तथा सप्तम स्थान पापग्रहों के अन्तराल में हो तो चंचल स्त्री होती है और चंचल स्त्री के बश से पुरुष भी परस्त्रीगामी होता है।

कामस्थाने चन्द्रदृष्टिर्नरस्य भार्य्या नूनं चंचला स्यान्नितांतम्।
यद्वा द्यूने जीववर्गे बुधेन युक्ते दृष्टे कामगेऽब्जे तथा स्यात्॥

सप्तम स्थान यदि चन्द्रमा से दृष्ट हो तो पुरुष की स्त्री चंचला होता है। सप्तम में गुरु वर्ग चन्द्रमा हो वह बुध से दृष्ट वा युक्त हो तो स्त्री चंचला होती है।

★एकत्रस्थाश्चन्द्रमन्दावनेयाः पौश्चल्यत्वं ते नृनार्य्योः प्रकुर्युः।

यदि चन्द्र शनि भोम ये तीनों एक स्थान में स्थित हों तो पुरुष-स्त्री दोनों को व्यभिचारी करते हैं।

परस्त्री विमुखत्व के योग

रविजीवकुजैर्युक्तं दृष्टं तु मदनं यदा।
नरः कामाधिकश्चैव परस्त्रीविमुखः सदा॥

★'पाठान्तरम्'--मन्देन्द्वाराः युक्तदृष्टाः विधुर्वा मध्येऽसृक्छन्योस्तयोः पुंश्चलत्वम् इत्यत्र गुदमैथुनप्रियत्वं आधारत्वेन कर्त्तृत्वेन वा।

यदि 'सप्तम स्थान' सूर्य गुरु भौम से युक्त वा दृष्ट हो तो मनुष्य अधिक कामी होता है परन्तु पराई स्त्री से पराङ्मुख होता है अर्थात् सदाचारी होता है।

जीवदृष्टं तु मदनं कुजदृष्टं तु लग्नभम्।
कामाधिको नरश्चैव परस्त्रीषु पराङ्मुखः॥

यदि सप्तम स्थान गुरु से दृष्ट हो और लग्न मंगल से दृष्ट हो तो मनुष्य अधिककामी होता है और पराई स्त्रियों से पराङ्मुख (दूसरे की स्त्रियों में कामवासना न रखने वाला) होता है।

सप्तमेशो यदा तुङ्गे स्वांशे वा सबलो यदा।
क्रूरग्रहितं द्यूनं मानुषो न हि लम्पटः॥

यदि सप्तमेश अपनी उच्चराशि में हो वा अपने नवांश में हो वा बलवान् हो और सप्तम स्थान पापदृष्ट हो तो मनुष्य लम्पट (व्यभिचारी) नहीं होता है अर्थात् सदाचारी होता है।

गुरुलग्ने तथा शुक्रः समसप्तगतो बुधः।
चन्द्रश्चैकादशे चैव समर्थः पुरुषो भवेत्॥

गुरु तथा शुक्र लग्न में हों और सप्तम स्थान में बुध हो एवं चन्द्रमा एकादश स्थान में हो तो पुरुष समर्थ होता है।

गुरोर्गृहे दैत्यगुरावथानयोः,
खलग्रभाजोरथवेस्थशालयोः।
विनाऽरिदृष्टयान्वधू पराङ मुख-,
स्तनौ च जीवे दशमे त्रिगे भृगौ॥

गुरु की (९।१२) राशि में शुक्र हो और वह मंगल से दृष्ट न हो अथवा लग्न दशम में गुरु तथा शुक्र हो लग्न में गुरु हो तृतीय व दशम में शुक्र हो तो पुरुष या स्त्री से पराङ् मुख रहता है।

स्त्री की राशि का विचार तथा अपुत्राल्प-पुत्रादि के योग

कलत्रनाथस्थितभ तदीय राशि कलत्रस्य विदुर्महान्तः ।
तस्योच्चनीचं यदि वा कलत्रराशि तदंशत्रितयं तदीयम् ॥
कलत्रराशित्रितयेऽथ वा स्यात्तदीशसंयुक्तभकोणराशौ ।
कलत्रराशि समुदाहरन्ति प्रोक्तान्यराशौ यदि नास्ति पुत्रः ॥

सप्तमेश जिस राशि में हो उस राशि को महात्माजन स्त्री की राशि जानते हैं। अथवा सप्तमेश की उच्च राशि को वा नीच राशि को स्त्री की राशि कहते हैं। अथवा सप्तमेश की जो नवांश राशि हो उससे तीसरी राशि को स्त्री राशि कहते हैं अथवा सप्तम स्थान से तीसरे स्थान में अर्थात् भाग्य में जो राशि हो उस को स्त्री की राशि कहते हैं। अथवा सप्तमेश जिसराशि में हो उस राशि से पंचम वा नवम स्थान में जो राशि हो मुनिजन उसे स्त्री की राशि को कहते हैं। यदि स्त्री की जन्म राशि उक्त राशियों के अतिरिक्त हो तो पुत्र नहीं होता है।

गोसिंहकन्यादिषु जन्मराशिः स्त्रीणां भवेज्जन्मनि चाल्पपुत्रा ।
शुभग्रहैराक्रमितेषु तेषु सुतान्वदेत्तत्र बहून् गुणाढ्यान् ॥

यदि स्त्रियों के जन्म समय में वृष, सिंह, कन्या, इन तीनों के मध्य एक कोई स्त्री की जन्म राशि हो तो वह स्त्री अल्प पुत्र वाली होती है। यदि उक्त तीनों राशियों में से जो राशि स्त्री की हो वह राशि शुभग्रह से आक्रान्त हो तो बहुत गुणी पुत्रों को कहे।

बाल्यावस्था में विवाह के योग

दारेश्वरे सन्निहिते विलग्ननाथस्य बाल्ये परिणीतमाहुः ।
ग्नलात्कलत्राच्छुभखेचरेन्द्रे समीपराशौ यदि तत्तथैव ॥

यदि 'सप्तमेश' लग्नेश के समीप स्थित हो तो बाल्यावस्था में विवाह को कहते हैं अथवा लग्न से और सप्तमेश से शुभ ग्रह समीप की राशि में स्थित हों तो बाल्यावस्था में विवाह को कहते हैं।

लग्ने कुटुम्बे यदि दारभावे शुभान्विते शोभनवर्गयुक्ते।
तदीश्वरेशोभनदृष्टयुक्ते बाल्ये विवाहादिकमाहुरार्याः॥

यदि लग्न, द्वितीय और सप्तम भाव में शुभग्रह से युक्त हो एवं लग्नेश, कुटुम्बेश, सप्तमेश शुभग्रह से दृष्ट वा युक्त हो तो आर्यजन बाल्यावस्था में विवाह को कहते हैं।

पारावतांशादिगते कलत्रनाथे कुटुम्बाधिपतौ बलाढ्ये।
मृद्वाख्यभागे तनुभावनाथे बाल्ये विवाहः मुनयो वदन्ति॥

यदि सप्तमेश पारावतादि दशवर्ग में हो और कुटुम्बेश बलवान् हो तथा लग्नेश मृदुषष्ठांश में हो तो मुनिजन बाल्यावस्था में विवाह को कहते हैं।

पांच वर्ष से अधिक अवस्था में विवाह के योग

दारेशे शुभराशिस्थे स्वोच्चस्वर्क्षगते भृगुः।
पंचमे नवमेब्दे तु विवाहः प्रायशो भवेत्॥

यदि 'सप्तमेश' शुभग्रह राशि में हो और 'शुक्र' अपनी राशि में हो तो पांचवें वा नवें में वर्ष में बहुधा विवाह होता है।

दारस्थानं गते सूर्ये तदीशे भृगुसंयुते।
सप्तमैकादशे वर्षे विवाहः प्रायशो भवेत्।

यदि 'सूर्य' सप्तम स्थान में स्थित हो और सप्तमेश शुक्र से युक्त हो तो सातवें वा ग्यारहवें वर्ष में बहुधा विवाह होता है।

कुटुम्बस्थानगे शुक्रे दारेशे लाभराशिगे ।
दशमे षोडशाब्दे च विवाहः प्रायशो भवेत् ॥

यदि शुक्र द्वितीयस्थान में हो और सप्तमेश एकादशस्थान में हो तो दसवें वा सोलहवें वर्ष में बहुधा विवाह होता है।

लग्नात् केन्द्रगते शुक्रे लग्नेशे मदराशिगे ।
वत्सरैकादशे प्राप्ते विवाहं लभते नरः ॥

यदि शुक्र लग्न से केन्द्र में हो और सप्तमेश सप्तम स्थान में हो तो ग्यारहवें वर्ष के प्राप्त होने पर मनुष्य विवाह को प्राप्त होता है।

लग्नात्केन्द्रगते शुक्रे तस्मात्कामगते शनौ ।
द्वादशैकोनविंशे च विवाहः प्रायशो भवेत् ॥

यदि लग्न से केन्द्र में शुक्र हो और शुक्र से सप्तम स्थान में शनि हो तो बारहवें वा उन्नीसवें वर्ष में बहुधा विवाह होता है।

चन्द्राज्जामित्रगे शुक्रे शुक्राज्जामित्रगे शनौ ।
वत्सरेऽष्टादशे प्राप्ते विवाहं लभते नरः ॥

चन्द्रमा से सप्तम स्थान में शुक्र हो और शुक्र से सप्तम स्थान में शनि हो तो अट्ठाईसवें वर्ष के प्राप्त होने पर मनुष्य विवाह को प्राप्त होता है।

धनेशे लाभराशिस्थे लग्नेशे कर्मराशिगे ।
अब्दे पंचदशे तुल्ये विवाहं लभते नरः ॥

धनेश एकादश स्थान में हो और लग्नेश दशम स्थान में हो तो मनुष्य पंद्रहवें वर्ष में विवाह को प्राप्त होता है।

धनेशे लाभराशिस्थे लाभेशे धनराशिगे ।
अब्दे त्रयोदशे प्राप्ते विवाहं लभते नरः ॥

धनेश एकादश स्थान में हो और एकादशेश द्वितीय स्थान में हो तो तेरहवें वर्ष के प्राप्त होने पर मनुष्य विबाह को प्राप्त होता है ।

रन्ध्राज्जामित्रगे शुक्रे तदीशे भौमसंयुते ।
द्वाविंशे सप्तविंशाब्दे विवाहं लभते नरः ॥

अष्टम से सप्तम स्थान में अर्थात् द्वितीय स्थान में शुक्र स्थित हो और द्वितीयेश मंगल से युक्त हो तो बाईसवें वर्ष में या सत्ताईसवें वर्ष में मनुष्य विवाह को प्राप्त होता है ।

दारांशकगते लग्ननाथे दारेश्वरे व्यये ।
त्रयोविंशे च षड्विंशे विवाहं लभते नरः ॥

सप्तम भाव में जो राशि हो उस राशि के नवांश में लग्नेश स्थित हो और सप्तमेश व्ययस्थान में हो तो तेईसवें वर्ष में वा छब्बीसवें वर्ष में मनुष्य विवाह को प्राप्त होता है ।

रन्ध्रांशे दारराशिस्थे लग्नांशे भृगुसंयुते ।
पंचविंशे त्रयस्त्रिंशे विवाहं लभते नरः ॥

अष्टम भाव में जिस राशि का नवांश हो वह राशि सप्तम स्थान में स्थित हो और लग्न में जिस राशि का नवांश हो उस राशि में शुक्र हो तो पच्चीसवें वर्ष में किंवा तैतीसवें वर्ष में मनुष्य विवाह को प्राप्त होता है ।

भाग्याद्भाग्यगते शुक्रे तद्व्यये राहुसंयुते ।
एकत्रिंशे त्रयस्त्रिंशे दारलाभं विनिर्दिशेत् ॥

यदि नवम से नवमस्थान अर्थात् पंचम स्थान में शुक्र हो और शुक्र से बारहवें में अर्थात् चतुर्थ स्थान में राहु हो तो इकत्तीसवें वा तैंतीसवें वर्ष में स्त्री लाभ को कहे ।

भाग्याज्जामित्रगे शुक्रे तद्द्यूने दारनायके ।
त्रिंशे वा सप्तविंशाब्दे विवाहं लभते नरः ॥

यदि नवम स्थान से सातवें स्थान अर्थात् तृतीय स्थान में शुक्र हो और शुक्र से सप्तम स्थान में अर्थात् नवम स्थान में सप्तमेश हो तो तीसवें वा सत्ताईसवें वर्ष में मनुष्य विवाह को प्राप्त होता है ।

शुक्राज्जामित्रगे चन्द्रे चन्द्राज्जामित्रगे बुधे ।
रन्ध्रेशे सुतभावस्थे प्रथमं दशमेऽब्दके ।
द्वाविंशे च द्वितीयं च त्रयस्त्रिंशे तृतीयकम् ॥
विवाहं लभते मर्त्यो नात्र कार्य्या विचारणा ॥

यदि शुक्र से सप्तम स्थान में चन्द्रमा और उस (चन्द्रमा) से सप्तम-स्थान में बुध हो तथा अष्टमेश पंचम स्थान में हो तो मनुष्य दसवें वर्ष में प्रथम विवाह और बाईसवें वर्ष में द्वितीय विवाह तथा तैंतीसवें वर्ष में तृतीय विवाह को प्राप्त होता है इसमें विचार नहीं करना चाहिए ।

दूर देश में विवाह के योग

क्रूरे कलत्रेशयुते त्रिकोणे
तत्कारके पापसमन्विते वा ।
कुटुम्बराशौ यदि वाऽत्रमाने
(१) दूरे विवाहं कथयन्ति सन्तः ॥

यदि 'क्रूरग्रह' सप्तमेश से युक्त होकर त्रिकोण में हो अथवा 'जाया-कारकग्रह' पापग्रह से युक्त होकर द्वितीय स्थान में वा दशमस्थान में हो तो दूर देश में विवाह को सज्जन लोग कहते हैं ।

---

(१) इह विवाहादित्यपि पाठः । अत्र विवाहाद्दूरे पश्चात् भाग्यं भवेदिति कश्चिदाह तेन सुधीभिश्चिन्तनीयमिति ।

मानें सपापे यदि वा कुटुम्बे
भाग्येऽथ पापयुते कलत्रे ।
क्रूरांशके क्रूरनिरीक्षिते वा
दूरे विवाहं कथयन्ति सन्तः ।
पुत्रादिभावेष्वयमेवमार्ग-
स्तं चिन्तयित्वा प्रवदेत्सुतादीन् ।

यदि 'दशम भाव' वा 'द्वितीय भाव वा 'नवम भाव' पापग्रह से युक्त हों अथवा सप्तम भाव पापग्रह से युक्त हो और उक्त दशमादि भावों में क्रूरग्रह का नवाँश हो वा उक्त भाव क्रूरग्रह से दृष्ट हों तो विशिष्ट जन दूर देश में विवाह को कहते हैं । पुत्रादि भावों में भी यही उचित मार्ग है । उस भाव को विचार कर पुत्रादिकों को कहना चाहिये ।

विवाह के बाद भाग्योदय के योग

भाग्यं विवाहात्परतो वदन्ति शुक्रेऽस्तगते चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बपे तादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ॥

यदि शुक्र सप्तम स्थान में हो वा उपचय ३।६।१०।११ भाव में हो अथवा द्वितीयेश सप्तमस्थान में वा उपचय में हो,भाव अथवा लग्नेश सप्तम में वा उपचय भाव में हो और शुभग्रहों के दृष्टि योग से युक्त हो तो विवाह से पीछे भाग्योदय (ऐश्वर्यशाली होने) को मुनिजन कहते हैं ।

विवाह के बाद भाग्योदय नाश के योग

तत्कारके दारपतौ कुटुम्बनाथे विलग्नाधिपतौ च दुःस्थे ।
नीचारिमूढांशगते सपापे भाग्यं विवाहात्प्रविनाशमेति ॥

यदि 'जायाकारकग्रह' सप्तमेश, कुटुम्बेश, लग्नेश से दृष्ट ६।८।१२ स्थान में स्थित हो अथवा पापग्रह से युक्त होकर नीच राशि में वा अस्तगत हो तो विवाह से पीछे भाग्य नाश को प्राप्त होता है ।

क्रूरादिषष्ठ्यंशसमन्वितेऽपि तत्कारके तादृशखेचरेन्द्रे ।
शुभान्विते शोभनदृष्टिपाते नाशात्परं भाग्यमुपैति जातः ॥

यदि 'जायाकारकग्रह' वा 'सप्तमेश' 'कुटुम्बेश' 'लग्नेश' ये क्रूर-षष्ठ्यांश में युक्त होकर शुभग्रह से युक्त और दृष्ट हो तो भाग्यनाश होने के पश्चात् भाग्योदय को प्राप्त होता है ।

विवाह के समय का विचार

लग्नानङ्गपतिस्फुटैक्यगृहगे जीवे विवाहं वदेत् ।
चन्द्राधिष्ठिततारकावधपयोरैक्यांशके वा तथा ॥

लग्नेश और सप्तमेश के राश्यादिस्पष्ट के योग करने से जो राश्यादि हो उसके समान राश्यादि पर जब गोचर में गुरु प्राप्त होता है तब विवाह होता है ।

(उदाहरण) लग्नेश शनि का राश्यादिस्पष्ट १।६।१८।४ सप्तमेश चन्द्रमा का राश्यादि स्पष्ट ५।३।५६।१५ है इन दोनों का योग किया तो ६।१०।१४।१९ हुआ । जब यज्ञोपवीत काल के उपरान्त आगत योग ६।१०।१४।१९ के समान गुरु गोचर में आयेगा तब विवाह होगा ।

कलत्रनाथस्थितभांशकेशयोः सितक्षपानायकयोर्बलीयसः ।
दशागमे द्यूनपयुक्तभांशकत्रिकोणगे देवगुरौ करग्रहः ॥

सप्तमेश की राशि का स्वामी और सप्तमेश के नवांश का स्वामी एवं शुक्र तथा चन्द्रमा इन चारों के मध्य में जो अधिक बली हो उस की दशा के आने पर विवाह होता है । अथवा सप्तमेश जिस राशि में हो उस राशि से पंचम वा नवम राशि में अथवा सप्तमेश जिस नवांश में हो उस राशि से पंचम वा नवम राशि में जब गुरु गोचर में आयेगा तब विवाह होगा ।

शुक्रोपेतकलत्रराशिपदशाभुक्ति विवाहप्रदा ।
लग्नाद्वित्तपतिस्थराशिपदशाभुक्तौ च पाणिग्रहः ।।
कर्मायुर्भवनाधिनायकदशाभुक्तौ विवाहः क्रमा-
त्कामेशेन युतः कलत्रगृहगस्तत्पाकभुक्तौ तु वा ।।

शुक्र से जो सप्तमराशि हो उस के स्वामी की दशा और अन्तर्दशा विवाह देने वाली होती है। अथवा द्वितीयेश जिस राशि में हो उस राशि के स्वामी की दशा तथा अन्तर्दशा में विवाह होता है। अथवा दशमेश वा अष्टमेश की दशा और अन्तर्दशा में विवाह होता है अथवा सप्तमेश से युक्त ग्रह की दशा और अन्तर्दशा में विवाह होता है अथवा सप्तम स्थान में स्थित ग्रह की दशा और अन्तर्दशा में विवाह होता है।

सौम्यव्योमचरः स्थितः शुभगृहे चादौ ददाति श्रियं ।
पापर्क्षे शुभखेचरो यदि दशामध्ये विवाहादिकम् ।।
क्रूरः पापगृहोपगो यदि फलं पाकावसाने तथा ।
सौम्यर्क्षे यदि सर्वकालफलदः सौम्यान्वितः शोभनः ।।

यदि विवाहप्रद ग्रह शुभ हो और शुभग्रह की राशि में स्थित हो तो दशा के प्रारम्भ समय में लक्ष्मी को वा विवाह को देता है। यदि 'विवाहप्रद शुभग्रह' पापग्रह की राशि में हो तो दशा के मध्य में विवाह होता है। 'यदि विवाहकारक पापग्रह' पापग्रह की राशि में हो तो दशा के अन्त समय में विवाह देता है। यदि 'विवाहकारक शुभग्रह' शुभग्रह की राशि में स्थित होकर शुभ ग्रह से युक्त हो तो सम्पूर्णदशा में शुभफल देता है।

लग्नेश्वरस्थितनवांशपतिः स्वराशौ
चन्द्रे पुरन्दरगुरौ च कलत्रलाभम् ।
कामेशशुक्रगृहगेऽमरमंत्रिणीन्दौ
केन्द्रेऽथ वा गुरुयुते सति गोचरेण ।।

लग्नेश जिस नवांश में हो उस राशि का स्वामी तथा चन्द्रमा गुरु जब गोचर से अपनी राशि में आते हैं तब स्त्री की प्राप्ति होती है। अथवा जब सप्तमेश आये और गुरु तथा चन्द्रमा केन्द्र में हों तब स्त्री की प्राप्ति होती है। अथवा जब सप्तमेश शुक्र की राशि में आये और गोचर से गुरु से युक्त हो तो स्त्री की प्राप्ति होती है।

यत्संख्याकमजादिकामभवनं तद्वत्सरे वा नृणां।
साष्टाब्दे कृतमौंजिकर्मपरतः कल्याणकालो भवेत्॥
लग्नादस्तविलग्ननायकयुतक्षेत्रांशके संभवा।
या सा भर्तृमनःप्रसादकरिणी भर्त्ता तथैव स्त्रियः॥

मेषादि राशियों के मध्य में जितनी संख्या वाली राशि सप्तम स्थान में हो उस राशि की संख्या के तुल्य वर्षों में विवाह होता है अथवा सप्तम भाव में स्थित राशि की संख्या में ८ युक्त करने से जो संख्या हो उस के तुल्य वर्षों में विवाह होता है। अथवा यज्ञोपवीत होने के अनन्तर सप्तम स्थान में स्थित राशि की संख्या के समान वर्षों में विवाह होता है। सप्तमेश और लग्नेश जिस राशि में वा जिस नवांश में स्थित हों तो उस राशि के लग्न में वा चन्द्रमा में जिस स्त्री का जन्म हो वह पति के चित्त को प्रसन्न करने वाली होती है अथवा स्त्री के सप्तमेश लग्नेश जिस राशि में वा जिस नवांश में हों उस राशि के लग्न में वा चन्द्रमा में पति का जन्म हो तो वह स्त्री के मन को प्रसन्न करने वाला होता है।

कामान्वितेक्षकवियच्चरराशिजाता
चन्द्रादतीवसुभगा च पतिप्रिया स्यात्।
स्त्रीजातके च पतिरिष्टकरो वधूनां
दिग्देशता भृगुसुतादबलाधिपस्य॥

चन्द्रमा के सप्तम स्थान में स्थित ग्रह की राशि में अथवा चन्द्रमा से जो सप्तम स्थान है उस को जो ग्रह देखता हो उस की राशि में जो स्त्री उत्पन्न होती है अर्थात् उस राशि के लग्न में वा चन्द्रमा में जिस स्त्री का जन्म हो वह सुन्दर ऐश्वर्य वाली तथा पति की प्यारी होती है। एवं स्त्री के जन्म में जिस राशि में चन्द्रमा हो उस से सप्तम राशि जिस ग्रह से युक्त हो और जिस ग्रह से दृष्ट हो उन के लग्न में वा चन्द्रमा में जिस पुरुष का जन्म हो वह स्त्रियों का इष्ट (प्रिय) होता है। शुक्र से सप्तमेश की दिशा तथा देश स्त्री की दिशा और देश जानना चाहिए।

शुक्राच्चन्द्रात्सप्तमं यद्गृहं स्या-
तत्संख्यातुल्याब्दकै स्तद्युतैर्वा ॥
स्यादुद्वाहो वत्सरे तद्दशान्ते
वंशो रूपं तत्पतेश्चिन्तनीयम् ॥

शुक्र और चन्द्रमा में जो अधिक बली हो उस से जो सप्तम राशि है उस राशि की संख्या के तुल्य वर्षों में विवाह होता है अथवा शुक्र चन्द्रमा की दशा के मध्य में विवाह होता है। सप्तमेश के वंश के समान स्त्री का वंश रूप चिंतन करना चाहिए।

सप्तदशभावस्यैक्यं कृत्वा संख्याऽस्ति या खलु।
तत्संख्याकै र्गतैर्वर्षैर्विवाहो भवति ध्रुवम् ॥

सप्तम और दशम भाव को एकत्र करके जो संख्या हो उतने ही वर्ष व्यतीत होने पर निश्चय से विवाह होता है।

अथवा यत्र वर्षे तु गुरुदृष्टिस्तदोद्वहः।
कुजदृष्टिस्तु यद्वर्षे तत्र कष्टं विनिर्दिशेत् ॥

अथवा जिस वर्ष में गुरु की दृष्टि हो उस वर्ष में विवाह होता है और जिस वर्ष में मंगल की दृष्टि हो उस में कष्ट को कहे।

वित्तास्तारिपभार्गवास्तनुगताः पापान्विताः कामुकः ।
पापव्योमचरान्वितौ तनुरिपुस्थानाधिपौ चेत्तथा ॥
कामस्थे रिपुवित्तलग्नपयुते पापे परस्त्रीरतः ।
पापारातिकलत्रपा नवमगाः कामातुरो जायते ॥

यदि द्वितीयेश, सप्तमेश षष्ठेश, तथा शुक्र ये चारों पापग्रह से युक्त हो कर लग्न में हों तो कामी होता है अथवा लग्नेश और षष्ठेश ये दोनों पापग्रह से युक्त हों तो कामी होता है। यदि 'पापग्रह' षष्ठेश द्वितीयेश और लग्नेश इन से युक्त हो कर सप्तम स्थान में हो तो पराई स्त्री में लीन होता है। एवं पापग्रह, षष्ठेश तथा सप्तमेश ये तीनों नवम में हों तो कामी होता है।

जारः कर्मधनास्तपा दशमगाः पुत्रादिकारकग्रहः ।
दुःस्था धीगुरुकामपाः सुतगृहे पापेक्षिते नात्मजः ॥
जीवज्ञौ यदि वा निशाकरसितौ कामे बहुस्त्रीरतः ॥
शुक्रे मन्मथराशिगे बलवति स्त्रीणां बहूनां पतिः ॥

यदि दशमेश, द्वितीयेश, सप्तमेश ये दशम स्थान में स्थित हों तो [illegible] होता है। यदि पुत्रादि कारकग्रह अर्थात् पुत्र कारक, भाग्यकारक, जाया-[illegible]क ये तीनों और पंचम, नवम, सप्तम, इन तीनों भावों के स्वामी [illegible]स्थान ६।८।१२ में स्थित हो तथा पंचम स्थान पापगृह से दृष्ट हो तो [illegible] पुरुष का पुत्र नहीं होता। यदि गुरु, बुध वा चन्द्रमा शुक्र सप्तम में स्थित [illegible]तो बहुत सी स्त्रियों में लीन होता है अथवा बलवान् शुक्र सप्तम स्थान में [illegible]त हो तो बहुत सी स्त्रियों में लीन होता है अथवा बलवान् शुक्र, सप्तम [illegible]न में हो तो बहुत स्त्रियों का स्वामी होता है।

चन्द्रमा के सप्तम स्थान में स्थित ग्रह की राशि में अथवा चन्द्रमा से जो सप्तम स्थान है उस को जो ग्रह देखता हो उस की राशि में जो स्त्री उत्पन्न होती है अर्थात् उस राशि के लग्न में वा चन्द्रमा में जिस स्त्री का जन्म हो वह सुन्दर ऐश्वर्य वाली तथा पति की प्यारी होती है। एवं स्त्री के जन्म में जिस राशि में चन्द्रमा हो उस से सप्तम राशि जिस ग्रह से युक्त हो और जिस ग्रह से दृष्ट हो उस के लग्न में वा चन्द्रमा में जिस पुरुष का जन्म हो वह स्त्रियों का इष्ट (प्रिय) होता है। शुक्र से सप्तमेश की दिशा तथा देश स्त्री की दिशा और देश जानना चाहिए।

शुक्राच्चन्द्रात्सप्तमं यद्गृहं स्या-
तत्संख्यातुल्याब्दकै स्तद्युतैर्वा ॥
स्यादुद्वाहो वत्सरे तद्दशान्ते
वंशो रूपं तत्पतेश्चिन्तनीयम् ॥

शुक्र और चन्द्रमा में जो अधिक बली हो उस से जो सप्तम राशि है उस राशि की संख्या के तुल्य वर्षों में विवाह होता है अथवा शुक्र चन्द्रमा की दशा के मध्य में विवाह होता है। सप्तमेश के वंश के समान स्त्री का वंश रूप चिंतन करना चाहिए।

सप्तदशभावस्यैक्यं कृत्वा संख्याऽस्ति या खलु।
तत्संख्याकैर्गतैर्वर्षैर्विवाहो भवति ध्रुवम् ॥

सप्तम और दशम भाव को एकत्र करके जो संख्या हो उतने ही वर्ष व्यतीत होने पर निश्चय से विवाह होता है।

अथवा यत्र वर्षे तु गुरुदृष्टिस्तदोद्वहः।
कुजदृष्टिस्तु यद्वर्षे तत्र कष्टं विनिर्दिशेत् ॥

अथवा जिस वर्ष में गुरु की दृष्टि हो उस वर्ष में विवाह होता है और जिस वर्ष में मंगल की दृष्टि हो उस में कष्ट को कहे।

वित्तास्तारिपभार्गवास्तनुगताः पापान्विताः कामुकः ।
पापव्योमचरान्वितौ तनुरिपुस्थानाधिपौ चेत्तथा ॥
कामस्थे रिपुवित्तलग्नपयुते पापे परस्त्रीरतः ।
पापारातिकलत्रपा नवमगाः कामातुरो जायते ॥

यदि द्वितीयेश, सप्तमेश षष्ठेश, तथा शुक्र ये चारों पापग्रह से युक्त हो कर लग्न में हों तो कामी होता है अथवा लग्नेश और षष्ठेश ये दोनों पापग्रह से युक्त हों तो कामी होता है। यदि 'पापग्रह' षष्ठेश द्वितीयेश और लग्नेश इन से युक्त हो कर सप्तम स्थान में हो तो पराई स्त्री में लीन होता है। एवं पापग्रह, षष्ठेश तथा सप्तमेश ये तीनों नवम में हों तो कामी होता है।

जारः कर्मधनास्तपा दशमगाः पुत्रादिकारकग्रहः ।
दुःस्था धीगुरुकामपाः सुतगृहे पापेक्षिते नात्मजः ॥
जीवज्ञौ यदि वा निशाकरसितौ कामे बहुस्त्रीरतः ॥
शुक्रे मन्मथराशिगे बलवति स्त्रीणां बहूनां पतिः ॥

यदि दशमेश, द्वितीयेश, सप्तमेश ये दशम स्थान में स्थित हों तो पुरुष होता है। यदि पुत्रादि कारकग्रह अर्थात् पुत्र कारक, भाग्यकारक, जाया-कारक ये तीनों और पंचम, नवम, सप्तम, इन तीनों भावों के स्वामी दुष्टस्थान ६।८।१२ में स्थित हो तथा पंचम स्थान पापगृह से दृष्ट हो तो उस पुरुष का पुत्र नहीं होता। यदि गुरु, बुध वा चन्द्रमा शुक्र सप्तम में स्थित हों तो बहुत सी स्त्रियों में लीन होता है अथवा बलवान् शुक्र सप्तम स्थान में स्थित हो तो बहुत सी स्त्रियों में लीन होता है अथवा बलवान् शुक्र, सप्तम स्थान में हो तो बहुत स्त्रियों का स्वामी होता है।

शुक्रारौ मदगौ कलत्ररहितो धर्मात्मजस्थौ तथा।
शत्रुस्थानगतौ निशाकरसितौ यद्येकपुत्रो भवेत्॥
लग्नास्तव्ययगेषु पापखचरेष्विन्दौ सिते दुर्बले।
वन्ध्या स्त्री पतिरेव जातमनुजो जायाविहीनोऽथ वा॥

यदि शुक्र मंगल, सप्तम स्थान में वा नवम वा पंचम स्थान में स्थित हों तो स्त्री से रहित होता है। यदि चन्द्रमा शुक्र, षष्ठ स्थान में हों तो एक पुत्र वाला होता है। एवं लग्न, सप्तम और व्ययभाव में पापग्रह स्थित हों तथा चन्द्रमा, शुक्र बलरहित हों तो इस योग में उत्पन्न हुआ मनुष्य वंध्या स्त्री का स्वामी अथवा स्त्री रहित होता है।

वन्ध्यापतिः सितरवीमदनोदयस्थौ
चन्द्रोदये समगृहे ललनाकृतिः स्यात्।
पुंराशिगे पुरुषभावयुतं कलत्रं
स्त्री पुंग्रहेक्षितयुते सति मिश्ररूपम्॥

यदि शुक्र और सूर्य सप्तम तथा लग्न में स्थित हों तो पुरुष वंध्या स्त्री का स्वामी होता है। यदि चन्द्रमा और लग्न सम राशि के हों तो स्त्री की आकृति अर्थात् स्त्री के समान स्वभाव वाली स्त्री होती है अथवा चन्द्र तथा लग्न पुरुषराशि में हों तो पुरुष स्वभाव वाली स्त्री होती है एवं चन्द्रमा और लग्न स्त्री पुरुष ग्रह से दृष्ट तथा युक्त हों तो मिश्र स्वभाव वाली स्त्री होती है।

शुक्रे कलत्रे त्वतिकामुकः स्याद् बुधेऽन्ययोषानिरतो गुरौ तु।
स्वदारसक्तो दिननाथपुत्रे कुदाररम्यः सुपतौ सुदारः॥
कुजे बहुस्त्रीषु रतः कुलघ्नो भानौ कुटुम्बी बहुदारसक्तः।
पापप्रयुक्ते भृगुजे हि यत्र कुत्र स्थिते स्त्रीनिधनं तदानीम्॥

यदि 'शुक्र' सप्तम स्थान में हो तो अतिकामी होता है। बुध सप्तम में हों तो पराई स्त्री में आसक्त एवं गुरु हो तो अपनी स्त्री में लीन और शनि हो तो दुष्ट स्त्री में आसक्त होता है। यदि सप्तमेश शुभग्रह हो तो सुन्दर स्त्री वाला होता है। और मंगल सप्तम में हो तो बहुत सी स्त्रियों में प्रीति तथा कुल को नाश करने वाला होता है। यदि सूर्य सप्तम में हो तो कुटुम्ब वाला और बहुत स्त्रियों में आसक्त होता है। जहां कहीं स्थित हुआ शुक्र पापग्रह से युक्त हो तो मरण हाता है।

सप्तम भाव के प्रकीर्ण योग

यात्रापुत्रकलत्रसौख्यमखिलं संचिन्तयेत्सप्तमा- ।
दुक्तं पुत्रसुखासुखागमफलं सर्वं च यत्तद्वदेत् ॥
जारः कामगते सिते मदनपे साहिध्वजे वा तथा ।
कामे जीवयुतेक्षिते शुभगृहे जातो न जारो भवेत् ॥

यात्रा, पुत्र, स्त्री, इन तीनों का सुख सप्तम भाव से विचारना चाहिये और पुत्र के सुख दुख का तथा आगम का जो पूर्वोक्त फल है उस सब को सप्तम से कहे। यदि शुक्र सप्तम में स्थित हो वा सप्तमेश राहु, केतु से युक्त हो तो पुरुष जार होता है। यदि सप्तम भाव में शुभ ग्रह की राशि स्थित हो और वह गुरु से युक्त वा दृष्ट हो तो इस योग में उत्पन्न हुआ पुरुष जार नहीं होता है।

दुःस्थे कामपतौ तु पापगृहगे पापेक्षिते तद्युते ।
तज्जायाभवनस्य मध्यमं फलं सर्वं शुभं चान्यथा ॥
कामस्थानपतौ सितेन सहिते पापर्क्षगे कामधीः ।
सौम्यर्क्षे शुभखेटवीक्षितयुते जातः सितच्छत्रवान् ॥

यदि सप्तम भाव का स्वामी पापग्रह की राशि में स्थित हो और पापग्रह से युक्त दृष्ट हो कर दुष्ट स्थान ६।८।१२ में हो तो उस के जाया-भाव का मध्यम फल होता है। यदि उक्त प्रकार से विपरीत हो अर्थात् सप्तमेश शुभग्रह की राशि में हो और शुभग्रह से युक्त दृष्ट होकर केन्द्र, त्रिकोण वा उपचय स्थान में हो तो उस के जायाभाव का सब शुभ फल होता है। यदि सप्तमेश पापग्रह की राशि में स्थित होकर शुक्र से युक्त हो तो मनुष्य काम बुद्धि वाला होता है अथवा सप्तमेश शुभग्रह की राशि में स्थित हो कर शुभग्रह से दृष्ट युक्त हो तो इस योग में उत्पन्न पुरुष श्वेत छत्र धारण करने वाला होता है।

शुक्रांशे मदनस्थितेऽवनिसुते कामाधिपे पंचमे।
जायारिष्टमुपैति सप्तमगते भानौ कलत्रार्थवान् ॥
दुःस्थौ कामकुटुम्बपौ सभृगुजौ दुश्चिक्ययातौ तु वा।
तत्संख्याककलत्रहा बलयुतौ वित्तास्तपौ दारवान् ॥

यदि 'मंगल' शुक्र की २।७ राशि के नवांश में स्थित हो कर सप्तम स्थान में हो और सप्तमेश पंचम में हो तो उस की स्त्री अरिष्ट को प्राप्त होती है। सूर्य शुक्र के नवांश में स्थित हो कर सप्तम में हो तो कलत्र (स्त्री) वाला होता है। यदि सप्तमेश द्वितीयेश शुक्र से युक्त हो कर दुष्ट स्थान ६।८।१२ में वा तृतीय स्थान में स्थित हो तो उनकी संख्या के समान स्त्रियों का नाश करने वाला होता है। अथवा द्वितीयेश सप्तमेश बलवान् हों तो स्त्री वाला होता है।

लग्नेशस्थ नवांशनाथगृहगे जीवे समेति स्त्रियं।
नीचारातिनवांशके सति मृतस्त्रीको विदारोऽथवा ॥
लग्ने कामपतिस्फुटादपहृते राशित्रिकोणे गुरौ।
लग्ने सप्तमराशिपस्फुटहृते जीवे मृतिं योषितः ॥

लग्नेश के नवांश के स्वामी की राशि में गुरु हो तो स्त्री को प्राप्त होता है और गुरु नीच नवांश में तथा शत्रु के नवांश में हो तो स्त्री की मृत्यु अथवा स्त्री रहित होता है। सप्तमेश के राश्यादि स्पष्ट में स्पष्ट लग्न को हीन करने से जो शेष राश्यादि हो उससे जो पंचम वा नवम राशि है उसमें जब गुरु गोचर से आयें तब स्त्री मृत्यु को प्राप्त होती है अथवा लग्न के राश्यादि स्पष्ट में सप्तमेश के राश्यादि स्पष्ट को हीन करने से शेष जो राश्यादि हों उस में जब गुरु गोचर में आये तब स्त्री मृत्यु को प्राप्त होती है।

लग्नात्कामपकारकौ शुभकरौ वीर्याधिके सप्तमे।
पत्या साकमुपैति मृत्युमबला पापैरयुक्तेक्षिते॥
कामाच्छिद्रदशापहारसमये शुक्राष्टवर्गोदिते॥
राशौ भानुसुते कलत्रमरणं जीवे तदंशान्विते॥

लग्न से जो सप्तम स्थान है उस का स्वामी और जायाकारक ग्रह ये दोनों शुभफल कारक हों और बलयुक्त सप्तम स्थान में स्थित हों तथा पापग्रहों से युक्त दृष्ट न हों तो उस पुरुष की स्त्री उस के साथ मृत्यु को प्राप्त होती है। और सप्तम स्थान से जो अष्टम स्थान है उस के स्वामी की दशा के परिपाक काल में अर्थात् द्वितीयेश की दशा के परिपाक समय में जब शुक्राष्टक वर्ग की सब से अल्प रेखावली राशि में गोचर से शनि आये और उस अल्प रेखा वाली राशि के नवांश में जब गोचर से गुरु आये तब स्त्री की मृत्यु होती है।

भौमांशे वा भौमराशौ विलग्ना-
त्कामस्थाने जन्मभे वा वधूनाम्॥
जाया दासी नीचमूढग्रहांशे
दुष्टा वा स्याद्यौवने भर्तृहीना॥

यदि लग्न से सप्तम स्थान में मंगल की राशि वा मंगल का नवांश स्थित हो अथवा स्त्री की जन्म राशि सप्तम स्थान में स्थित हो तो उस की स्त्री दासी होती हैं। अथवा नीच राशि गत ग्रह का नवांश वा शत्रु राशिगत ग्रह का नवांश सप्तम स्थान में हो तो उस की स्त्री दुष्ट होती है वा युवावस्था में पति से रहित होती है।

शुभांशराशौ यदि सद्गुणाढ्या
शुभेक्षिते चारुतरं कलत्रम्।
चन्द्रांशके दुर्बलचन्द्रराशौ
जाया पतिघ्नी सबले तु साध्वी ॥

यदि सप्तम स्थान में शुभ ग्रहका नवांश वा शुभग्रह की राशि स्थित हो तो उसकी स्त्री अच्छे गुणों से युक्त होती है। अथवा सप्तम स्थान में स्थित शुभग्रह वा नवांश शुभग्रह से दृष्ट हो तो उसकी स्त्री अत्यन्त सुन्दर होती है। यदि निर्बल चन्द्रमा की राशि वा निर्बल चन्द्रमा का नवांश सप्तम में हो तो उसकी स्त्री पति को मारने वाली होती है, और बलवान चन्द्रमा की राशि वा नवांश सप्तम हो तो स्त्री पतिव्रता होती है।

(उदाहरण)

सप्तमेश चन्द्रमा के राश्यादि स्पष्ट ५।३।५६।१५ में लग्न ६।१७।३६।१ को हीन किया तो शेष ७।१६।१७।१४ रहे। यहां शेष राशि वृश्चिक है अतः इससे पञ्चम राशि मीन और नवम राशि कर्क इन राशियों में जब गोचर में गुरु आये तब स्त्री की मृत्यु होगी।

अथवा स्पष्टलग्न ६।१७।३६।१ में सप्तमेश चन्द्रमा के स्पष्ट राश्यादि को शोधन किया तो ४।१३।४२।४६ शेष रहे यहाँ शेष सिंह राशि है अतः जब गुरु गोचर में सिंह राशि में आये तब स्त्री की मृत्यु होती है परन्तु किसी

टीकाकार का मत है कि शेषराशि से पञ्चम वा नवम राशि में जब गोचर से गुरु आये तब स्त्री की मृत्यु होती है अतः यहाँ शेष राशि सिंह है उससे पञ्चम धनुराशि और नवम मेष राशि है इसलिये जब गुरु धनुराशि में वा मेष राशि में गोचर से आयेगा तब स्त्री की मृत्यु होगी।

कुजे तु म्रियते मन्दे दुर्भगा राहुसंयुते।
(१) परदाररतिः स्वीया निषेकाभावतोऽसुतः॥

यदि धूमादि से युक्त मंगल सप्तम हो तो उसकी स्त्री मर जाती है और धूमादि से युक्त शनि सप्तम हो तो स्त्री दुर्भगा होती है। एवं धूमादि से युक्त राहु सप्तम् में हो तो पर स्त्री में प्रीति होती है और अपनी स्त्री के गर्भाभाव के कारण पुत्रहीन होता है।

धूमे विवाहहीनः स्यान्म्रियते कार्मुके सति।
परिवेषे तु दुःशीला केतौ वन्ध्या सती भवेत्॥

यदि धूम सप्तम स्थान में हो तो विवाह रहित होता है और धनु हो तो स्त्री मर जाती है एवं परिवेष हो तो दुष्ट स्वभाव वाली और केतु हो तो वन्ध्या तथा सती होती है।

पाते विदारः पापे तु गर्भस्त्रावेण संयुता।
सुशीला स्त्री प्रसूता च पूर्यमाणे सुधाकरे॥

यदि पात सप्तस्थान में हो तो स्त्री रहित होता है और पापग्रह सप्तम स्थान में हो तो उसकी स्त्री गर्भस्त्राव से युक्त होती है। यदि पूर्ण चन्द्रमा सप्तम में हो उसकी स्त्री सुशीला और कन्या सन्तान वाली होती है।

बुधे सपुत्रा वागीशे गुणयुक्ता सुपुत्रिणी।
शुक्रे सौभाग्यसंयुक्ता श्रीमती च बलान्विते॥

---

(१) 'पाठान्तरम्' परदारोऽरतिः स्वीयां निषेकाभावकोऽसुत इति।

यदि बलवान बुध सप्तम में हो स्त्री-पुत्रयुक्त, गुरु हो तो गुणों से युक्त और सुन्दर पुत्रों वाली, शुक्र हो तो सौभाग्य से युक्त तथा श्रीमती होती है।

सुपक्वजातं प्रथमं कलत्रं लग्नेश्वरो दारपसंयुतश्चेत् ।
दिनेशकान्त्याभिहतस्तदानीं सुरूपहीनां सुतरां वदन्ति ॥

यदि लग्नेश सप्तमेश से युक्त हो तो प्रथम स्त्री गुणवती और रूपवती होती है और सप्तमेश सूर्य कान्ति से हत हो अर्थात् अस्तगत हो तो प्रथम स्त्री को रूपरहित कहते हैं।

अर्कांशे कुलटा निजोच्चगृहगे साध्वी शुभालोकिते ।
लग्ने शीतकरेऽथ वा मदनभे नीचारिमूढान्विते ॥
पापव्यालविहङ्गपाशनिगडद्रेष्काण भागान्विते ।
सन्ध्यंशे विगतव्रता च विधवा जातस्य जाया भवेत् ॥

यदि सप्तमभाव में सूर्य का नवांश हो तो उस पुरुष की स्त्री व्यभिचारिणी होती है। यदि शुभग्रहों से दृष्ट चन्द्रमा अपनी राशि में वा अपनी उच्चराशि में स्थित होकर लग्न में वा सप्तम में स्थित हो तो उसकी स्त्री पतिव्रता होती है। अथवा चन्द्रमा लग्न वा सप्तम में स्थित होकर अपनी नीच राशि में वा शत्रु राशि में वा अस्तगत अर्थात् क्षीण हो अथवा लग्न वा सप्तम स्थान में स्थित चन्द्रमा पाप ग्रह के सर्प, पक्षी, पाश, निगड, द्रेष्काण में हो वा सन्ध्यंश में हो तो इस योग में उत्पन्न हुए पुरुष की स्त्री व्रत रहित और विधवा होती है।

कामस्थे तनुपे शुभग्रहयुते सद्वंशजामिच्छति ।
क्रूरर्क्षे मदगे विलग्नरमणे दुर्वंशजाताङ्गना ॥
वर्णं रूपगुणाकृति च सकलं यत्तदगृहोक्तं वदेद् ।
दुर्व्यापारकरग्रहाकृतिनरप्रीतिं प्रयान्त्यङ्गनाः ॥

यदि 'लग्नेश' शुभग्रह से युक्त होकर सप्तमस्थान में स्थित हो तो उत्तम वंश में उत्पन्न हुई स्त्री को करता है यदि लग्नेश पापग्रह की राशि में आश्रित होकर सप्तम स्थान में स्थित हो तो दुष्ट वंश में उत्पन्न स्त्री होती है। और सप्तम भाव में स्थित राशि के पूर्वोक्त सब वर्ण रूप गुण आकृति को कहे। दुष्ट व्यापार कारक ग्रह की आकृति के समान जिस पुरुष की आकृति है उस में स्त्रियां प्रीति को प्राप्त होती हैं।

पापेऽप्रकाशसंयुक्ते कलत्रे दुष्टचारिणी ।
रवौ वंध्या तु शीतांशौ क्षीणे तु व्यभिचारिणी ।

यदि सप्तम स्थान में स्थित हुए पापग्रह धूमादि अप्रकाश ग्रहों से युक्त हों तो उसकी स्त्री दुष्टाचारवाली होती है। यदि सप्तम स्थान में स्थित हुआ सूर्य धूमादि से युक्त हो तो स्त्री बन्ध्या होती है और क्षीण चन्द्रमा सप्तम में स्थित होकर धूमादि से युक्त हो तो व्यभिचारिणी स्त्री होती है।

(१) शुक्रेन्द्वीज्ये द्यूनगे शुक्रदृष्टे
द्वाभ्यां चैकेन वा पूरुषस्य ।
वैषां गेहे चोपगे वीक्षिते वा
भावैर्दुष्टाः सन्ति नार्यः सगर्वाः ।

यदि शुक्र चन्द्रमा गुरु सप्तम स्थान में हो और शुक्र से दृष्ट हों अथवा उनमें से दो हों वा एक ही हो अथवा सप्तम में शुक्र चन्द्र गुरु की राशि हो अथवा सप्तम भाव शुक्र चन्द्र गुरु से दृष्ट हो तो उस पुरुष की स्त्री स्वभाव से दुष्ट और गर्व से युक्त होती हैं।

---

(१) पाठान्तरम्— नीचे सितेऽपि विधुपूज्यसितर्क्षकेऽत्र शुक्रारदृष्टिसहिते वनिता सगर्वेति ।

(१) द्यूनस्थितेऽर्के म्रियते पुरन्ध्री
प्रसूतिदोषेण तथा ज्वरेण ।।
वा सन्निपातेन कृशानुना वा
यद्वाऽतिसारेण विषेण वापि ।।

यदि सूर्य सप्तम स्थान में हों तो प्रसूतिदोष से तथा ज्वर से वा सन्निपात से वा अग्नि से वा अतिसार से वा विष से उस पुरुष की स्त्री की मृत्यु होती है ।

तथा विधौ भूमिसुतेऽस्तसंस्थे व्रणेन यद्वाऽप्युदराऽऽमयेन ।
मन्देऽस्तसंस्थे कृमिणा जलेन यद्वा गृहेशी म्रियतेऽब्जवक्त्रा ।।

यदि चन्द्रमा और मंगल सप्तम में हों तो व्रण से वा उदर रोग से स्त्री की मृत्यु होती है और शनि सप्तम हो तो कृमि रोग से वा जल से कमल के समान मुख वाली स्त्री की मृत्यु होती है ।

राहौ द्यूनगृहस्थिते तु पशुभिर्वा शस्त्रघातैस्तथा ।
डाकिन्या निजकर्मणा तु युवतेः केतौ सचन्द्रेऽप्यगौ ।।
नीरोत्थैश्च विकारकैश्च नियतं वा नीरमध्ये मृतिः ।
प्लीहाद्यैः शिशिरामयैः क्षययुतैश्चन्द्रे सपापे भवेत् ।।

यदि राहु सप्तम स्थान में हो तो पशुओं से वा शस्त्रों के घात से तथा डाकिनी (यक्षिणी) आदि के दोष से वा अपने ही कर्म के कारण से स्त्री की मृत्यु होती है । यदि चन्द्रमा से युक्त केतु वा राहु सप्तम में हो तो जल से उत्पन्न विकारों से वा जल के मध्य में निश्चय से मृत्यु होती है । अथवा

---

(१) पाठान्तरम्— द्यूने यमेऽसृजि तदीक्षणतश्च वातार्त्ता चञ्चला सरुधिरा कटिचिह्नयुक्ता । साब्जे कुजेमृतिमुपैत्युदरामयेनाक्यग्निवोर्जलाक्रमिरुजा पशुडाकिनीभिः इति ।

पापग्रह से युक्त चन्द्रमा सप्तम में हो तो प्लीहादि से वा क्षय युक्त बात रोग से स्त्री की मृत्यु होती है ।

खेटान्रध्रस्थानसंस्थान् समीक्ष्य
तद्वद्यूनस्थानसंस्थान् स्वबुद्ध्या ।
वाच्यं यत्नैव तत्तत्फलं हि
होराविद्भिः पण्डितैः शास्त्रदृष्टया ॥

अष्टमस्थ ग्रहों को देख कर और उसी प्रकार सप्तमस्थ ग्रहों को देख कर होराशास्त्र के जानने वाले पण्डितों ने अपनी बुद्धि से तथा शास्त्र-दृष्टि से यत्न कर के उन के फल को कहना चाहिये ।

द्यूनस्थैश्चेत् क्रूरखेटैस्तदा स्यात्
स्वल्पसौख्यं चाङ्गनानां बहूनाम् ।
सौम्यैः खेटैस्तत्रगैर्मानवस्य
जाया चैका सौख्ययुक्ता प्रवाच्या ॥

सप्तम स्थान में स्थित पापग्रहों से बहुत सी स्त्रियों का स्वल्प सौख्य होता है और सप्तमस्थ शुभग्रहों से मनुष्य की सुख युक्त एक स्त्री को कहना चाहिए ।

धर्मस्वामी धर्मगो धर्मसंस्थौ
सूर्यक्ष्माजौ चेत्तदाग्निप्रवेशम् ।
कुर्यात्पत्नी लग्नयामित्रनाथे
मित्रे स्यातां नान्यथा सद्भिरुक्तम् ॥

यदि धर्मेश धर्म में स्थित हो और सूर्य मंगल नवम स्थान में हों तथा लग्नेश और सप्तमेश की परस्पर मित्रता हो तो उस पुरुष की स्त्री अग्नि प्रवेश करती है अर्थात् अग्नि में भस्म हो जाती है ।

दाराधिग्रहेण युक्तो दृष्टोऽपि वा पूर्णबलः प्रसन्नः ।
सौभाग्ययुक्तो गुणवान् प्रभुश्च दाता विभोग्यो बहुधान्य उक्तः ॥

यदि सप्तमेश शुभग्रह से युक्त वा दृष्ट हो और पूर्ण बली हो, हर्षितावस्था में हो तो सौभाग्य से युक्त गुणी समर्थ दाता विशेष भाग्य वाला तथा बहुधान्य वाला कहा जाता है ।

कुभार्या सप्तमे पापाः सौम्याः सर्वजनप्रियाम् ।
गुरुशुक्रौ शचीतुल्यां रूपवालण्यशालिनीम् ॥

यदि पापग्रह सप्तम में हों तो दुष्ट स्त्री को करते हैं और शुभग्रह सप्तम में हों तो सर्वजन प्रिय स्त्री को करते हैं तथा गुरु शुक्र सप्तम में हों तो इन्द्राणी के समान रूप लावण्य शालिनी स्त्री को करते हैं ।

सेन्द्वार्किराहुं मदनालयं च जायापतिः पश्यति सौख्यमल्पम् ।
तस्यालये सम्भवतीह नारी श्यामा च गौरी बहुपुत्रिणी च ॥

यदि सप्तम भाव में स्थित हुए चन्द्र, शनि, राहु को सप्तमेश देखे तो अल्प सौख्य होता है और उस पुरुष के घर में श्याम और गौरवपूर्ण वाली तथा बहुत पुत्र वाली स्त्री होती है ।

अपनी स्त्री के द्वारा पुरुष की मृत्यु के योग

शनिकुजौ मदगौ मदनाधिपो निधनगोऽपि रिपुव्ययगोऽथ वा ।
मरणमेति तदा स्वकलत्रत स्त्वथ रविर्विषदा वनिता भवेत् ॥

यदि शनि भौम सप्तम स्थान में स्थित हों तथा सप्तमेश अष्टम वा षष्ठ वा व्यय स्थान में स्थित हो तो अपनी स्त्री से मरण को प्राप्त होता है। एवं सूर्य सप्तम में हो और सप्तमेश अष्टम षष्ठ वा द्वादश स्थान में स्थित हो तो स्त्री विष देने वाली होती है ।

केन्द्रस्था वा त्रिकोणे यदि खलु गृहिणीकारखयानभोगाः ।
कामर्थेशौ निजर्क्षे परिणयनविधिः स्यात्तदानीं नुरेकः ॥
जायाधीशः कुटुम्बाधिपतिरपि युतश्चेत् त्रिके गर्हिताख्यै-
र्यावद्भिः शुक्रयुक्तो नियतमिहभवेत्तावतीनां विरामः ॥

यदि स्त्रीकारकग्रह केन्द्र वा त्रिकोण में स्थित हों तथा सप्तमेश और द्वितीयेश अपनी अपनी राशि में हों तो मनुष्य का एक विवाह होता है। और शुक्र से युक्त सप्तमेश कुटुम्बेश जितने पापग्रहों से युक्त हो कर त्रिकस्थान ६।८।१२ में स्थित हो उतनी ही स्त्रियों का निश्चय से वियोग होता है।

लग्नस्मरव्ययगता अशुभाः सुतेऽब्जे
क्षीणेऽथवा खलभगे न च तद्विवाहः ।
षष्ठे व्यये वपुषि वा ज्ञरवी तदैका
कोणे द्यूने च विकलैव यदा सितारौ ॥

यदि 'पापग्रह' लग्न, सप्तम तथा व्यय स्थान में स्थित हो और क्षीण चन्द्रमा अथवा पापराशिगत चन्द्रमा पंचम स्थान में स्थित हो तो उस पुरुष का विवाह नहीं होता। यदि बुध, सूर्य व्यय, वा लग्न में स्थित हो तो एक स्त्री होती है। एवं शुक्र मंगल, नवम पंचम में वा सप्तम में स्थित हों तो विकल स्त्री होती है।

*चन्द्रात्तनोरुतखला मदने न सन्तो
मन्दाब्जयोर्मदनभेऽत्रपुनर्भवेशः ।
आरार्क्यमहीक्षितयुते मदनेऽष्ट मेवा
श्वाह्यादिकैश्च कुरुजा मृतिमेति नारी ॥

यदि चन्द्रमा से वा लग्न से पापग्रह सप्तम में स्थित हो और शुभ

*अस्य श्लोकस्योत्तरार्द्धं सङ्केतनिधेः सप्तमभावे चिन्त्यमिति ।

ग्रह स्थित न हों तथा शनि वा चन्द्रमा सप्तम में हों तो वह पुरुष पुनर्विवाहित स्त्री का पति होता है। यदि सप्तम वा अष्टम स्थान मंगल, शनि, राहु से दृष्ट वा युक्त हों तो कुत्ता तथा सर्पादि के काटने से वा उपदेशादि दुष्ट रोग से स्त्री मृत्यु को प्राप्त होती है।

सतीं सुशीलां कुलजां विधत्ते
नानाविधां स्त्रीं स्फुटरश्मिजालः।
पापः स्वभोच्चे स्मरगोऽस्तनीचः करोति
भार्यां चपलां विशीलाम् ॥

यदि प्रकट रश्मि समूह वाला पापग्रह अपनी राशि में उच्च राशि में स्थित होकर सप्तम में हो तो अनेक प्रकार से स्त्री को पतिव्रता तथा सुशील और कुलीन करता है। यदि पापग्रह अस्तगत होकर वा नीच राशि में स्थित होकर सप्तम में हो स्त्री को चपल और दुःशील करता है।

सप्तमभावस्थ सूर्यादि ग्रहों के फल

युवतिभवनसंस्थे भास्करे विलासे
न भवति सुखभागी चंचलः पापशीलः।
उदरसमशरीरो नातिदीर्घो न ह्रस्वो
कपिलनयनरूपः पिङ्गकेशः कुमूर्तिः ॥

यदि सूर्य सप्तम स्थान में स्थित हो तो स्त्री से विलास करने वाला और सुखभागी नहीं होता है एवम् चंचल तथा पापी होता है और उदर के समान शरीर वाला न अति बड़ा और न अति छोटा होता है। एवं कपिल-वर्ण नेत्र और रूप वाला, पिंगलकेश तथा कुमूर्ति होता है।

प्रथमोढां वधूं कुर्याद्दुर्भगां सप्तमो रविः
पापर्क्षे नीचगो हन्यात्पापदृष्टयुतोऽपि वा ॥

यदि सूर्य सप्तम स्थान में हो तो प्रथम विवाहित स्त्री को दुर्भगा करता है। यदि सप्तम स्थान में स्थित हुआ सूर्य पापग्रह की राशि में हो वा नीच राशि में हो वा पापदृष्ट युक्त हो तो प्रथम विवाहित स्त्री को मारता है।

कलत्रगस्तीक्षणकर: प्रसूतौ कुरूपदेहं कुकलत्रभाजम् ।
कफानिलाभ्यां परिपीडिताङ्गं कामार्त्तदेहं गतसौहृदं च ॥

यदि जन्म समय में सूर्य सप्तम स्थान में स्थित हो तो कुत्सित रूप शरीर तथा दुष्ट स्त्री वाला, कफवात से पीड़ित शरीर वाला, काम से दुःखित देह तथा मित्रत्व रहित करता हैं।

स्त्रियां विमुक्तो हतकार्यकीर्ति-
भंयामयाभ्यां सहितः कुशीलः ।
नृपप्रकोपार्तिकृशो मनुष्यः
सीमन्तिनी सद्मनि पद्मिनीशे ॥

यदि सूर्य सप्तम में हो तो मनुष्य स्त्री से रहित नष्टकार्यकीर्तिवाला, भय और रोग से युक्त, कुशील और राजा के क्रोध से जो दुःख हो उस से कृश शरीरवाला होता है।

विमलवपुषि चन्द्रे सप्तमस्थे मनुष्यो
रुचिरयुवतिनाथः कांचानाढ्यः सुदेही ।
शशिनि कृशशरीरे पापभे पापदृष्टे
न भवति सुखभागी रोगिपत्नीपतिः स्यात् ॥

यदि परिपूर्ण निर्मल शरीर चन्द्रमा सप्तम स्थान में स्थित हो तो मनुष्य सुन्दर स्त्री का स्वामी सुवर्ण से युक्त तथा सुन्दर शरीर वाला होता है। यदि क्षीण चन्द्रमा सप्तम स्थान में स्थित होकर पापग्रह से दृष्ट हो तो सुख भागी नहीं होता और रोगिणी स्त्री का स्वामी होता है।

कृशाङ्गीं विकलां कुर्यात्क्षीणश्चेद्विधुरस्तगः।
पूर्णः शुभैर्युतो दृष्टो कान्तकान्ताशतप्रदः ॥

यदि क्षीण चन्द्रमा सप्तम स्थान में स्थित हो तो कृशशरीर वाली तथा विकल स्त्री को करता है। एवं पूर्ण चन्द्रमा शुभ ग्रहों से युक्त दृष्ट हो कर सप्तम में हो तो सौ सुन्दर स्त्रियों को देता है।

कलत्रगस्सञ्जनयेच्छशाङ्को धर्मध्वजं भूरिदयासमेतम् ।
प्रसन्नमूर्तिं विभवान्वितं च प्रख्यातकीर्तिं सुधिया समेतम् ॥

यदि चन्द्रमा सप्तम में हो तो धर्मात्मा, अधिक दया से युक्त, प्रसन्न शरीर, ऐश्वर्य से युक्त विख्यात कीर्ति सुन्दर बुद्धि से युक्त मनुष्य को उत्पन्न करता है।

महाभिमानी मदनातुरः स्यान्नरो भवेत्क्षीणकलेवरश्च ।
धनेन हीनो विनयेन चन्द्रे चंद्राननास्थानविराजमाने ॥

यदि चन्द्रमा सप्तम में हो तो मनुष्य बड़ा अभिमानी, काम से व्याकुल, क्षीण शरीर, धन से तथा विनय से हीन होता है।

मुनिगृहगत भौमे नीचसंस्थेऽरिगेहे
युवतिमरणदुःखं जायते मानवानाम् ।
मकरगृहनिजस्थे मान्यपत्नीं च धत्ते
चपलमतिविशालां दुष्टचित्तां विरूपाम् ॥

यदि भौम अपनी नीच राशि में वा शत्रु राशि में स्थित हो कर सप्तम स्थान में स्थित हो तो मनुष्यों को स्त्री के मरने का दुःख और मकर वा अपनी राशि में स्थित हुआ मंगल सप्तम स्थान में हो तो चपल बुद्धि से विशाल, दुष्टचित्त तथा रूपरहित और सत्कृतस्त्री को करता है।

द्वितीयामबलां हन्यान्नीचस्थः शत्रुगेहगः ।
स्वर्क्षे तुङ्गे शुभैर्दृष्टे कुजो दत्ते शुभां स्त्रियम् ॥

यदि भौम नीच राशि में वा शत्रु राशि में स्थित होकर सप्तम में हो तो द्वितीय स्त्री को मारता है। यदि मंगल स्वराशि में वा उच्चराशि में वा शुभग्रहों से दृष्ट होकर सप्तम में हो तो सुन्दर स्त्री को देता है।

कलत्रसंस्थः क्षितिजः प्रसूते विदेशभाजं कुकलत्रयुक्तं।
विवादशीलं बहुशत्रुपक्षं नीचानुरक्तं प्रियसाहसं च॥

यदि भौम सप्तम में हो तो विदेश वाला, दुष्ट स्त्री से युक्त, विवादशील अधिक शत्रु पक्षवाला, नीच जनों में अनुरक्त, साहस प्रिय मनुष्य को उत्पन्न करता है।

नानानर्थव्यर्थचित्तोपसर्गैं वैरिव्रतैर्मानवं हीनदेहम्।
दारापत्याऽनंतदुःखप्रतप्तं दारागारेऽङ्गारकोऽयं करोति॥

यदि भौम सप्तम स्थान में हो तो अनेक प्रकार के अनर्थ व्यर्थ चित्त के उपसर्गों से तथा शत्रु समूह से मनुष्य को क्षीण शरीर करता है। एवं स्त्री और सन्तान के अनन्त दुःख से सन्तृप्त करता है।

तुरगभावगते हरिणाङ्कजे
भवति चंचलबुद्धिनिरीक्षितः।
विपुलवंशभवप्रमदापतिः
स च भवेच्छुभगे शशिवंशजे॥

यदि बुध सप्तम स्थान में स्थित हो तो पुरुष चंचल बुद्धि से देखने वाला हो। यदि सप्तमभाव में स्थित हुआ बुध शुभ ग्रह की राशि हो तो वह उत्तम वंश में उत्पन्न हुई स्त्री का पति होता है।

जायास्थाने यदा सौम्यः सौम्यैर्वा यदि वीक्षितः।
जायेशो वा स लग्नेशस्तदा जायाशतं मतम्॥

यदि बुध सप्तम स्थान में स्थित होकर शुभ ग्रहों से दृष्ट हो अथवा वह बुध सप्तमेश हो वा लग्नेश हो तो सौ स्त्री जाननी चाहिएँ।

कलत्रगः सोमसुतः सुसत्यं नरं प्रसूते बहुभोगभाजम्।
पतिव्रताकान्तमभीष्टहीनं परोपकारं प्रणतं सदैव॥

यदि बुध सप्तम में हो तो सुन्दर सत्यवान् बहुभोग वाला पतिव्रता स्त्री का पति, अभिलषित से रहित दूसरों का उपकार करने वाला और नित्य ही नम्र रहने वाले पुरुष को उत्पन्न करता है।

चारुशीलविभवैरलंकृतः सत्यवाक् सुनिरतो नरो भवेत्।
कामिनीकनकसूनुसंयुक्तः कामिनीभवनगामिनीन्दुजे॥

यदि बुध सप्तम स्थान में हो तो मनुष्य सुन्दर तथा ऐश्वर्य से अलंकृत हो एवं सत्यवादी, स्त्री, सुवर्ण तथा पुत्र से युक्त होता है।

युवतिमन्दिरगे सुरयाजके नयति भूपतितुल्यसुखं जनः।
अमृतिराशिसमानवचाः सुधीर्भवति चारुवपुः प्रियदर्शनः॥

यदि गुरु सप्तम स्थान में हो तो पुरुष राजा के समान सुख को प्राप्त होता है और अमृत राशि के समान मीठे बचन वाला, पण्डित, सुन्दर शरीर तथा प्रियदर्शन होता है।

सुरूपदारं सुमतिं सुशीलं कामाश्रितो देवगुरु प्रसूते।
प्रख्यातवंशं बृजनेन हीनं सत्याश्रयं देवगुरुप्रभक्तम्॥

यदि गुरु सप्तम स्थान में हो तो सुन्दर रूपवती स्त्री वाला, सुशील, प्रसिद्ध वंश वाला, पापरहित, सत्याश्रय, देवता तथा गुरुओं के भक्त मनुष्य को उत्पन्न करता है।

शास्त्राभ्यासे सक्तचित्तो विनीतः
कान्तापित्रात्यन्तसज्जातसौख्यः।
मंत्री मर्त्यः कार्यकर्ता प्रसूतौ
जायाभावे देवपूज्यो यदि स्यात्॥

यदि गुरु सप्तम में हो तो उस पुरुष का चित्त शास्त्र के अभ्यास में रहे और नम्र हो तथा श्वसुर से अत्यन्त सुख की प्राप्ति हो एवं मन्त्री और कार्यकर्त्ता होता है ।

गौरी स्वरूपां स्फुटपङ्कजाक्षीं स्त्रियं शुभर्क्षे शुभदृष्टयुक्तः ।
चिरायुषं भाग्ययुतं नरं च कुर्याद्गुरुर्दर्पकवासवासी ॥

यदि गुरु सप्तम में हो तो उस पुरुष की स्त्री को गौरवर्ण वाली तथा प्रफुल्लित कमल के समान नेत्र वाली करता है । यदि गुरु सप्तम स्थान में स्थित होकर शुभग्रह की राशि में वा शुभग्रह से दृष्ट युक्त हो तो पुरुष को दीर्घायु वाला तथा ऐश्वर्य से युक्त करता है ।

युवति मन्दिरगे भृगुजे नरो बहुसुतेन धनेन समन्वितः ।
विमलवंशभवप्रमदापतिर्भवति चारुवपुर्मुदितः सुखी ॥

यदि 'शुक्र' सप्तम में हो तो मनुष्य बहुत पुत्रों से तथा धन से युक्त होता है और उत्तम वंश में उत्पन्न हुई स्त्री का पति, सुन्दर शरीर, प्रसन्न चित्त तथा सुखी होता है ।

कामाश्रितः संजनयेत्प्रसिद्धं शुक्र सुमूर्त्तिं सुकलत्रभाजम् ।
सत्याधिकं भूरिदयासमेतं प्रशंसितं साधुजनैः सदैव ॥

यदि शुक्र सप्तम स्थान में हो तो विख्यात, सुन्दर शरीर तथा सुन्दर स्त्री वाला, सत्यवादी, अधिक दया से युक्त और नित्य ही साधुओं से प्रशंसित मनुष्य को उत्पन्न करता है ।

जायास्थो भार्गवः कुर्याद्बहुरत्नसुताबलाः ।
नरं सदा सुशीलं च सुन्दरं कुलभूषणम् ॥

यदि शुक्र सप्तम स्थानमें स्थित हो तो बहुत से रत्न, पुत्र, स्त्रियों को करता है और पुरुष को नित्य सुशील, सुन्दर, और कुल का भूषण करता है ।

वहुकलाकुशलो जलकेलिकृ-
द्रतिविलासविधानविचक्षणः ।
अधिकृतां तु नटीं बहुमन्यते
सुनयना भवने भृगुनन्दने ।।

यदि शुक्र सप्तम स्थान में हो तो बहुत सी कलाओं में निपुण, जल-विहार करने वाला, रतिविलास के विधान में चतुर, नटी में अतिशय सुहृदता करने वाला होता है ।

विश्रामभूतां विनिहन्ति जायां
सूर्यात्मजः सप्तमगश्च रोगान् ।
धत्ते पुनर्दम्भवराङ्गहीनं
मित्रस्य वंशेन हृतासुहृच्च ।।

यदि शनि सप्तम में हो तो विश्रामभूत स्त्री को मारता है और रोग को करता है तथा पुरुष को कपटी एवं अंगहीन करता है और मित्र के वंश से हरे हुए शत्रु वाला होता है ।

कलत्रगः सूर्यसुतो विधत्ते कुदाररक्तं सुधिया समेतम् ।
पापानुरक्तं विनयेन हीनं सुसंगतिं शास्त्रविवर्जितं च ।।

यदि शनि सप्तम में हो तो मनुष्य को दुष्ट स्त्री में अनुरक्त, पण्डित से युक्त, पाप में अनुरक्त, नम्रता से रहित, सत्संगति वाला और शास्त्र रहित करता है ।

सर्वा स्मरथो विनिहन्ति नारीं
पापर्क्षगामी खलु मन्दगामी ।
पुनर्भवा वाप्यथवारिरूपा
शुभेक्षित स्तुङ्गसुहृद्गृहस्थः ।।

यदि शनि पापग्रह की राशि में स्थित हो कर सप्तम में हो तो सब स्त्रियों को मारता है। यदि सप्तम स्थान में स्थित शनि अपनी उच्च राशि में वा मित्र राशि में स्थित हो वा शुभग्रह से दृष्ट हो तो उस पुरुष की पुनर्विवाहित अथवा शत्रु रूप स्त्री होती है।

आमयेन बलहीनतां गतो हीनवृत्तिजनचित्तसंस्थितः।
कामिनीभवनधान्यदुःखितः कामिनीभवनगे शनौ नरः॥

यदि शनि सप्तम स्थान में स्थित हो तो वह पुरुष रोग से हीन, बल वाला तथा दीनवृत्ति से मनुष्यों के चित्त में स्थित करने वाला, स्त्रीगृह और धान्य से दुःखित होता है।

जायास्थराहुर्धनहानिजायां ददाति
नानाविविधाश्चभोगान्।
पापानुरक्तां कुटिलां कुशीलां
ददाति शेषैर्बहुभिर्युतश्च॥

यदि राहु सप्तम में स्थित हो तो धन व्यय करने वाली स्त्री को देता है और अनेक विविध भोगों को देता है और राहु शेष पापग्रहों से युक्त हो तो पापिनी कुटिल तथा दुःशील स्त्री को देता है।

जायाविरोधं खलु प्राणनाशं प्रचण्डरूपामथ कोपयुक्ताम्।
विवादशीलामथ रोगयुक्तां प्राप्नोति जन्तुर्मदगस्तमश्चेत्॥

यदि राहु सप्तम में हो तो जाया से विरोध, प्राणों का नाश तथा मनुष्य तीव्र रूपवाली, क्रोध से युक्त, विवादशील और रोग युक्त स्त्री को प्राप्त करता है।

पापैर्दृष्टो युतो वापि रविचन्द्रा विलोकितः।
बालां निहन्ति स्वर्भानुरन्यथाऽरिष्टदः स्मरे।

यदि राहु सप्तम स्थान में स्थित हो कर पापग्रहों से दृष्ट वा युक्त हो अथवा सूर्य चन्द्रमा से दृष्ट हो तो स्त्री को मारता है और उक्त प्रकार से विपरीत होने पर अर्थात् पापग्रहों से दृष्ट युक्त न हो और सूर्य चन्द्रमा से दृष्ट न हो तो सप्तमस्थ राहु केवल अरिष्ट मात्र देता है।

विनाशं चरेत्सप्तमे सैंहिकेय:
कलत्रादिनाशं करोत्येव नित्यम् ॥
कटाहो यथा लोहजो वह्नितप्तस्तथा
सोऽतिवादान्न शान्ति प्रयाति ।

यदि राहु सप्तम स्थान में स्थित हो तो विनाश करता है और नित्य स्त्री आदि का नाश करता है। जैसे अग्नि से तप्त लोह का कटाह (कढ़ाई) शान्ति को नहीं प्राप्त होता है इसी प्रकार वह मनुष्य विवादरूपी अग्निसे तप्त हो कर शान्ति को प्राप्त नहीं होता है।

शिखी सप्तमे चाध्वनि क्लेशकारी
कलत्रादिवर्गे सदा व्यग्रता च ।
निवृत्तिश्च सौख्यस्य वै चौरभीति-
र्यदा कीटगः सर्वदा लाभकारी ॥

यदि केतु सप्तम में हो उस पुरुष को क्लेश होता है और स्त्री आदि के वर्ग में सदैव व्यग्रता हो और सुख की निवृत्ति हो, चोर से भय हो और यदि वृश्चिक राशि का हो तो सदा लाभ करता है।

क्रूरदृष्टियुत: केतुर्हन्ति नारीं सदैव हि ।
अन्यथा गतवित्तं च पापिनं कुरुते नरम् ॥

यदि केतु सप्तम स्थान में होकर पापदृष्टि से युक्त हो तो नित्य ही स्त्री को मारता है। यदि उक्त प्रकार से विपरीत हो अर्थात् सप्तम स्थान में स्थित हुआ केतु पापदृष्टि से युक्त न हो तो मनुष्य को धनरहित और पापी करता है।

सप्तमभाव में स्थित मेषादि राशियों के फल

मेषेऽस्तसंस्थे हि भवेत्कलत्रं क्रूरं नराणां चपलस्वभावम् ।
पापाशुरक्तं कुजनप्रशंसं वित्तप्रियं स्वार्थपरं सदैव ॥

यदि मेषराशि सप्तम स्थान में हो तो मनुष्यों को क्रूर और चपलस्वभाववाली पाप में अनुरक्त कुजनों में प्रशंसावाली धनप्रिय और सदैव स्वार्थ में ही तत्पर होती है ।

वृषेऽस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं सुरूपदन्तं प्रणत प्रशान्तम् ।
पतिव्रतं चारुगुणेन युक्तं लक्ष्म्यादिकं ब्राह्मण देवभक्तम् ॥

यदि बृषराशि सप्तम में हो तो सुन्दर दाँतों वाली, नम्र, शान्त, पतिव्रता, सुन्दर गुणों से युक्त, लक्ष्मी से अधिक ब्राह्मण तथा देवताओं की भक्ति करने वाली स्त्री होती है ।

तृतीयराशौ सति वै कलत्रे कलत्ररत्नं सुवृत्तम् ।
रूपान्वितं सर्वगुणोपपन्नं विनीतवेषं गुरुवर्जितं च ॥

यदि मिथुनराशि सप्तम में हो तो उसकी स्त्री धन से युक्त, सुन्दर चरित्र वाली, रूपवती, सब गुणों से युक्त, नम्र वेष, गुरु से रहित होती है ।

कर्केऽस्तसंस्थे च मनोहराणि
सौभाग्ययुक्तानि गुणान्वितानि ।
भवन्ति सौम्यानि कलत्रकाणि
कलंकहीनानि च संमतानि ॥

यदि कर्कराशि सप्तम में हो तो उसकी स्त्री मनोहर, सौभाग्ययुक्त, गुणवती, सौम्य स्वभाववाली कलंकरहित और माननीय होती है ।

सिंहेऽस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं तीव्रस्वभावं चपलं सुदुष्टम् ।
विहीनवेषं परसद्मरक्तं वक्रस्वनं स्वल्पसुतं कृशं च ॥

यदि सिंहराशि सप्तम में हो तो उसकी स्त्री तीव्र स्वभाव वाली, चपला, दुष्टा, विहीन वेषवाली और पराये घर में रहने की इच्छावाली टेढ़े स्वर वाली, अल्प पुत्रवाली तथा दुर्बल शरीर वाली होती है।

कन्यास्तसंस्थे च भवन्ति दाराः स्वरूपदेहास्तनयैर्विहीनाः।
सौभाग्यभोगार्थनयेन युक्ताः प्रियंवदाः सत्यधनाः प्रगल्भाः॥

यदि कन्या राशि सप्तम में हो तो उसकी स्त्री स्वरूपवती, पुत्रों से रहित सौभाग्य भोगार्थ और नीति से युक्त प्रियवचन बोलने वाली, सत्यवादिनी तथा धृष्टस्वभाववाली होती है।

तुलेऽस्तसंस्थे गुणगर्वितांग्यो
भवन्ति नार्यो विविधप्रकाराः।
पुण्यप्रिया धर्मपराः सुदन्ता
प्रभूतपुत्राः पृथुसाङ्गयुक्ताः॥

यदि तुलाराशि सप्तम में हो तो उसकी स्त्री अनेक प्रकार के गुणों से गर्वितांगी तथा पुण्यात्मा, धर्म्मपारायणा, सुन्दर दाँतों वाली, बहुत पुत्रों वाली और स्थूल अंगवाली होती है।

कीटेऽस्तसंस्थे च कलासमेताः
भवन्ति भार्याः कृपणाः नराणाम्।
सुकुत्सितांग्यः प्रणयेन हीना
दौर्भाग्यदोषैर्विविधैः समेता॥

यदि वृश्चिक राशि सप्तम में हो तो उन पुरुषों की स्त्रियाँ कलाओं से युक्त कृपण स्वभाववाली, निन्दित अंगों वाली, प्रेम रहित, अनेक दुर्भाग्य दोषों से युक्त होती हैं।

चापेऽस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं सदा नराणां पुरुषाकृतिः स्म।
सुनिष्ठुरं भवितनयेन हीनं प्रशान्तिसौख्यं मतिवर्जितं च॥

यदि धनुराशि सप्तम में हो तो उन पुरुषों की स्त्री पुरुष के आकार वाली निष्ठुरस्वभाव वाली भक्ति तथा नीति से हीन शान्ति और सुख से युक्त एवं बुद्धि से रहित होती है।

मृगेऽस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं
धर्मध्वजं सत्सुतया समेतम्।
पतिव्रतं चारुगुणेन युक्तं
सौभाग्ययुक्तं सुगुणान्वितं च ॥

यदि मकरराशि सप्तम में हो तो उस पुरुष की स्त्री धर्मवाली, अच्छी पुत्री से युक्त, पतिव्रता, सुन्दर गुणों से युक्त सौभाग्य और सुन्दर गुणों से सम्पन्न होती है।

कुम्भेऽस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं
स्थिरस्वभावं पतिकर्मरक्तम्।
देवद्विजप्रीतियुक्तं प्रकृष्टं
धर्मध्वजं सर्वसुखैः समेतम् ॥

यदि कुंभराशि सप्तम में हो तो उसकी स्त्री स्थिरस्वभाव, पतिनिर्दिष्ट-कर्म करने वाली, देवता ब्राह्मणों की सेवा करने वाली, उत्तम, धर्मध्वजा, तथा सब सुखों से युक्त होती है।

मीनेऽस्तसंस्थे च विकारयुक्तं
भवेत्कलत्रं कुसुतं कुबद्धिम्।
अधर्मशीलं प्रणयेन हीनं सदा
नराणां कलहप्रियं च ॥

यदि मीनराशि सप्तम में हो तो उसकी स्त्री विकार से युक्त दुष्ट पुत्र वाली तथा निन्दित बुद्धि वाली अधर्मशील, प्रेम से रहित और नित्य कलह-प्रिय होती है।

तन्वादिभावगत सप्तमेश के फल

मदपतिस्तनुगः कुरुते नरं सकलभोगयुतं च गतव्ययम् ।
बहुकलत्रसुखी नहि मानुषो दलितवैरिजनः प्रमदोत्सुकः ॥

यदि सप्तमेश लग्न में हो तो मनुष्य को समस्त भोगों से युक्त, व्ययरहित बहुत स्त्रियों से सुखी न हों, शत्रुजनों को जीतने वाला और स्त्री में उत्कण्ठित रहता है ।

मदपतौ धनगे वनिता खला
भवति वित्तवती सुखवर्जिता ।
स्वपतिवाक्यविलोपकरी
मदान्मतिमती स्वयमात्मजवर्जिता ॥

यदि सप्तमेश द्वितीय स्थान में हो तो उस पुरुष की स्त्री दुष्टा धनवती सुख से रहित मद से अपने पति के वचन को लोप करने वाली बुद्धिमती और स्वयं सन्तान से रहित होती है ।

मदपतौ सहजस्थलगे स्वयं बलयुतो निजबान्धववल्लभः ।
भवति देवरपक्षयुताऽबला स्मरमदा दयितागृहगा खला ॥

यदि सप्तमेश तृतीय स्थान में हो तो वह पुरुष स्वयं बल से युक्त अपने बान्धव जनों का प्रिय होता है और पापग्रह सप्तम स्थान में हों तो उस पुरुष की स्त्री देवर का पक्ष करने वाली तथा कामदेव के मदवाली होती है ।

स्मरपतिस्तनुते सुखभावगो
विवलिनं पितृवैरकरं खलम् ।
भवति वा दयितापरिपालकः
स्वपतिवाक्ययुता महिला सदा ॥

यदि सप्तमेश सुखभाव में हो तो मनुष्य को बलरहित, पिता से वैर करने वाला तथा दुष्ट करता है और वह स्त्री का पालक होता है एवं उसकी स्त्री सदा उसके वचन करने वाली होती है।

मदपतिस्तनये तनप्रदः सुभगसौख्यकरः सुखसंयुतः।
भवति दुष्टमतिस्तनयैर्युतः खलखगैर्दयितापरिपालकः॥

यदि सप्तमेश पंचम में हो तो पुत्र देने वाला होता है और ऐश्वर्य तथा सुख करने वाला एवं सुख से युक्त होता है। यदि सप्तमेश पापग्रहों से युक्त हो तो दुष्ट बुद्धि वाला तथा पुत्रों से युक्त और स्त्री का पालक होता है।

गतवया विपदां तु निषेवको रिपुगते रुचिर हि चिरं वपुः।
मदपतौ दयितादयितः खलु क्षयगदेन युतः खलखेचरैः॥

यदि सप्तमेश षष्ठस्थान में हों तो वह मनुष्य आयुहीन विपत्तियों के आश्रय रहने वाला और सुन्दर शरीर हो तथा स्त्री का प्रिय होता है। यदि सप्तमेश पापग्रहों से युक्त हो तो क्षयरोग से युक्त होता है।

प्रदमदभावपतौ निजमन्दिरे गतरुजं हि नरं परमायुषम्।
परुषवाग्रहितो ह्यतिशीलवान् भवति कीर्तियुतः परदारगः॥

यदि सप्तमेश सप्तमभाव में हो तो मनुष्य को रोग रहित परमायु वाल करता है और वह मनुष्य कठोर वचन न बोलने वाला अतीव शील वाला कीर्ति से युक्त तथा परस्त्रीगामी होता है।

निधनगे तु कलत्रपतौ नरः
कलहकृद् गृहिणी सुखवर्जितः।
दयितयानिजया न समागमो
यदि भवेदथवा मृतभार्यकः॥

यदि सप्तमेश अष्टम भाव में हो तो वह मनुष्य कलह करने वाला स्त्री के सुख से रहित और अपनी स्त्री से समागम न करने वाला होता है अथवा उसकी स्त्री मृत्यु को प्राप्त हो।

मदपतिर्नवमे यदि शीलवान्
खलखगैः कुरुते हि नपुंसकम् ॥
तपसि तेजसि सुप्रथितो नरः
प्रमदया निजया सह वैरकृत् ॥

यदि सप्तमेश नवम में हो तो वह पुरुषशील वाला हो, यदि सप्तमेश पापग्रहों से युक्त हो तो नपुंसक करता है और तप तेज में प्रसिद्ध होता है तथा अपनी स्त्री से बैर करने वाला होता है।

दशमगे मदपे नृपदोषदः कुवचनः कपटी चपलो नरः।
श्वशुरदुष्टजनानुचरः खलैर्निजवधूजनयोर्नहि हर्षकृत् ॥

यदि सप्तमेश दशम स्थान में हो तो वह पुरुष राजा को दोष देने वाला निन्दित बचन बोलने वाला कपटी चपल होता है। यदि सप्तमेश पापग्रह हो तो श्वशुर और दुष्ट जनों का अनुचर हो एवं अपनी स्त्री और अन्य जनों से प्रेम न करे।

भवगते तु कलत्रपतौ सदा स्वदियताप्रियकृच्च तथा सती।
अनुचरी स्वधवस्य सुशीलिनी पशुमतिः कलया पितृसंशया॥

यदि सप्तमेश एकादश भाव में हो तो उसकी स्त्री प्यार करने वाली सती तथा पति की अनुचरी सुशीला, कला करके पशुमति, पिता में अनेक संशय वाली होती है।

मदपतिर्व्ययगस्तनुते व्ययं
स्वदयितागृहबन्धुविवर्जितः।
भवति लौल्यवती खलवाक्यदा
व्ययपरा गृहतस्करता युता॥

यदि सप्तमेश व्ययस्थान में हो तो व्यय को करता है तथा वह पुरुष अपनी स्त्री, गृह तथा बन्धुओं से रहित होता है, स्त्री चंचला कटु भाषण करने वाली, व्यय करने वाली तथा घर में तस्करता से युक्त होती है ।

सप्तमभाव पर सूर्यादिग्रहों के दृष्टिफल

सम्पूर्णदृष्टि यदि कामभावे
सूर्यश्च कुर्यान्मदनक्षयं च ।
जायाविनाश खलु शत्रुपीडां
नरो भवेत्पाण्डुरदेहवर्णः ॥

यदि सप्तम भाव में सूर्य की सम्पूर्ण दृष्टि हो तो कामक्षय, स्त्री का नाश, तथा शत्रु पीड़ा को करता है और वह पुरुष पाण्डुवर्ण वाला होता है।

जाया गृहे शीतकरेण दृष्टे
सुन्दरी भार्या गुणशालिनी च ।
चापल्ययुक्ता गजगामिनी च
परापवादे निपुणा कुशीला ॥

यदि सप्तम स्थान चन्द्रमा से दृष्ट हो तो उस पुरुष की स्त्री सुन्दर, गुणशालिनी, चापल्य युक्त, गजगामिनी, परापवाद में चतुर और दुष्टशील वाली होती है ।

जायागृहे भौमनिरीक्षिते च
जायाविनाशं कुरुते च पुंसाम् ।
बस्तौ तथा व्याधिनिपीड़ितश्च
स्त्रीतो विवादो गमने महाभयम् ॥

यदि सप्तम स्थान भौम से दृष्ट हो तो पुरुषों की स्त्रियों का नाश करता है और वस्ति स्थान के रोग से पीडित स्त्री से विवाद तथा गमन में महाभय होता है।

जायागृहे चन्द्रसुतेन दृष्टे जायासुख चैव करोति पुंसाम्।
जीवेच्चिरं सोऽद्भुतगात्रधारी कलाधिशाली धनधान्य भोगी॥

यदि सप्तम स्थान बुध से दृष्ट हो तो पुरुषों को स्त्री सुख करता है और वह पुरुष चिरंजीव अदभुत शरीर वाला, कलाओं से शोभित तथा धन-धान्यभोगी होता है।

कलत्रभावेऽमरपूजितेक्षिते जायासुखं पुत्रसुखं नरस्य।
व्यापारलाभो महती प्रतिष्ठा धनेन धर्मेण च संयुतोऽयम्॥

यदि सप्तम स्थान गुरु से दृष्ट हो तो पुरुष को स्त्री और पुत्र का सुख, व्यापार में लाभ तथा बहुत प्रतिष्ठा होती है और वह पुरुष धन तथा धर्म से युक्त होता है।

कलत्रभावेऽसुरपूजिते जायासुखं पुत्रसुखं करोति।
प्रभूतपुत्रं यदि सौम्ययुक्तो व्यापारसौख्यं विमलां च बुद्धिम्॥

यदि सप्तम भाव शुक्र से दृष्ट हो तो स्त्री और पुत्र के सुख को करता है यदि शुभग्रह से युक्त हो तो बहुत पुत्रवाला, व्यापार में सुख और निर्मल बुद्धि को करता है।

जायागृहे मन्दनिरीक्षिते च जायाविनाशः खलु मृत्युतुल्यः।
पाण्डुव्यथा चाथ तनौ च पुंसां ज्वरातिसारग्रहणी विकारः॥

यदि सप्तमभाव शनि से दृष्ट हो तो स्त्री का नाश या मृत्यु तुल्य हो और पुरुषों के शरीर में पांडुरोग से क्लेश तथा ज्वर, अतिसार और संग्रहणी का विकार होता है।

यदि कलत्रगृहे तमवीक्षिते मदविवृद्धिरथो मनुजस्य वै ।
स्ववचनं हि सदैव तु साधयेत्तमदशासमये म्रियतेऽङ्गना ॥

यदि सप्तम स्थान राहु से दृष्ट हो तो मनुष्य के मद की वृद्धि हो और वह मनुष्य अपने वाक्यों को सिद्ध करने वाला हो और राहु की दशा के समय स्त्री मर जाती है ।

सप्तम भावगत द्विग्रहादि योगों के फल

(स० चं०)

कामाश्रितस्तीक्ष्णकरः सचन्द्रो नरं प्रसूते व्यथयासमेतम् ।
सदाऽऽतुरं धर्मविवर्जितांगं गुणैर्विहीनं बहुमाययाढ्यम् ॥

यदि चन्द्रमा सहित सूर्य सप्तम स्थान में हो तो क्लेश से युक्त, नित्य व्याकुल धर्म और गुणों से रहित तथा बहुत कपट से युक्त मनुष्य को उत्पन्न करता है ।

(सू० मं०)

कामाश्रितस्तीक्ष्णकरः सभौमो नरं प्रसूते परदाररक्तम् ।
दानोनितं क्षुत्परिपीडितांगं गुरुद्विजानां निरतं नृशंसम् ॥

यदि भौम सहित सूर्य सप्तम स्थान में हो तो पराई स्त्री में आसक्त, दानरहित, क्षुधा से पीडित गुरु ब्राह्मणों में प्रेम करने वाला तथा दुष्ट मनुष्य को उत्पन्न करता है ।

(सू० बु०)

कामाश्रितस्तीक्ष्णकरः ससौम्यो नरं प्रसूते कुकलत्रभाजम् ।
नपुंसकं कामसुखैर्विहीनं निरर्थकं वा निजबन्धुकत्त्वम् ॥

यदि बुध सहित सूर्य सप्तम स्थान में हो तो निन्दित स्त्रीवाला, नपुंसक, काम सुखों से रहित तथा निरर्थक वा बन्धुता वाले मनुष्य को उत्पन्न करता है।

(सू० बृ०)

कामाश्रितस्तीक्ष्णकरः सजीवो नरं प्रसूतेऽल्पसुखं कृतघ्नम्।
नृशंसवाक्यं परपाकपुष्टं मायाप्रसक्तं बहुदुःखितं च॥

यदि गुरु सहित सूर्य सप्तम में हो तो अल्पसुखी, कृतघ्न, दुष्ट वचन बोलने वाला, दूसरों के पाक से पुष्ट, माया से युक्त तथा बहुत दुःखित मनुष्य को उत्पन्न करता है।

(सू० शु०)

कामाश्रितस्तीक्ष्णकरः सशुक्रो नरं प्रसूते परपाकभाजम्।
सेवानुरक्तं निजबन्धुहीनं विमुक्तशान्तिं धनवर्जितं च॥

यदि शुक्र सहित सूर्य सप्तम में हो तो दूसरों का भोजन खाने वाला, सेवा में अनुरक्त अपने बन्धुओं से हीन, शान्ति और धन से वर्जित मनुष्य को उत्पन्न करता है।

(सू० श०)

कामाश्रितस्तीक्ष्णकरः ससौरो नरं प्रसूते रतिसौख्यहीनम्।
सुदुष्टदारं बहुशत्रुपक्षं रोगातुरं भीतिसमन्वितं च॥

यदि शनि सहित सूर्य सप्तम स्थान में हो तो सम्भोग सौख्य से रहित दुष्ट स्त्रीवाला, बहुत शत्रु पक्षवाला, रोग से व्याकुल तथा भय से युक्त मनुष्य को उत्पन्न करता है।

(चं० मं०)

कलत्रगः शीतकरः सभौमो नरं प्रसूते जठरार्तिभाजम्।
विद्यैकशास्त्रार्थविहीनमुग्रं फलप्रशंसाप्तमाप्तमहाभयं च॥

यदि भौम सहित चन्द्रमा सप्तम में हो तो उदर पीड़ावाला, विद्या में श्रेष्ठ, शास्त्रार्थ रहित, उग्रस्वभाव, फल के प्रसंग से लब्धभय वाले मनुष्य को उत्पन्न करता है।

(चं० बु०)

कलत्रगः शीतकरः ससौम्यो नरं प्रसूते शुभदारभाजम् ।
लौल्यान्वितं सत्यदयासमेतं प्रभूतपुत्रं प्रियवन्धुवर्गम् ।।

यदि बुधसहित चन्द्रमा सप्तम में हो तो सुन्दर स्त्रीवाला, चंचलता से तथा सत्य-दया से युक्त, अधिक पुत्रवाला और बन्धु वर्ग के प्रिय मनुष्य को उत्पन्न करता है।

(चं० वृ०)

कलत्रगः शीतकरः सजीवो नरं प्रसूते बहुशास्त्ररक्तम् ।
प्रभूतमित्रं सुभगं मनोज्ञं नरेन्द्रपूजासहितं सदैव ।।

यदि गुरु सहित चन्द्रमा सप्तमभाव में हो तो बहुत शास्त्रों में अभ्यास करने वाला अधिक मित्रवान्, ऐश्वर्ययुक्त, सुन्दर और नित्य ही सत्कार से युक्त मनुयष्य को उत्पन्न करता है।

कलत्रगः शीतकरः सशुक्रो नरं प्रसूते शुभदारभाजम् ।
नानार्थभोगैः स्वजनैः समेतं प्रभूतसौख्यं मतिसंयुतं च ।।

यदि शुक्र सहित चन्द्रमा सप्तम में हो तो सुन्दर स्त्री वाला अनेक अर्थ-भोगों से और स्वजनों से युक्त, अधिक सौख्य वाला तथा बुद्धि से युक्त मनुष्य को उत्पन्न करता है।

(बु० वृ०)

कामाश्रितः सोमयुतः सजीवो
नरं प्रसूते बहुबुद्धिसत्वम् ।।
सुगर्वितं लौल्यफलं प्रदग्धं
महाव्ययं कामनिपीडिताङ्गम् ।।

जो गुरुयुक्त बध सप्तम में हो तो बहुत बुद्धि और पराक्रम वाला, घमण्डी, चञ्चल, फल वाला, दग्धशरीर, बड़ा खर्च करनेवाला और कामसे पीड़ित शरीर वाले मनुष्य को उत्पन्न करता है।

(बु० शु०)

कामाश्रितः सोमसुतः सशुक्रो नरं प्रसूते सुकलत्रभाजम्।
श्रद्धान्वितं भोगसमृद्धगात्रं कृपाविहीनं दयिताकृतघ्नम्॥

जो शुक्र सहित बुध सप्तम में हो तो सुन्दर स्त्रीवाले, श्रद्धा से युक्त, भोगसे समृद्ध शरीरवाले, निर्दयी और कृतघ्न स्त्रीवाले मनुष्य को उत्पन्न करता है।

(बु० श०)

कामाश्रितः सोमसुतः ससौरो नरं प्रसूते कुकलत्रभाजम्।
कामार्त्तदेहं व्यसनैः समेतं पराभिभूतं गुणवर्जितं च॥

जो शनिसहित बुध सप्तम में हो तो दुष्ट स्त्रीवाले, कामसे पीड़ित देह-वाले, व्यसनों से युक्त, गुणों से हीन मनुष्य को उत्पन्न करता है।

(बृ० शु०)

कामाश्रितो देवगुरुः सशुक्रो नरं प्रसूते बहुरोगयुक्तम्॥
चित्रस्वरं भव्यतनुं प्रशस्तं कीर्त्यान्वितं ब्राह्मणदेवभक्तम्॥

जो शुक्र युक्त गुरु सप्तम में हो तो बहुत रोगसे युक्त, विचित्र स्वर, सुन्दर शरीर, श्लाघ्य, कीर्ति से युक्त, ब्राह्मण और देवताओं के भक्त मनुष्य को उत्पन्न करता है।

(वृ० श०)

कामाश्रितो देवगुरुः ससौरो नरं प्रसूते वनिताजिताङ्गम्।
स्त्रीवित्तभक्षं हतबुद्धिसत्त्वं मृषान्वितं पापसमन्वितं च॥

जो शनि सहित गुरु सप्तम में हो तो स्त्री से पराजित, स्त्री के धन को खानेवाला; नष्टबुद्धि, पराक्रमवाला, झूठबचनवाला और पापसे युक्त मनुष्य को उत्पन्न करता है।

(चं० श०)

कलत्रगः शीतकरः ससौरो नरं प्रसूते रुजया समेतम्।
सुकातरं कामपरं नृशंसं स्वमृत्युयुक्तं परदाररक्तम्॥

यदि शनि सहित चन्द्रमा सप्तम में हो तो रोगसे युक्त, कातर, काम में तत्पर, दुष्ट, अपने दासोंसे युक्त और पराई स्त्री में आसक्त मनुष्य को उत्पन्न करता है।

(मं० बु०)

सौम्यान्वितो भूमिसुतः कलत्रे
नरं प्रसूते कुटिलं हृदिस्थम्।
कौटिल्ययुक्तं प्रभया विहीनं
निरस्तपुत्रं विकलं सदैव॥

यदि बुधसहित भौम सप्तम में हो तो कुटिल हृदयवाला तथा कौटिल्य अर्थशस्त्र से युक्त, शोभारहित, पुत्रवर्जित और नित्य विकल मनुष्य को उत्पन्न करता है।

(मं० वृ०)

जीवान्वितो भूमिसुतः कलत्रे
नरं प्रसूते प्रियदुष्टसंङ्गम्।
व्यर्थश्रमं पापकदर्थिताङ्गं
नरेन्द्रसेवाप्तमहारिसंघम्॥

यदि गुरुसहित भौम सप्तम हो तो दुष्टजनों के सङ्ग को प्रिय मानने वाला, व्यर्थ परिश्रम करनेवाला, पापसे दुर्दशा युक्त देहवाला, राजसेवा से प्राप्त महान् शत्रु संघ वाले मनुष्य को उत्पन्न करता है।

(मं० शु०)

शुक्रान्वितो भूतनयः कलत्रे जनं प्रसूते जनतानिरस्तम्।
विहीनकोशं क्षतजार्द्र देहं पराभिभूतं नयधर्महीनम्॥

यदि शुक्र से युक्त भौम सप्तम में हो तो जनता से वर्जित कोश (खजाना) रहित, घाव के पाक से आर्द्र देहवाला, दूसरों से पराजित, नीति और धर्म से हीन मनुष्य को उत्पन्न करता है।

(मं० श०)

कामाश्रितो भूतनयः ससौरो नरं प्रसूते बहुरोगभाजम्।
क्षीणाङ्गमार्त्तं पिशुनस्वभावं सुदुष्टकर्माणमतिप्ररूपम्॥

यदि शनि सहित भौम सप्तम में हो तो बहुत रोगवाला, क्षीण शरीर, दुःखित, निन्दक स्वभाव; दुष्टकर्म करनेवाला और अत्यन्त प्ररूप मनुष्य को उत्पन्न करता है।

(शु० श०)

कामाश्रितो दैत्यगुरुः ससौरो नरं प्रसूते बहुशत्रु वातम्।
अभक्षभक्षं परदाररक्तम् व्यपेतलज्जं परपोषकं च॥

यदि शनि सहित शुक्र सप्तम में हो तो बहुत शत्रुओं से पीड़ित, अभक्ष्य को खानेवाला, पराई स्त्रियों में आसक्त, लज्जा रहित और दूसरों के पालन करने-वाले मनुष्य को उत्पन्न करता है।

(सू० चं० मं०)

सूर्येन्दुभौमा यदि कामसंस्था नरं प्रकुर्वन्ति रुजार्तदेहम्।
लोल्याश्रितं कामनिपीडिताङ्गं गुणैर्विहीनं वनिताजितं च॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, सप्तम में हो तो मनुष्य को रोग से पीड़ित, शरीर-वाला और चञ्चलता से युक्त करते हैं। कामनी से पीड़ित अंगों वाला गुणों से हीन तथा स्त्रियों से अर्जित करते हैं।

(सू० चं० बु०)

रवीन्दुसौम्या यदि कामसंस्था नरं प्रकुर्वन्ति सुतैर्विहीनम्।
कुस्त्रीषु युक्तं कठिनस्वभावं श्रमान्वितं कामसमन्वितं च ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, बुध, सप्तम में हो तो मनुष्य को पुत्रों से हीन दुष्ट, स्त्रियों से युक्त, कठोर स्वभाव, परिश्रम और काम से युक्त करते हैं।

(सू० चं० वृ०)

रवीन्दुजीवाश्च कलत्रसंस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति रुजार्त्तदेहम्।
स्त्रीचंचलं कामपरं नृशंसं कुपुण्यसेवानिरतं सदैव ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, गुरु, सप्तम में हों तो मनुष्य को रोग पीड़ित शरीर वाला करते हैं और स्त्रियों में चञ्चल, काम में तत्पर, दुष्ट, और नित्य निन्दित पुण्यसेवा में निरत करते हैं।

(सू० चं० शु०)

सूर्येन्दुशुक्राः यदि कामसंस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति विनष्टदारम्।
ईर्षाप्रकोपार्जितभूरिवैरं विदेशभाजं गुरुभिर्विरुद्धम् ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, शुक्र, सप्तम में हों तो मनुष्य को नष्ट स्त्री ईर्षा क्रोध से उपार्जित अधिक वैर वाला, विदेश में रहने वाला और गुरुओं से विरुद्ध कार्य करने वाला करते हैं।

(सू० चं० श०)

सूर्येन्दु सौराः यदि कामसंस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति मतिप्रहीनम्।
खलस्वभावं परलोकरक्तं भण्डस्वभावं नयशस्त्रयुक्तम् ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, शनि, सप्तम में हो तो मनुष्य को बुद्धि से हीन दुष्ट स्वभाव पारलौकिक विचार में आसक्त, भण्डस्वभाव तथा नीति शास्त्र में युक्त करते हैं।

(सू० मं० बु०)

सूर्यारसौम्या यदि कामसंस्थाःनरं प्रकुर्वन्ति गतप्रभावम् ।
भोगैर्विमुक्तं परपाकरक्तं पराश्रय पापमतिं सदैव ॥

यदि सूर्य, भौम, बुध सप्तम में हों तो मनुष्य को प्रभाव रहित, भोगों से वर्जित, पराये अन्न का खाने वाला दूसरों के आश्रय में रहने वाला तथा नित्य पापबुद्धि वाला करते हैं ।

(सू० मं० वृ०)

सूर्यारजीवा यदि कामसंस्था नरं प्रकुर्वन्ति पराभिभूतम् ।
कुसङ्गतं दुष्कृतकर्मरक्तं निन्द्यं सतां सत्यव्रतैर्विहीनम् ॥

यदि सूर्य, भौम, गुरु, सप्तम में हों तो मनुष्य को अन्यों से पराजित दुष्टजनों का संग करने वाला पापकर्म आसक्त, सज्जनों की निन्दा करनेवाला और सत्यव्रतों से रहित करते हैं ।

(सू० मं० शु०)

सूर्यारशुक्रा यदि कामसंस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति विशिष्टहीनम् ।
घृणोनितं पापमतिं रुजाढ्यं विवेकविद्यारहितं सदैव ॥

यदि सूर्य, भौम, शुक्र, सप्त में हों तो मनुष्य को सज्जनों से तथा दया से रहित पापबुद्धि रोग से युक्त नित्य विवेक और विद्या से रहित करते हैं ।

(सू० मं० श०)

सूर्यारसौरा यदि कामसंस्था नरं प्रकुर्वन्ति कुरूपदेहम् ।
कुशीलदारं कुमतिं कृतघ्नं भयान्वितं कामतनुं नशंसम् ॥

यदि सूर्य, भौम, शनि, सप्तम में हो तो मनुष्य को कुरूप वाला दष्टस्त्री वाला, दुष्ट बुद्धि, कृतघ्न, भय से युक्त कामी और दुष्ट करते हैं।

(सू० बु० वृ०)

कामस्थिताः सूर्यबुधामरेज्या:नरं प्रकुर्वन्ति कुबुद्धिभाजम्।
भयान्वितं शिष्टजनैर्विमुक्तं कृपाविहीनं निधनं कुचैलम्॥

यदि सूर्य, बुध, गुरु सप्तम में हों तो मनुष्य को दुष्ट बुद्धि वाला, भय से युक्त सभ्यजनों से वर्जित, दया रहित, निर्धन और बुरे वस्त्र वाला करते हैं।

(सू० बु० शु)

कामस्थिताः सर्यबुधासुरेज्याः नरं प्रकुर्वन्ति खलेषु रक्तम्।
सुनिघृणं चौर्यपरं कुदारं विज्ञानहीनं सुधिया समेतम्॥

यदि सूर्य, बुध, शुक्र सप्तम में हों तो मनुष्य को दुष्ट जनों में आसक्त दया रहित, चौर कार्य में तत्पर, दुष्ट स्त्री वाला, विज्ञान से हीन, सुन्दर बुद्धि से युक्त करते हैं।

(सू० बु० श०)

कामस्थिताः सूर्यबुधार्कपुत्रा नरं प्रकुर्वन्ति विरूपगात्रम्।
सदातुरं कुत्सितदाररक्तं सुकातरं रंध्रपरं खलं च॥

यदि सूर्य, बुध, शनि, सप्तम में हों तो मनुष्य को बुरे रूप वाला नित्य रोगी, निन्दित स्त्री में आसक्त, कातर (डरने वाला) दोषों को ढूँढने वाला और दुष्ट स्वभाव वाला करते हैं।

(सू० वृ शु०)

कामस्थिताः सूर्यसूरेज्यशुक्राः नरं प्रकुर्वन्ति दयाविहीनम्।
रोगानुरोगं निजदारमुक्तं कुसङ्गतं शास्त्रापराङ्मुखञ्च॥

यदि सूर्य, गुरु, शुक्र, सप्तम में हों तो मनुष्य को दया से हीन रोग के पीछे रोग वाला, अपनी स्त्री से रहित, दुष्टसंग वाला तथा शास्त्र से विमुख करते हैं।

(सू० वृ० श०)

कामस्थिता; सूर्यसुरेज्यसौरा नरं प्रकुर्वन्ति विरक्तदारम् ।
विरक्तपौरं गतमानसत्यं दीनस्वभावं भयकातरं च ॥

यदि सूर्य, गुरु सप्तम में हों तो मनुष्य को स्त्री और पुरजनों से वर्जित तथा मान, सत्य से रहित दीनस्वभाव, भय से युक्त, और कातर करते हैं।

(सू० शु० श०)

कामाश्रिताः सूर्यसितार्कपुत्राः नरं प्रकुर्वन्ति सुकामयुक्तम् ।
प्रभूतिसौख्यं सुरतप्रगल्भं जितेन्द्रियं दानचरैः समेतम् ॥

यदि सूर्य, शुक्र, शनि, सप्तम में हों तो मनुष्य को सुन्दर, काम से युक्त, अधिक सौख्यवाला, संभोग में धृष्ट जितेन्द्रिय और दानचरों (दान खाने वालों से युक्त करते हैं।

(चं० मं० शु०)

कामाश्रिताश्चंद्रकुसूनुसौम्याः नरं प्रकुर्वन्ति कुरूपवेषम् ।
सुबुद्धिसद्दीमं नृशंतसं विनष्टदारं मतिवर्जितं च ॥

यदि चन्द्र, भौम, बुध, सप्तम में हों तो मनुष्य को बुरे रूप वेषवाला, सुन्दर बुद्धिवाला, अत्यन्त अच्छा, दीन स्वभाव, दुष्ट नष्ट स्त्रीवाला और बुद्धि रहित करते हैं।

(चं. मं. वृ.)

कामाश्रिताश्चन्द्रकुजामरेज्याः नरं प्रकुर्वन्ति हितं सुसत्यम् ।
विदग्धदारं रणरागभाजं धर्मान्वितं कामपरं सदैव ॥

यदि चन्द्र, भौम, गुरु, सप्तम में हों तो मनुष्य को भलाई चाहने वाला, सत्यवादी चतुर स्त्री वाला रण रागवाला धर्म से युक्त और नित्य काम में तत्पर करते हैं।

(चं. मं. शु.)

कामाश्रिताश्चंद्रकुजासुरेज्या नरं प्रकुर्वन्ति कुचैलमुग्रम् ।
पराङ्मुखं साधुजनस्य नित्यं सुनिष्ठुरं गर्हितमद्यकृत्यम् ॥

यदि चन्द्र, भौम, शुक्र सप्तम में हो तो मनुष्य को कुत्सितवस्त्र वाला उग्रस्वभाव, सदा साधुजनों से विमुख, कठोर चित्त, निन्दित और मद्य बनाने वाला करते हैं।

(चं. मं. श.)

कामाश्रिताश्चन्द्रकुजार्कपुत्राः नरं प्रकुर्वन्ति सुसाधुरक्तम् ।
मायाविहीनं श्रुतिशास्त्रकूतं हितं गुरुणां प्रवरं सुराणाम् ।

यदि चन्द्र, भौम, शनि, सप्तम में हों तो मनुष्य को सुन्दर साधुओं में अनुरक्त कपट रहित, वेदशास्त्र में अभ्यास करने वाला, गुरुओं का हित चाहने वाला, देवताओं का प्रवर्तक करते हैं।

(चं. बु. वृ.)

कामाश्रिताश्चन्द्रबुधामरेज्या नरं प्रकुर्वन्ति सुभोगभाजम् ।
विदग्धवाक्यं वनितास्वभीष्ट शास्त्रानुरक्तं रणकोविदं च ॥

यदि चन्द्र, बुध, गुरु, सप्तम में हों तो सुन्दर भोग वाला, चतुर वचन बोलने वाला, स्त्रियों में प्रिय, शास्त्र में अनुरक्त और युद्ध विद्या का पण्डित करते हैं।

(चं. बु. शु.)

कामाश्रिताश्चन्द्रबुधासुरेज्या नरं प्रकुर्वन्ति नरेशवन्द्यम् ।
विशिष्टपुण्यं गुरुतासमेतं सुशीलचेष्टं विनयान्वितं च ॥

यदि चन्द्र, बुध, शुक्र सप्तम में हों तो मनुष्य को राजाओं का वन्दनीय, सज्जन और पुण्यात्मा, गौरव से युक्त, सुन्दर शील और चेष्टा वाला तथा विनय से युक्त करते हैं।

(चं. बु. श.)

कामाश्रिताश्चन्द्रबुधार्कपुत्रा नरं प्रकुर्वन्ति धनान्वितं च।
प्रभूतकोशान्नयवै. समेतं श्रद्धासमेतं तनयप्रधानम् ॥

यदि चन्द्र, बुध, शनि सप्तम में हों तो मनुष्य को धन से युक्त अधिक कोश, अन्न तथा यवों से युक्त एवं श्रद्धा से युक्त और पुत्रों से श्रेष्ठ करते हैं।

(चं. वृ. शु.)

कामाश्रिताश्चंद्रसुरेज्यशुक्राः नरं प्रकुर्वंति सुधर्मरक्तम्।
स्त्रीणामभीष्टं भयवर्जितांगं गुणाधिकं कीर्त्तिसमन्वितं च ॥

यदि चन्द्र, गुरु, शुक्र, सप्तम में हों तो मनुष्य को, सुन्दर, धर्म में आसक्त, स्त्रियों का प्रिय, भयरहित, अधिकगुणी, यश से युक्त करते हैं।

(चं. बु. श.)

कामाश्रिताश्चंद्रसुरेज्यशुक्रा नरं प्रकुर्वन्ति नरेंद्रपूज्यम्।
मंत्रप्रधानं गजवाजिभाजं जितेन्द्रियं तीर्थसमाश्रितं च।

यदि चन्द्र, गुरु, शनि, सप्तम में हों तो मनुष्य को राजाओं से सत्का पाने वाला, मंत्र में श्रेष्ठ, हाथी घोड़े वाला, जितेन्द्रिय तथा तीर्थ में आश्र करने वाला करते हैं।

(चं. शु. श.)

चंद्रासुरेज्यार्कसुताः कलत्रे नरं प्रकुर्वन्ति रतिप्रगल्भम्।
प्रभूतशास्त्रार्थविशिष्टबुद्धिं गुणप्रधानं धनसत्फलं च ॥

यदि चन्द्र, शुक्र, शनि, सप्तम में हों तो मनुष्य को संभोग में धृष्ट बहुत शास्त्रों के अर्थों को जानने वाला सज्जनों के समान बुद्धि वाला गुणों में श्रेष्ट और सत्फल वाला करते हैं।

(मं. बु. वृ.)

भौमज्ञजीवाः यदि कामसंस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति सतं सदोक्तम्।
प्रभूतधर्मं प्रणतारिपक्ष क्षमासमेतं सुजनानुरक्तम्॥

यदि भौम, बुध, गुरु सप्तम में हो तो मनुष्य को नित्य सत्य बोलने वाला, अधिक धर्म्मात्मा, नत शत्रु पक्षवाला, क्षमा से युक्त, सुजनों में अनुरक्त करते हैं।

(मं. बु. श.)

भौमज्ञशुक्राः यदि कामसंस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति कदथताढयम्।
गतश्रियं मांसरतं सुतीव्रं वधात्मकं कीर्तिविवर्जित च॥

यदि भौम, बुध, शुक्र, सप्तम में हों तो मनुष्य को दुर्दशा से युक्त, लक्ष्मी रहित, मांस से प्रेम करने वाला, तीक्षणस्वभाव हिंसा करने वाला तथा कीर्तिरहित करते हैं।

(मं. वृ. शु.)

भौमामरेज्यास्फुजितः कलत्र नरं प्रसूतेऽपि विशालनेत्रम्।
त्रपान्वितं कीर्तिसुखैः समेत प्रियावहं ब्राह्मणसम्मतं च॥

यदि भौम, गुरु, शुक्र, सप्तम में हों तो बड़े नेत्र वाला, लज्जा, कीर्ति और सुख से युक्त स्त्री को प्राप्त करने वाला तथा ब्राह्मणों का माननीय करते हैं।

(मं. वृ. श.)

भौमामरेज्यार्कसुताः कलत्रे नरं प्रकुर्वन्ति बहुप्ररोषम् ।
प्रभूतवैरं विधिना विहीनं रोगार्दिताङ्गं खललोकभाजम् ॥

यदि भौम, गुरु, शनि, सप्तम में हों तो मुनुष्य को अधिक क्रोधी, वहुत वैर वाला, भाग्य रहित, रोग से पीडित शरीर, दुष्ट जनों वाला करते हैं।

(मं. शु. श.)

भौमासुरेज्यार्कसुताः कलत्रे नरं प्रकुर्वन्ति शुभं विसंज्ञम् ॥
सुराज्यभृत्यं परपक्षहीनं नयान्वितं बांधवपूजितं च ॥

यदि भौम, शुक्र, शनि, सप्तम में हों तो मनुष्य को सुन्दर चेतना रहित सुन्दर राज्य का सेवक, शत्रु पक्ष से हीन, नीति से युक्त, बान्धवों से पूजित करते हैं।

(बु. वृ. शु.)

सोम्यामरेज्याऽस्फुजितः कलत्रे नरं प्रकुर्वंति नृपप्रधानम् ।
प्रभूतिकोशं बहुसौख्ययुक्तं विशिष्टदारं जनवल्लभं च ॥

यदि बुध, गुरु शुक्र सप्तम में हों तो मनुष्य को राजाओं में मुख्य, अधिक कोशवाला, बहुत सौख्य से युक्त, उत्तम स्त्री वाला, जनों का प्रिय करते हैं।

(बु० वृ० श०)

सौम्यामरेज्यार्कसुताः कलत्रे,
नरं प्रकुर्वन्ति यशोऽभिधानम् ।
नानार्थ शास्त्रैः सदनैश्च युक्तम् ,
पुण्यप्रधानं हि नरं जनानाम ॥

यदि बुध, गुरु, शनि, सप्तम में हों तो मनुष्य को यशस्वी, अनेक अर्थ शास्त्रों से तथा घरों से युक्त, जनों की पुण्य में श्रेष्ठ करते हैं।

(बु० शु० श०)

सौम्यासुरेज्यार्कसुताः कलत्रे नरं प्रकुर्वन्ति नरेन्द्रपूज्यम्।
जितारिपक्षं क्षितिवित्तलाभं सदा सुधर्मं स्वरं विदग्धम्॥

यदि बुध, शुक्र, शनि, सप्तम में हों तो मनुष्य को राजाओं से सत्कार पाने वाला, शत्रु पक्ष को जीतने वाला, भूमि द्रव्य का लाभ वाला, सुन्दर, धर्मात्मा, श्रेष्ठ और चतुर करते हैं।

(वृ० शु० श०)

जीवासुरेज्यार्कसुताः कलत्रे नरं प्रकुर्वन्ति चतुष्पदाढ्यम्।
सत्यानुरक्तं बहुपद्विसत्य शीलान्वितं ब्राह्मणतत्परं च॥

यदि गुरु, शुक्र, शनि, सप्तम में हों तो चौपायों से युक्त, सत्य में अनुरक्त शील से युक्त तथा ब्राह्मण सेवा में तत्पर करते हैं।

(सू० चं० मं० बु०)

सूर्येन्दुभौमेन्दुसुताः कलत्रे नरं प्रकुर्वन्ति हतप्रतापम्।
घृणोनितं पापकथानुरक्तं व्यर्थश्रमं मन्युसमन्वितं च॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, सप्तम में हों तो मनुष्य को नष्ट प्रताप वाला, दयारहित, पापकथाओं में अनुरक्त, व्यर्थ परिश्रम वाला तथा क्रोध से युक्त करते हैं।

(सू० चं० मं० वृ०)

सूर्येन्दुभौमामरपूजितांगाः नरं प्रकुर्वन्ति सतामभीष्टम्।
दयान्वितं भूरिकलत्रभाजं प्रभूतपुत्रं सुहृदामभीष्टम्॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, गुरु, सप्तम में हों तो मनुष्य को सज्जनों

का प्रिय, दया से युक्त, अधिक स्त्री और पुत्र वाला तथा मित्रों का प्रिय करते हैं।

(सू० चं० मं० शु०)

सूर्येन्दुभौमासुरपूजिताङ्गाः नरं प्रकुर्वन्ति कलत्रहीनम् ।
परापवादोत्सुकरल्पसत्यं सुनिष्ठुरं धर्मपराङ्मुखं च ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, शुक्र, सप्तम स्थान में हो तो मनुष्य को स्त्रीहीन, परापवाद में उत्कण्ठित, अल्पसत्य वाला कठोर स्वभाव और धर्म से विमुख करते हैं।

(सू० चं० मं० श०)

सूर्येन्दुभौमार्कसुताः कलत्रे नरं प्रकुर्वन्ति सुदुष्टदारम् ।
सन्तानहीनं विधनं नृशंसं पुण्यैः प्रयुक्तं कृतकस्वभावम् ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, शनि, सप्तम में हों तो मनुष्य को दुष्ट स्त्री वाला सन्तान और धन से हीन, दुष्ट पुण्यों से युक्त तथा कृतक स्वभाव वाला करते हैं।

(सू० चं० बु० वृ०)

सूर्येन्दुसौम्यामरपूजिताङ्गाः कामाश्रिताः संजनयंति मर्त्यम् ।
नानाकलत्रैः कृतकस्वभावैः समन्वितं निंद्यतमं सदैव ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, सप्तम में हों तो कृतक स्वभाव वाली, अनेक स्त्रियों से युक्त तथा नित्य ही अतीव निन्दित पुरुष को उत्पन्न करते हैं।

(सू० चं० बु० शु०)

सूर्येन्दुसौम्यासुरपूजिताङ्गाः
कामाश्रिताः सञ्जनयन्तिमर्त्यम् ।
सुकृष्टभाजं कुकलत्रसंघैः
समन्वितं तीव्रतमं कफाढ्यम् ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, बुध शुक्र, सप्तम में हों तो कष्ट वाला, दुष्ट स्त्रियों के समूह से युक्त, अत्यन्त तीक्षण स्वभाव और कफ युक्त पुरुष को उत्पन्न करते हैं।

(सू० चं० बु० श०)

सूर्येन्दुसौम्यार्कसुताः कलत्रे नर प्रकुर्वन्ति कुलोकरक्तम् ।
वेश्यारतिं पापमतिं कृतघ्न पित्तार्दित दुष्टमतिं विसंज्ञम् ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, बुध, शनि, सप्तम में हों तो मनुष्य को दुष्टजनों में अनुरक्त, वेश्या में प्रीति करने वाला, पापबुद्धि, कृतघ्न, पित्त से पीड़ित, दुर्बुद्धि, ज्ञानरहित करते हैं।

(सू० चं० वृ० शु०)

सूर्येन्दुजीवासुरपूजिताङ्गाः
कामाश्रिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
मलीमसं शास्त्रविहीनकृत्यम्
विदेशरक्तम् मतिवर्जितं च ॥

यदि सूर्य, चन्द्र. गुरु, शुक्र, सप्तम में हों तो मलिन, शास्त्रोक्त विधान रहित कर्म करने वाला, विदेश में रहने वाला और बुद्धि रहित मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू० चं० वृ० श०)

सूर्येन्दुजीवार्कसुता कलत्रे नरं प्रसूते स्वसुतैर्विहीनम् ।
वह्वानृतं शास्त्रकथानुरक्तं कृशाङ्गयष्टि कलहप्रकृष्टम् ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, गुरु, शनि, सप्तम में हों तो अपने पुत्रों से हीन, बहुत झूठ बोलने वाला, शास्त्र की कथाओं में अनुरक्त, दुर्बल शरीर वाले, कलह में प्रमुख मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू० चं० शु० श०)

सूर्येन्दु शुक्रार्कसुताः कलत्रे नरं प्रकुर्वन्ति निशान्धमुग्रम् ।
बहुव्यथं हानियुतं गतस्वं श्रुताप्तसक्तं कुधियासमेतम् ।।

यदि सूर्य, चन्द्र, शुक्र, शनि, सप्तम में हों तो मनुष्य को रतोन्धा, उग्रस्वभाव, बहुत दुःखी, हानि से युक्त, निर्धन, श्रवणलब्ध में आसक्त तथा दुष्टबुद्धि से युक्त करते हैं ।

(सू० मं० बु० वृ०)

सूर्यारसौम्यामरपूजिताङ्गाः कलत्रसंस्था जनयन्ति मर्त्यम् ।
सदाश्रमं दुष्टतरं कृशाङ्गं कलत्रदोषार्दितमानसं च ।।

यदि सूर्य, भौम, बुध, गुरु, सप्तम में हों तो नित्य परिश्रम करने वाला, अत्यन्त दुष्ट, दुर्बल शरीर, स्त्री के दोष से पीड़ित चित्त वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(सू० मं० बु० श०)

सूर्यारसौम्यार्कसुताः कलत्रे नरं प्रकुर्वन्ति कुरूपदारम् ।
दुश्चेष्टितं शास्त्रगुरुप्रकोपं प्रजाविहीनं नियमैर्विहीनम् ।।

यदि सूर्य, भौम बुध, गुरु, सप्तम में हों तो मनुष्य को निन्दित रूपवती स्त्री वाला, बुरी चेष्टा वाला, शास्त्र और गुरुओं पर क्रोध करने वाला और नियमों से वंचित करते हैं ।

(सू० मं० गु० शु०)

सूर्यारजीवासुरपूजिताङ्गाः
कामाश्रिताः संजनयन्ति मर्त्यम् ।
सुनिर्घृणं कामकथानुरक्तं
मायापटुं पानरतं कुविद्यम् ।।

यदि सूर्य, भौम, गुरु, शुक्र, सप्तम में हों तो दयारहित, काम कथा में अनुरक्त, कपट में चतुर, पेयपदार्थों में संलग्न, दुष्ट विद्या वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू० मं० बृ० श०)

सूर्यारजीवार्कसुतः कलत्रे नरं प्रकुर्वन्ति प्रियाविहीनम्।
विद्वेषितारं जनताविरुद्धं पैशुन्यरक्तं बहुदोषभाजम्॥

यदि सूर्य, भौम, गुरु, शनि सप्तम में हों तो मनुष्य को स्त्री से रहित, वैर करने वाला, जनता से विरुद्ध, निन्दा करने में आसक्त और बहुत दोष वाले करते हैं।

(सू० मं० शु० श०)

सूर्यारिशुक्रार्कसुतः कलत्रे नरं प्रकुर्वन्ति विहीनकोशम्।
व्यपेतलज्जं परुषस्वभावं पापप्रसिद्धं निरतं स्ववर्गे।

यदि सूर्य, भौम शुक्र, शनि सप्तम में हों तो मनुष्य को कोष रहित तथा लज्जा रहित, कठोर स्वभाव वाला, पाप से प्रसिद्ध और अपने वर्ग में निरत करते हैं।

(सू० बृ० बु० श०)

सूर्येन्दुपुत्रामरपूज्यशुक्राः कामस्थिताः संजनयन्ति मर्त्यम्।
रुजाविहीनं कृतकस्वभावं प्रियामिषं शत्रुपराजितं च॥

यदि सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, सप्तम में हों तो रोग रहित कृतकस्वभाव, मांस को प्रिय मानने वाला और शत्रुओं से पराजित मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू० बु० बृ० श०)

सूर्येन्दुपुत्रामरपूज्यसौराः कलत्रसंस्था जनयन्ति मर्त्यम्।
व्यपेतबुद्धिं श्रुतशास्त्रहीनं दौर्भाग्ययुक्तं कलहप्रियं च॥

यदि सूर्य, बुध, गुरु, शनि सप्तम में हों तो बुद्धि रहित श्रवण और शास्त्र से हीन, दुर्भाग्य दोष से युक्त और कलहप्रिय मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू० वृ० शु० श०)

सूर्यामरेज्यास्फुजिदर्कपुत्राः कलत्रसंस्था जनयंति मर्त्यम्।
बहुप्रकोपं परुषस्वभावं सुतार्थहीनं परवंचकं च॥

यदि सूर्य, गुरु, शुक्र, सप्तम में हों तो बहुत क्रोध वाला, कठोर स्वभाव, पुत्र, धन से रहित, और दूसरों को ठगने वाला मनुष्य उत्पन्न करते हैं।

(चं० मं० बु० वृ०)

चन्द्रारसौम्यामरपूजिताङ्गाः कलत्रगाः संजनयति मर्त्यम्।
कल्याणचेष्टं सुभगं मनोज्ञं प्रसन्नचित्तं प्रभुतासमेतम्॥

यदि चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, सप्तम में हों तो मंगल चेष्टा करने वाला, ऐश्वर्यशाली, सुन्दर, प्रसन्न हृदय, प्रभता से युक्त मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(चं० मं० बु० शु०)

चन्द्रारसौम्यासुरपूजिताङगाः कलत्रसंस्थाः जनयन्ति मर्त्यम्।
सुरूपदारं नयनाभिरामं बहुप्रजं नीतिसमन्वितं च॥

यदि चन्द्र, भौम, बुध, शुक्र, सप्तम हों तो मनुष्य को रूपवती स्त्री वाला नेत्रों को आनन्द देने वाला, अधिक प्रजा वाला और नीति से युक्त करते हैं।

(चं० मं० बु० श०)

चन्द्रारसौम्यार्कसुताः कलत्रे नरं प्रकुर्वन्ति सुधीरचित्तं।
उदारचेष्टं सुधियासमेतम् सम्मतं देवगुरुद्विजानाम॥

यदि चन्द्र, भौम, बुध, शनि सप्तम में हों तो मनुष्य को धीर हृदय वाला, उदार चेष्टा वाला, सुन्दर बुद्धि से युक्त, देवता, गुरु और ब्राह्मणों का माननीय करते हैं।

(चं० मं० वृ० शु०)

चन्द्रारजीवासुरपूजिताङ्गाः कलत्रसंस्थाः जनयंति मर्त्यम्।
ईर्षाविहीनं नियमैः समेतं सुनिस्पृहं धर्मपरं विदग्धम्॥

यदि चन्द्र, भौम, गुरु, शुक्र, सप्तम में हों तो ईर्षा रहित, नियमों से युक्त, लालच रहित, धर्म में तत्पर और चतुर मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(चं० मं० वृ० श०)

चन्द्रारजीवार्कसुताः कलत्रे नरं प्रकुर्वन्ति मनोज्ञरूपम्।
स्त्रीवल्लभं चारुविशालनेत्रं प्रियवद पार्थिवसम्मतं च॥

यदि चन्द्र, भौम, गुरु, शनि, सप्तम में हों तो मनुष्य को सुन्दर, रूपवान्, स्त्री का प्रिय, सुन्दर, बड़े नेत्रवाला, प्रिय बोलने वाला, राजाओं का माननीय करते हैं।

(चं० मं० शु० श०)

चंद्रारशुक्रार्कसुताः कलत्रे नरं प्रकुर्वन्ति सतामभीष्टम्।
सत्यान्वितं ज्ञानरतं प्रगल्भं भयेन हीनं सुनयेन हीनम्॥

यदि चन्द्र, भौम, शुक्र, शनि, सप्तम में हों तो मनुष्य को सज्जनों का प्रिय, सत्यसे युक्त, ज्ञान में संलग्न, वाचाल, भय और नीति से रहित करते हैं।

(चं० बु० वृ० शु०)

चंद्रज्ञजीवासुरपूजिताङ्गाः कलत्रसंस्था जनयंति मर्त्यम्।
प्रियातिथिं धर्मपरं सुशीलं प्रकर्षसत्यं गुरुवत्सलं च॥

यदि चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, सप्तम में हों तो अतिथि को प्रिय मानने वाला, धर्म में तत्पर, सुशील, अधिक सत्यवादी, गुरु के प्रेम से युक्त मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(चं० बु० वृ० श०)

चन्द्रजीवार्कसुताः कलत्रे नरं प्रकुर्वंति सतामभीष्टम्।
सतान्वितं धर्मरुचिं प्रसन्नं सुरूपदारं सुधिया समेतम्॥

यदि चन्द्र, बुध, गुरु, शनि, सप्तम में हों तो मनुष्य को सज्जनों का प्रिय, पुत्रों से युक्त, धर्म में रुचि रखने वाला, प्रसन्न हृदय, रूपवती स्त्री वाला, सुन्दर बुद्धि से युक्त करते हैं।

(चं० बु० शु० श०)

चन्द्रज्ञशुक्रार्कसुताः कलत्रे नरं प्रकुर्वन्ति विनीतवेषम्।
विघातकर्माणमतिप्रगल्भं विधानदक्षं क्षतशत्रु पक्षम्॥

यदि चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि, सप्तम में हों तो मनुष्य को नम्रवेष, नाश के कर्म को करने वाला, अतीव तीक्ष्ण बुद्धि, विधान में चतुर और शत्रु पक्ष को आहत करने वाला करते हैं॥

(चं० वृ० शु० श०)

चन्द्रामरेज्यास्फुजिदर्कपुत्राः कामाश्रिताः संजनयंति मर्त्यम्।
प्रभूतलज्जं सुतदारभाजं जितेन्द्रियं पापविमुक्तदेहम्॥

यदि चन्द्र, गुरु, शुक्र, शनि, सप्तम में हों तो अधिक लज्जावान् पुत्र-स्त्री वाला, जितेन्द्रिय, पापरहित शरीर वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(मं० बु० वृ० शु०)

भौमज्ञजीवासुरपूजिताङ्गाः कलत्रसंस्था जनयंति मर्त्यम्।
सम्पन्नभाग्यं गुरुतासमेतं नरेन्द्रतुल्यं शुभदं सुसत्यम्॥

यदि भौम, बुध, शुक्र, शनि, सप्तम में हों तो भाग्य से सम्पन्न, गौरवता से युक्त, राजा के समान कल्याणदायक और सुन्दर सत्यवादी मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(मं० बु० वृ० श०)

भौमज्ञजीवार्कसुता कलत्रे नरं प्रकुर्वन्ति महाकलत्रम् ।
धर्मध्वजं सत्यसुखैः समेतं प्रियानुकम्पं परमर्दकं च ॥

यदि भौम, बुध, गुरु, शनि, सप्तम हों तो मनुष्य को श्रेष्ठ स्त्री वाला, धर्मात्मा सत्य और सुखों से युक्त दयावान् और शत्रुओं का मर्दन करने वाला करते हैं ।

(मं० बु० शु० श०)

भौमज्ञशुक्रार्कसुताः कलत्रे नरं प्रकुर्वन्ति विशिष्टरक्तम् ।
भव्याकृतिं धन्यतमं सुरूपं कुलप्रधानं विनयान्वितं च ॥

यदि भौम, बुध, शुक्र, शनि, सप्तम में हों तो मनुष्य को उत्तमों में आसक्त, सुन्दर आकृति, अत्यन्त धन्य, रूपवान्, कुल में श्रेष्ठ और नम्रता से युक्त करते हैं ।

(मं० वृ० शु० श०)

भौमामरेज्यास्फुजिदर्कपुत्राः कलत्रसंस्था जनयंति मर्त्यम् ।
बहुप्रतापं प्रचुरं बलाढ्यं शुभस्तुताङ्गं गतपानकं च ॥

यदि भौम, गुरु, शुक्र, शनि, सप्तम में हों तो अधिक प्रतापी, बहुत बल से युक्त, सुन्दर, प्रशंसनीय शरीर, मदिरादि पेय पदार्थों से रहित करते हैं।

(बु० वृ० शु० श०)

सौम्यामरेज्यास्फुजिदर्कपुत्राः कलत्रसंस्थाः जनयंति मर्त्यम् ।
विदग्धदारं रिपुभिर्विहीनं रिपुप्रधानं सुनयं सदैव ॥

यदि बुध, गुरु, शुक्र, शनि, सप्तम में हों तो चतुर स्त्री वाला, शत्रुओं से रहित तथा शत्रुओं में श्रेष्ठ और नित्य ही सुन्दर नीति वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(सू० चं० मं० बु० वृ०)

रवीन्दुभौमज्ञसुरेन्द्रपूज्याः कलत्रगाः संजनयंति मर्त्यम् ।
क्लीबं कुरूपं कुधिया समेतं दरिद्रताढ्यं कठिनस्वभावम् ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम,, बुध, गुरु, सप्तम में हो तो नपुंसक, बुरे रूप वाला, दुष्ट, बुद्धि मे युक्त तथा दरिद्रता से युक्त और कठोर स्वभाव वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू० चं० मं० बु० व०)

रवीन्दुभौमज्ञसिता मनुष्यं कलत्रसंस्था जनयंति मर्त्यम् ।
मंदस्वभावं कफपीडिताङ्गं मतिप्रहीनं विकृतं कुदारम् ।

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, शुक्र, सप्तम में हों तो मन्दस्वभाव, कफ़ से पीड़ित शरीर, बुद्धि रहित, कुरूप और निन्दितस्त्री वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू० चं० मं० बु० श०)

रवीन्दुभौमज्ञदिनेशपुत्राः कलत्रसंस्थाः जनयति मर्त्यम् ।
कुपुत्रकन्याजनकं कृशाङ्गं मूकाकृतिं धर्मविहीनकृत्यम् ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, शनि सप्तम में हों तो दुष्ट पुत्र और कन्या का पिता, दुर्बल शरीर, मूक के सदृष्य आकारवाला तथा धर्म रहित कर्म करने वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू० चं० मं० वृ० शु०)

रवीन्दुभौमामरपूज्यशुक्राः कलत्रसंस्था जनयंति मर्त्यम् ।
स्त्रीचञ्चलं कामकथाप्रसक्तं भीरुस्वभावं बहुदोषभाजम् ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, शुक्र सप्तम में हों तो स्त्रियों के समान चंचल, काम कथा में आसक्त, डरने वाला स्वभाव और बहुत दोष वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू० चं० मं० वृ० श०)

रवीन्दुभौमामरपूज्यसौराः कलत्रगाः संजनयंति मर्त्यम् ।
तेजोविहीनं निकृतप्रधानं प्रमदाभाजं जनताविरुद्धम् ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, गुरु, शनि सप्तम में हों तो तेज रहित, निकृत में श्रेष्ठ, प्रमाद वाला, जनता से विरुद्ध मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(सू० चं० मं० शु० श०)

रवीन्दुभौमासुरपूज्यसौराः कलत्रगाः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
ईर्षाधिकं कामनिपीड़िताङ्गं विरुद्धदारं मतिवर्जितं च ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, गुरु, शनि सप्तम में हों तो मनुष्य को अधिक ईर्षा वाला काम से पीड़ित शरीर, विरुद्ध स्त्री वाला तथा बुद्धिहीन मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(सू० चं० बु० वृ० श०)

रवीन्दुसौम्यामरपूज्यसौराः कलत्रगाः संजनयन्ति मर्त्यम् ।
यशोविहीनं परवंचनोक्तं प्रभूतशत्रुं परतर्ककं च ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शनि सप्तम में हों तो यश रहित, दूसरों को ठगने को कहने वाला, अधिक शत्रु वाला, और दूसरों से तर्क करने वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(सू० चं० बु० शु० श०)

रवीन्दुसौम्यामरपूज्ययोराः कलत्रगाः संजनयंति मर्त्यम् ।
दुष्टाशयं यानप्रवेशनार्थं (हं) हृद्रागिणं सर्वसमन्वितं च ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि, सप्तम में हों तो दुष्टाशय वाला, सवारी में प्रवेश करने योग्य, हृदय रोगों और सब से युक्त मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(सू० चं० मं० बु० वृ०)

रवीन्दुभौमज्ञसुरेन्द्रपूज्याः कलत्रगाः संजनयंति मर्त्यम् ।
क्लीबं कुरूपं कुधिया समेतं दरिद्रताढ्यं कठिनस्वभावम् ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम,, बुध, गुरु, सप्तम में हो तो नपुंसक, बुरे रूप वाला, दुष्ट, बुद्धि से युक्त तथा दरिद्रता से युक्त और कठोर स्वभाव वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(सू० चं० म० बु० व०)

रवीन्दुभौमज्ञसिता मनुष्यं कलत्रसंस्था जनयंति मर्त्यम् ।
मंदस्वभावं कफपीडिताङ्गं मतिप्रहीनं विकृतं कुदारम् ।

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, शुक्र, सप्तम में हों तो मन्दस्वभाव, कफ़ से पीड़ित शरीर, बुद्धि रहित, कुरूप और निन्दितस्त्री वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(सू० चं० मं० बु० श०)

रवीन्दुभौमज्ञदिनेशपुत्राः कलत्रसंस्थाः जनयति मर्त्यम् ।
कुपुत्रकन्याजनक कृशाङ्गं मूकाकृति धर्मविहीनकृत्यम् ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, शनि सप्तम में हों तो दुष्ट पुत्र और कन्या का पिता, दुर्बल शरीर, मूक के सदृष्य आकारवाला तथा धर्म रहित कर्म करने वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(सू० चं० मं० वृ० शु०)

रवीन्दुभौमामरपूज्यशुक्राः कलत्रसंस्था जनयंति मर्त्यम् ।
स्त्रीचञ्चलं कामकथाप्रसक्तं भीरुस्वभावं बहुदोषभाजम् ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, शुक्र सप्तम में हों तो स्त्रियों के समान चंचल, काम कथा में आसक्त, डरने वाला स्वभाव और बहुत दोष वाले मनुष्य को उत्पन्त करते हैं ।

(सू० चं० मं० वृ० श०)

रवीन्दुभौमामरपूज्यसौराः कलत्रगाः संजनयंति मर्त्यम् ।
तेजोविहीनं निकृतप्रधानं प्रमदाभाजं जनताविरुद्धम् ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, गुरु, शनि सप्तम में हों तो तेज रहित, निकृत में श्रेष्ठ, प्रमाद वाला, जनता से विरुद्ध मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू० चं० मं० शु० श०)

रवीन्दुभौमासुरपूज्यसौराः कलत्रगाः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
ईर्षाधिकं कामनिपीड़िताङ्गं विरुद्धदारं मतिवर्जितं च ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, गुरु, शनि सप्तम में हों तो मनुष्य को अधिक ईर्षा वाला काम से पीड़ित शरीर, विरुद्ध स्त्री वाला तथा बुद्धिहीन मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू० चं० बु० वृ० श०)

रवीन्दुसौम्यामरपूज्यसौराः कलत्रगाः संजनयन्ति मर्त्यम् ।
यशोविहीनं परवंचनोक्तं प्रभूतशत्रुं परतर्ककं च ।

यदि सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शनि सप्तम में हों तो यश रहित, दूसरों को ठगने को कहने वाला, अधिक शत्रु वाला, और दूसरों से तर्क करने वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू० चं० बु० शु० श०)

रवीन्दुसौम्यामरपूज्ययोराः कलत्रगाः संजनयंति मर्त्यम् ।
दुष्टाशयं यानप्रवेशनार्थं (हं) हृद्रागिणं सर्वसमन्वितं च ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि, सप्तम में हों तो दुष्टाशय वाला, सवारी में प्रवेश करने योग्य, हृदय रोगों और सब से युक्त मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू० चं० वृ० शु० श०)

रवीन्दुजीवासुरपूज्यसौराः कामाश्रिताः संजनयंतिमर्त्यम ।
दयाविहीनं परपाकपुष्टं सिद्धं विहीनं कुकलत्रकं च ।।

यदि सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र, शनि, सप्तम में हों तो दया से रहित, दूसरों के पाक से पुष्ट सिद्ध और हीन स्वभाव तथा दुष्ट स्त्री वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू० मं० बु० वृ० शु०)

सूर्यारसौम्यामरपूज्यशुक्राः कामाश्रिताः संजनयन्ति मर्त्यम् ।
प्रभावहीनं विधनं विपुत्रं कृतघ्नचेष्टं परुषस्वभावम् ।।

यदि सूर्य, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, सप्तम में हों तो शोभा रहित, निर्धन, पुत्रों से रहित, कृतघ्न चेष्टा वाला और परुष स्वभाव वाले मनुष्य को उत्पन्न करते है।

(सू० मं० बु० शु० श०)

सूर्यारसौम्यासुरपूज्यसौराः कलत्रगाः संजनयन्ति मर्त्यम् ।
निर्लज्जमश्रोत्रियामष्टपापं निसर्गदुष्टाश्रयमातुरं च ।।

यदि सूर्य, भौम, बुध, शुक्र, शनि, सप्तम में हों तो लज्जा रहित वैदिक विधि को न मानने वाला, पाप प्रिय स्वाभाविक दुष्टाश्रय वाला और रोगी मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू० मं० बु० वृ० श०)

सूर्यारसौम्यामरपूज्यसौराः कामाश्रिताः संजनयन्ति मर्त्यम् ।
मूर्खप्रधानं प्रियबाल्यकृत्यं कारुण्यरक्तं कुमतिं सदैव ।।

यदि सूर्य, भौम, बुध, गुरु, शनि, सप्तम में हों तो मूर्खों में मुख्य, बाल्य कृत्यों को प्रिय मानने वाला, दयावान् और नित्य ही दुष्ट बुद्धि वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू० मं० बृ० शु० श०)

सूर्यारजीवासुरपूज्यसौराः कलत्रगाः जनयन्ति मर्त्यम् ।
निःश्रीककर्तृव्यसनैरुपेतं सुकातुरं बान्धवनिन्दितं च ॥

यदि सूर्य, भौम, गुरु, शुक्र, शनि सप्तम में हों तो निर्धन करने वाले, व्यसनों से युक्त, कातर (डरने वाला) बान्धवों से निन्दित मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(सू० बु० बृ० शु० श०)

सूर्यज्ञजीवासुरपूज्यसौराः कलत्रसंस्थाः जनयन्ति मर्त्यम् ।
सुदुष्टदारं विनयेन हीनं सदाक्षुधार्त्तं मतिवर्जितं च ॥

यदि सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, सप्तम में हों तो दुष्ट स्त्री वाला, विनय से रहित, नित्य क्षुधा से व्याकुल और बुद्धि रहित मनुष्य को पैदा करते हैं ।

(चं० मं० बु० व० शु०)

चन्द्रारसौम्यामरपूज्यशुक्राः कलत्रगाः जनयन्ति मर्त्यम् ।
दयासमेतं सुनयं सुसत्यं सतामभीष्टं सुकलत्रभाजम् ॥

यदि चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र सप्तम में हों तो दया से युक्त, सुन्दर, नीतिवान् , सत्यवादी, सज्जनों का प्रिय और सुन्दर स्त्री वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(चं० मं० बु० बृ० श०)

चन्द्रारसौम्यामरपूज्यसौराः कलत्रगाः जनयन्ति मर्त्यम् ।
सुधर्मरक्तं प्रमदास्वभीष्टं विदग्धवाक्यं प्रभुतासमेतम् ॥

यदि चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शनि सप्तम में हों तो सुन्दर, धर्म में आसक्त, स्त्रियों में प्रिय, चतुर वचन बोलने वाला, प्रभुतायुक्त मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(चं० मं० बु० शु० श०)

चन्द्रारसौम्यासुरपूज्यसौराः कलत्रसंस्थाः जनयन्ति मर्त्यम्
क्षमान्वितं शीलधनं प्रशस्तं मतिप्रगल्भं प्रियबान्धवं च ॥

यदि चन्द्र, भौम, बुध, शुक्र, शनि, सप्तम में हों तो क्षमा से युक्त, शीलवान्, सुन्दर बुद्धि से चतुर, बान्धवों के प्रिय, सुन्दर मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(चं० मं० वृ० शु० श०)

चन्द्रारजीवासुरपूज्यसौराः कलत्रगाः संजनयन्ति मर्त्यम्।
तीर्थप्रसक्तं निरुजं विहीनं दीर्घायुषं शास्त्रपरं सदैव ॥

यदि चन्द्र, भौम, गुरु, शुक्र, शनि, सप्तम में हों तो तीर्थ में आसक्त, रोग रहित, हीन शरीर, दीर्घायु वाला, नित्य ही शास्त्रों में तत्पर रहने वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(चं० बु० वृ० शु० चं०)

चन्द्रज्ञजीवासुरपूज्यसौराः कामाश्रिताः संजनयन्ति मर्त्यम्।
तीर्थप्रसक्तं च नरेन्द्रपूज्यं प्रमादहीनं विविधोपचारैः ।

यदि चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, सप्तम में हों तो तीर्थ में आसक्त, राजाओं में सत्कार पाने वाला, अनेक उपचारों से प्रमाद रहित मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(मं० बु० वृ० शु० श०)

भौमज्ञजीवासुरपूज्यसौराः कलत्रगाः संजनयन्ति मर्त्यम्।
विद्वेषहीनं प्रियधर्मकृत्यं सुसंस्तुतं साधुजनेन नित्यम् ॥

यदि भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि सप्तम में हों तो वैर रहित, धर्म कृत्य को प्रिय मानने वाला, सदा सज्जनों से प्रशंसित मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू० चं० मं० बु० वृ० शु०)

रवीन्दुभौमज्ञसुरेज्यशुक्राःकलत्रगाः संजनयन्ति मर्त्यम् ।
विहीनसत्यं विधनं रुजार्तं नरेन्द्रपीडार्दित मानसं च ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र. सप्तम हों तो सत्यरहित, निर्धन, रोग से दुखित, राजपीड़ा से पीड़ित हृदय वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू० चं० मं० बु० वृ० श०)

रवीन्दुभौमज्ञसुरेज्यसौराः कलत्रगाः संजनयन्ति मर्त्यम ।
प्रेष्यं प्रभूतानिरुजैः कुचैलं कुचैलमात्रं परवंचकं च ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शनि सप्तम में हों तो दास, अधिक नीरोगता से बुरे वस्त्र वाला, केवल कुत्सित वस्त्र वाला और दूसरों को ठगने वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू० चं० मं० बु० शु० श०)

रवीन्दुभौमज्ञसितार्कपुत्राः कलत्रसंस्थाः जनयन्ति मर्त्यम् ।
रोगाभिभूतं जडतासमेतं सुदुष्टदारार्त्ततनुं सदैव ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, शुक्र, शनि, सप्तम में हों तो रोग से व्याकुल, शिथिलता से युक्त और नित्य ही दुष्ट स्त्री से पीड़ित शरीर वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू० चं० मं० वृ० शु० श०)

रवीन्दुभौमामरपूज्यशुक्रशनैश्चराः संजनयन्ति मर्त्यम् ।
क्लेशाभिभूतं विनयप्रमुक्तं क्षुधार्तदेहं भयसत्फलं च ॥

यदि सर्य, चन्द्र, भौम, गुरु, शुक्र, शनि, सप्तम में हों तो दुःख से

व्याकुल, नम्रता रहित, क्षुधा से पीड़ित शरीर वाला, भय से युक्त, सत्फल वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू० चं० बु० वृ० शु० श०)

रवीन्दुसौम्यामरपूज्यशुक्रशनैश्चराः संजनयन्ति मर्त्यम् ।
निरर्थमस्निग्धमसौख्यभाजं सुरौद्रकार्यं कृपणस्वभावम् ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, सप्तम में हों तो निर्धन, स्निग्धता और सौख्य रहित, भयानक कार्य करने वाला तथा कृपण स्वभाव वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू० मं० बु० वृ० शु० श०)

सूर्यारसौम्यामरपूज्यशुक्रशनैश्चराः संजनयन्ति मर्त्यम् ।
कलत्रसंस्थाः नृपतिं मनोज्ञं प्रभूतकोषं सततं प्रहृष्टम् ॥

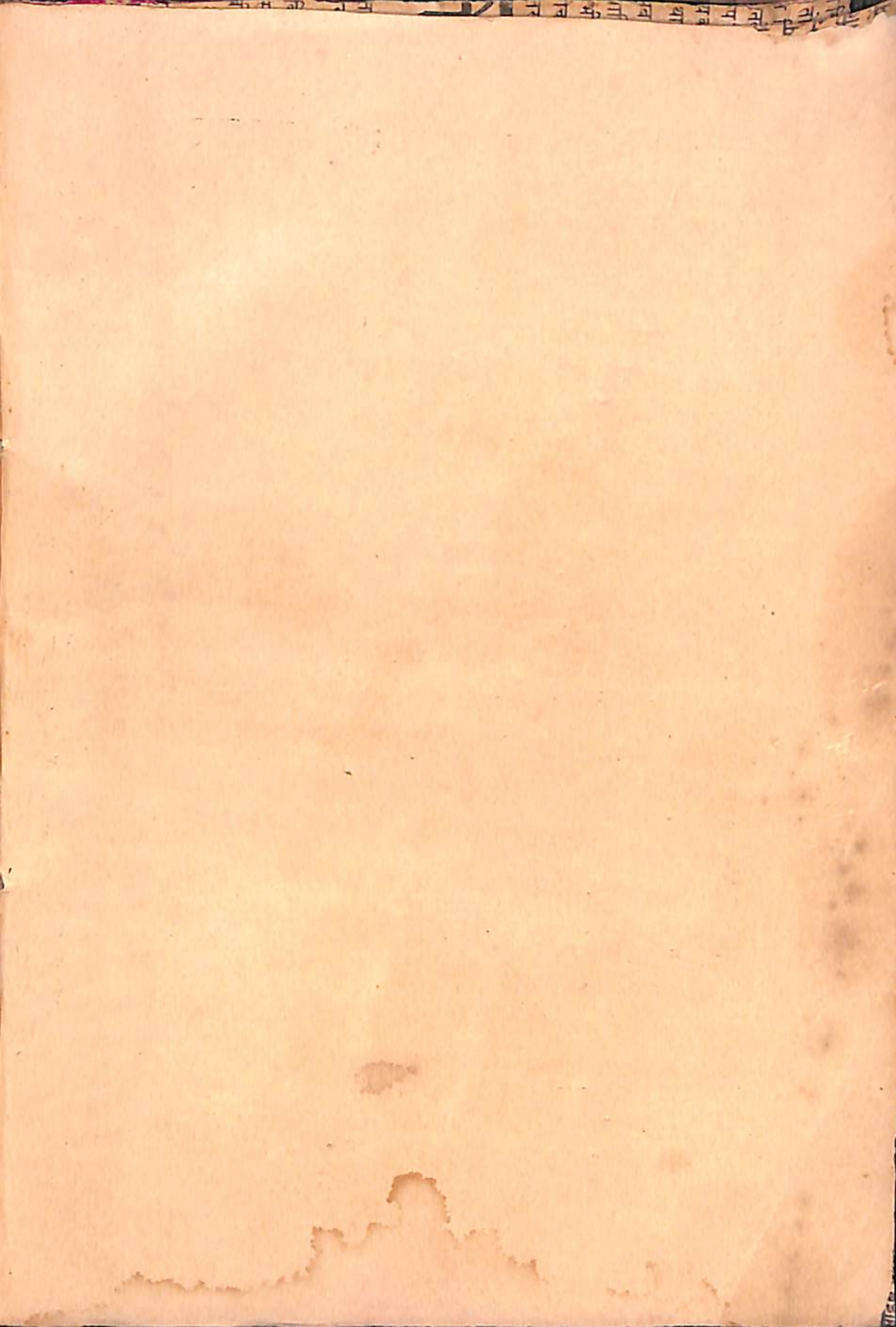
यदि सूर्य, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, सप्तम में हों तो राजा, सुन्दर, अधिक कोष वाला, नित्य अति प्रसन्न रहने वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू० चं० मं० बु० वृ० शु० श०)

रवीन्दुभौमज्ञसुरेज्यशुक्रशनैश्चराः संजनयन्ति मर्त्यम् ।
पृथ्वीपतिं भूरियशः प्रतापं सुधर्मरक्तं दृढमेवमिष्टम् ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, सप्तम में हों तो पृथ्वी का स्वामी, अधिक यशस्वी और प्रतापी, सुन्दर, धर्म में आसक्त तथा दृढ अभिलषित वेष वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

॥ इति ॥



हमारे कार्यालय की पुस्तकें

ज्योतिष रत्नाकर
ज्योतिष की प्रथम पुस्तक
स्त्री भाव प्रकाश
सुत भाव प्रकाश
सहज भाव प्रकाश
शिव मन्त्रावली
वर्षफल चन्द्रिका
जन्मदिन पूजा पद्धति-विधि सहित
कात्यायनी शांति भा. टी.
कार्तिक प्रसूता शांति
फार्म टेवा
तनु भाव प्रकाश भा. टी.
धन भाव प्रकाश भा. टी.
दशम भाव प्रकाश भा. टी.
दुर्गासप्त सती हवन विधि सहित भा. टी.
महा मृत्युञ्जय जप विधि
गोदान पद्धति
विवाह पद्धति
चन्दन षष्ठी
करका चतुर्थी
लग्न सारणी समुच्चय
भुवन दीपक भा. टी.
ग्रह विज्ञान
सं० १९७१ से ८० तक पंचांग
सं० १९८१ से ९० तक
सं० १९९१ से २००४ तक
फार्म साहा चिट्ठी

मिलने का पता—

पं. शिवरामदत्त ज्यो. एण्ड सन्
पंचांग दिवाकर कार्यालय
जालन्धर शहर

यों के पकड़े जाने से इस उग्रवाद ... धक्का पहुंचा है । ये प्रमुख उग्रवादी हैं स्वयंभू ... न कमांडर सफ़तुल्लाह शाह, वित्तीय ... र गुलाम हसन शाह तथा सैक्शन कमांडर ... शफ़ी ।

...ोंने बताया कि अन्य तीन उग्रवादियों को अनन्तनाग तथा बड़गाम जिलों से तलाशी ... के दौरान पकड़ा गया । इन पकड़े गए ...यों के पास से दो राइफलें तथा बड़ी तादाद में ...बरामद हुए ।

...टी सी बात ... रंगा

...को देश से न केवल माफी मांगनी बल्कि घुटनों के बल बैठकर माफी चाहिए ।

—लालू प्रसाद यादव

...दिए जाते हैं ... गैर सरकारी स्कूलों के अध्यापकों की संख्या काफी कम होती है । उन्होंने कहा कि यह अध्यापक समुदाय के हित में ही होगा यदि मान्यता प्राप्त गैर सरकारी स्कूलों के अध्यापकों के लिए राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय पुरस्कारों का कुछ भाग सुरक्षित रखा जाए ।

सुअर पालन : पशु पालन राज्यमंत्री श्री हरबंस सिंह सिद्धू के अनुसार राज्य में 10.50 लाख रुपए की लागत से सुअर पालन को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वाकांक्षी योजना बनाई गई है ।

रैली : पंजाब के निगमों व बोर्डों में काम करने वाले कर्मचारियों ने आज यहां सैक्टर 17 में अपनी मांगों के समर्थन में रैली की ।

प. बंगाल में पंचायत चुनावों सम्बन्धी हिंसा में 30 मरे

कलकत्ता, 2 जून (प.स.): पश्चिम बंगाल में पंचायत चुनावों को लेकर हुई हिंसा में मृतकों की संख्या 30 तक पहुंच गई है/आज बर्दवान तथा 24-परगना जिलों से चार और मौतों का समाचार मिला है ।

सरकारी सूत्रों के अनुसार बर्दवान जिले में एक कांग्रेस (इ) प्रत्याशी तथा उसके एक समर्थक की कल रात हत्या कर दी गई । 24-परगना जिले में ...

... इस बात का पूरा भरोसा है कि रूसी जैसे ही पैसा बनाना शुरू कर देंगे, अपने कर्ज़ के भुगतान से पीछे नहीं हटेंगे।

...पुलिस व प्रशासन ... है। ... बिगड़ ... तथा कानून ... सकती है।

उल्लेखनीय है कि अभी तक अयोध्... बल विहिप समर्थक संतों के विरोध पर ... लिए मंगाए गए थे, अब मनचलों की भी ... पाने के लिए अलग से प्रबन्ध करने होंगे...

कश्मीर घाटी में 'एकीकृत कमान'

जम्मू, 2 जून (वार्ता): घाटी में उग्रवाद से लड़ रहे सुरक्षा बलों में बेहतर तालमेल बिठाने के लिए हाल ही में गठित किए 'एकीकृत कमान' के बहुत अच्छे परिणाम सामने आए है तथा उग्रवादियों पर भारी दबाव पड़ा है। यह जानकारी आज यहां जम्मू-कश्मीर पुलिस के अतिरिक्त महानिदेशक (कानून-व्यवस्था) श्री अजहर नोमानी ने दी।

उन्होंने कहा कि एकीकृत कमान, जिसमें सीमा सुरक्षा बल (बी.एस.एफ.), केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी.आर.पी.एफ.), जम्मू-कश्मीर सशस्त्र पुलिस तथा सेना शामिल है, के गठन के बाद से घाटी में सुरक्षा कार्रवाइयों में गुणात्मक परिवर्तन हुआ है। हाल ही में राज्यपाल के सलाहकार नियुक्त किए गए लैफ्टिनैंट जनरल (सेवानिवृत्त) ए.के. ज़की एकीकृत कमान के प्रभारी हैं।

श्री नोमानी, जो 1989-90 के दौरान श्रीनगर में ...

... के उग्रवादी मार गिराए अथवा पकड़े गए ... कहा कि पंजाब पुलिस के महानिदेशक श्री ... गिल को सुरक्षा बलों के समन्वित प्रयास ... सफलता से एकीकृत कमान गठित करने ... को प्रेरणा मिली।

इससे पूर्व विभिन्न सुरक्षा एजैंसियों में ... कमी के कारण सुरक्षा कार्रवाइयों में ... होती थी। बलों को युक्तिसंगत बनाने से ज... आम लोगों से ज्यादती किए जाने के आ... कमी आई है।

श्री नोमानी ने कहा कि एकीकृत कमा... निर्णय भी तुरंत ले लिए जाते हैं, जबकि प... पर निर्भर रहने के कारण निर्णय लेने में दे... थी। उन्होंने कहा कि 1989-90 की स्थिति ... आई.जी. पुलिस थे और अब की स्थिति में ... उन्होंने कहा, "इस ...

